लखनऊ, शुक्रवार, 28 अप्रैल 2023 | Email: starexpressnews@gmail.com | वर्ष : 16 अंक : 64 | पृष्ठ : 8 मूल्य : 1 रूपया

हिन्दी दैनिक/डिजिटल

स्टार एक्सप्रेस

सोच..... बदलते भारत की

www.starexpress.news

संक्षिप्त समाचार

कर्नाटक कांग्रेस प्रमुख शिवकुमार की मौजूदगी में जेडीएस के 2 नेता पार्टी में शामिल हुए

(एजेंसी) बेंगलुरू। कर्नाटक कांग्रेस अध्यक्ष डी.के. शिवकुमार जद(एस) के एक वरिष्ठ नेता नारायण गौड़ा को पार्टी में शामिल करने में कामयाब रहे हैं। शिवकुमार अपनी कनकपुरा सीट पर भाजपा से कड़ी टक्कर का सामना कर रहे हैं। गौड़ा ने 2018 के चुनाव में शिवकुमार के खिलाफचुनाव लड़ा था और उन्हें 47,643 वोट मिले थे। भाजपा ने इस सीट से राजस्व मंत्री आर. अशोक को चुनावी मैदान में उतारा है। वहीं जद(एस) ने इस बार बीआर रामचंद्र को मैदान में उतारा है। चुनावों में भारी अंतर से जीत हासिल करना चाहते हैं। हालांकि, शिवकुमार के लिए लड़ाई कठिन है।

मुंबई-पुणे एक्सप्रेस-वे पर भीषण हादसा, कई लोग घायल

(एजेंसी) मुंबई। मुंबई-पुणे एक्सप्रेसवे पर एक के बाद एक 11 गाडियां आपस में टकरा गईं। कारों की टक्कर इतनी जोरदार थी कि कार के ऊपर दूसरी कार चढ गई। इस घटना में कई लोग घायल हो गए, जिन्हें इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। इस घटना में किसी की मौत की कोई जानकारी नहीं है। घटना का वीडियो सामने आया है जिसमें दिख रहा है कि कई कारों के परखच्चे तक उड गए। कारों से ट्रक भी टकराया है, कई गाडियों का आगे का हिस्सा पूरी तरह खत्म हो गया है। इस घटना में कई लोग घायल हुए हैं, जिन्हें इलाज के लिए नजदीकी अस्पतालों में भर्ती कराया गया। दुर्घटनाग्रस्त वाहनों को भी मुख्य मार्ग से हटाने का काम किया जा रहा है।

जब तक लडने की ताकत है हार नहीं मानेंगे, यौन उत्पीडन के आरोपों के बीच बोले बृजभूषण शरण सिंह

(एजेंसी) नई दिल्ली। देश के चोटी के पहलवानों के यौन उत्पीडन के आरोपों का सामना कर रहे भारतीय कुश्ती महासंघ के प्रमुख बृजभूषण शरण सिंह ने गुरुवार को संकेत दिए कि वह खुद को बेगुनाह साबित करने के लिए अपनी तरफ से कोई कसर नहीं छोडेगे। भाजपा के सांसद सिंह ने वीडियो संदेश में अपने ऊपर लगे आरोपों का जिक्र किए बिना संकेत दिया कि जब तक उनके पास लडने की ताकत है तब तक वह हार नहीं मानेंगे। उन्होंने कहा,'' मित्रों, जिस दिन मैं अपने जीवन की समीक्षा करूंगा कि क्या खोया क्या पाया, जिस दिन मैं महसूस करूंगा कि मेरे संघर्ष करने की क्षमता अब समाप्त हो गई है।

केजरीवाल ने घर की सजावट पर खर्च किए 45 करोड़

(एजेंसी) नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी की दिल्ली इकाई ने मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल पर अपने सरकारी आवास के 'सौंदर्यीकरण पर करोडों रुपये खर्च करने का आरोप लगाते हुए वीरवार को उनके निवास के समीप प्रदर्शन किया। भाजपा ने केजरीवाल पर 2020-2022 के दौरान यहां सिविल लाइंस क्षेत्र में सरकारी आवास '6 फ्लैगस्टाफ रोड की मरम्मत पर करीब 45 करोड रुपये खर्च करने का आरोप लगाया है। सत्तारूढ आम आदमी पार्टी ने यह कहते हुए पलटवार किया है कि भाजपा असल मुद्दों से ध्यान बांटने की कोशिश कर रही है। एक हवेली की प्रतिकृति लिये प्रदर्शनकारियों ने रिंग रोड पर चंडीग्राम अखाडा से दिल्ली के मुख्यमंत्री के आवास तक मार्च निकाला। केजरीवाल 2015 में मुख्यमंत्री बनने के बाद सिविल लाइंस वाले इस आवास में रह रहे हैं।

32 हजार करोड़ से ब्रज में लौटेगी द्वापर सी भव्यता : योगी

❑ सीएम योगी बोले, जवाहरबाग कभी गुंडागर्दी का अड्डा हुआ करता था आज बदल गयी तस्वीर

सीएम बोले भाजपा शासन में किसी के साथ भेदभाव नहीं हुआ

(संवाददाता)

मथुरा। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि 2017 में मथुरा वृंदावन नगर निगम का गठन और फिर ब्रज तीर्थ विकास परिषद के गठन ने मथुरा में समग्र विकास की कार्ययोजना को आगे बढ़ाने का कार्य किया है। आज यहां 32 हजार करोड़ रुपए की परियोजनाएं चल रही हैं, जिस दिन ये योजनाएं धरातल पर उतर जाएंगी, उस दिन यहां द्वापर युग की भव्यता और दिव्यता दिखाई देगी। मुख्यमंत्री गुरुवार को मथुरा में नगर निगम सेठ बीएन पोद्दार इंटर कॉलेज मैदान में नगर निगम चुनाव के लिए आयोजित जनसभा को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान उन्होंने कहा कि ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट के बाद यूपी में 35 लाख करोड़ के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं। अकेले ब्रज क्षेत्र में ही 50 हजार युवाओं को रोजगार मिलने जा रहा है। कहा कि 32 हजार करोड़ से ब्रज में द्वापर सी भव्यता लौट आयेगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि ये मेरा सौभाग्य है कि हमारी सरकार ने 2017 में मथुरा वृंदावन नगर निगम का गठन किया। ब्रज तीर्थ विकास परिषद का गठन करके यहां के समग्र विकास की कार्य योजना को आगे बढ़ाने का काम किया गया है। आज भारत बदल चुका है, तो हम भी बदलाव की इस प्रक्रिया में मौन नहीं रह सकते। इन्फ्रास्ट्रक्चर के बड़े बड़े प्रोजेक्ट, एयरपोर्ट, आईआईटी, एम्स जैसे निर्माण आज निश्चित समय में पूरे होते हैं। विरासत का सम्मान होता है। काशी, अयोध्या, केदारनाथ, महाकाल का पुनरोद्धार होता है। ये नया भारत है। इस नये भारत के सामर्थ्य के साथ हमें यूपी के सामर्थ्य को जोड़ना है। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमने बिना भेदभाव के विकास कार्यों को आगे बढ़ाया है। 38 हजार से अधिक परिवारों को आवास की सुविधा दी गई। यहां के 20 हजार से अधिक स्ट्रीट वेंडर को स्वनिधि योजना का लाभ मिला है। पहले गरीबों को उजाड़ा जाता था, व्यापारियों से रंगदारी वसूली जाती थी। आज गरीब को मकान और स्वनिधि का लाभ दिया जा रहा है। निराश्रित महिला, दिव्यांगजन, वृद्धजनों को पेंशन की सुविधा का लाभ दिया जा रहा है। 2017 से पहले पार्टी विशेष के लोग तमंचा लेके घूमते थे। आज युवाओं के हाथों में टैबलेट हैं। पहले शोहदों का आतंक होता था, आज सेफ सिटी है। मुख्यमंत्री ने कहा कि जवाहरबाग कभी गुंडागर्दी का अड्डा बना हुआ था। आज स्थिति आप सबके सामने है। पहले कोसी कला में दंगा होता था। आज यहां पेप्सिको का प्लांट लग चुका है। जिस मथुरा-वृंदावन में कभी मांस-मदिरा की बिक्री होती थी, हमने उसपर पूरी तरह से रोक लगा दी। यहां की पवित्रता के साथ खिलवाड़ करने की अनुमति किसी को भी नहीं दी जा सकती। आज तीर्थ स्थल घोषित होते ही यहां बड़े स्तर पर कार्ययोजना के साथ काम हो रहा है। 84 कोसी परिक्रमा केवल अयोध्या में ही नहीं ब्रज में भी होने जा रही है। इस समय ब्रज क्षेत्र के विकास के लिए 32 हजार करोड़ रुपए की परियोजनाएं चल रही हैं।

अतीक के दोनों बेटों की बढ़ी मुश्किलें, 16 साल पूराने मामले में बिल्डर मो. मुस्लिम ने दर्ज कराई एफआईआर

(संवाददाता)

लखनऊ । उत्तर प्रदेश में माफिया अतीक अहमद के दोनों बेटे अली और उमर की मुश्किलें बढ़ गई है। अतीक के करीबी बिल्डर मोहम्मद मुस्लिम ने उनके खिलाफ एफ्आईआर दर्ज कराई है।

यह एफ्आईआर उसने प्रयागराज के खुल्दाबाद थाने में रंगदारी वसूलने के लिए बंधक बनाने जान से मारने की धमकी देने के आरोप में दर्ज कराई है। दरअसल, पहले भी अतीक के दोनों बेटों अली और उमर के साथ आधा दर्जन लोगों पर एफ्आईआर दर्ज है। बता दें कि, उमर अतीक अहमद का सबसे बड़ा बेटा है। बिल्डर से रंगदारी मांगने के आरोप में अभी वह जेल में बंद है। उमर का नाम अब उमेश पाल मर्डर केस में सामने आ रहा है। बताया जा रहा है कि असद ने उससे जेल में मिलकर उमेश पाल की हत्या की साजिश की पूरी जानकारी दी थी। उमर और अली पर पहले भी आधा दर्जन मामले दर्ज है। अब अतीक के करीबी बिल्डर मोहम्मद मुस्लिम ने उसके दोनों बेटों पर एफ्आईआर दर्ज कराई है। उसने आरोप लगाया गया है कि, 2007 में धूमनगंज के देवघाट स्थित पैतृक जमीन न देने पर आरोपियों ने अगवा कर अतीक के चकिया स्थित कार्यालय पर ले जाकर मारा-पीटा और जान से मारने की धमकी दी। मोहम्मद मुस्लिम ने उमर और अली के खिलाफप्रयागराज के खुल्दाबाद थाने में एफ्आईआर दर्ज कराई। उसने अपनी तहरीर में बताया कि, ध्देवघाट में उसकी पैतृक जमीन है। वर्तमान कीमत 15 करोड़ रुपए है। अतीक की मंशा थी कि मैं यह जमीन उनके नाम कर दूं। डर के मारे मैं 2007 में लखनऊ जाकर रहने लगा। किसी काम से जब प्रयागराज अपने घर जा रहा था तभी अतीक के लड़के अली, उमर, असाद कालिया, अजय, एहतेशाम और नुसरत ने मुझे गाड़ी से खींच लिया।

भाजपा के छलावे से बाहर निकलकर बसपा प्रत्याशियों को जिताए जनता : मायावती

(संवाददाता)

लखनऊ । बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की मुखिया मायावती ने उत्तर प्रदेश की जनता से राज्य की भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सरकार के लुभावने वादों और दावों के छलावे से बाहर निकलने की अपील करते हुए सूबे के आसन्न नगरीय निकाय चुनाव में बसपा प्रत्याशियों को जिताने की गुजारिश की है। मायावती ने बृहस्पतिवार को सिलसिलेवार ट्वीट कर मौजूदा भाजपा सरकार पर नगरीय निकायों में जबरदस्त भ्रष्टाचार करने का आरोप लगाया। उन्होंने एक ट्वीट में कहा, उप्र में महापौर व सभासद, नगर पालिका व नगर पंचायत अध्यक्ष आदि पदों के लिए हो रहे चुनाव में इन संस्थानों में जबरदस्त भ्रष्टाचार, सड़क, सफाई, नाली सहित विकास का घोर अभाव, आवास कर में मनमानी वृद्धि व उन पर भारी ब्याज आदि जंजालों से मुक्ति के लिए बसपा जैसा सर्वजन हिताय परिवर्तन जरूरी है। मायावती ने एक अन्य ट्वीट में कहा, वैसे भाजपा हो या सपा, सत्ताधारी पार्टियाँ सरकारी मशीनरी के दुरुपयोग के अलावा साम, दाम, दण्ड, भेद आदि अनेक हथकण्डे चुनावों में अपनाती हैं, मगर प्रबुद्ध और मेहनतकश शहरी जनता द्वारा अपने असली हित, सुख-सुविधा, सफाई व भ्रष्टाचार पर अंकुश के लिए वोट का प्रभावी इस्तेमाल जरूरी है। उन्होंने एक अन्य ट्वीट में कहा, स्वाभाविक है कि उप्र के लोग अगर अपनी दिन-प्रतिदिन की मुसीबतों, जंजालों, जुल्म-ज्यादती व लगातार दुष्कर होते जीवन व असुरक्षा आदि से मुक्ति चाहते हैं तो उन्हें भाजपा सरकार के लुभावने वादे एवं कागजी दावों आदि के छलावे से बाहर निकलना होगा, बसपा की यह अपील है। गौरतलब है कि उत्तर प्रदेश के नगरीय निकाय चुनाव दो चरणों में होंगे। चार मई को प्रदेश के नौ मंडलों में मतदान होगा जबकि दूसरे चरण के तहत आगामी 11 मई को बाकी नौ मंडलों में वोट डाले जाएंगे। मतों की गिनती 13 मई को की जाएगी।

कर्नाटक कार्यकर्ताओं से बोले पीएम मोदी
विरोधियों का एजेंडा सिर्फ सत्ता हथियाना है

(एजेंसी)

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कर्नाटक भाजपा के कार्यकर्ताओं को वर्चुअल माध्यम से संबोधित करते हुए विधान सभा चुनाव में जीत हासिल करने का मंत्र दिया। प्रधानमंत्री मोदी ने गुरुवार को पार्टी के लगभग 50 लाख कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कर्नाटक में विधान सभा चुनाव में जीत हासिल करने के लिए बूथ जीतने पर फोकस करने की सलाह दी। प्रधानमंत्री ने कहा कि, बूथ जीतने की शुरूआत तब होती है जब कार्यकर्ता बूथ से जुड़े परिवारों को जीत लेता है, उनके दिल को जीत लेता है। उन्होंने कहा कि यदि आप बूथ स्तर पर जीतना चाहते हैं तो 10 महिलाओं और 10 पुरुषों का एक मजबूत समूह बनाएं। गरीबों, महिलाओं, युवाओं और दलितों के कल्याण सहित सरकार की योजनाओं की जानकारी रखें और पूरी तरह से स्वयं को अपडेट रखते हुए इन जानकारियों को जनता तक पहुंचाएं। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि वह दो दिन बाद कर्नाटक की जनता का दर्शन करने और आशीर्वाद लेने आ रहे हैं। राज्य में प्रचार करने वाले नेताओं ने उन्हें बताया है कि उन्हें वहां के लोगों का भरपूर स्नेह मिला है। यह भाजपा के प्रति लोगों के विश्वास को दिखाता है। विरोधी दलों पर सीधा निशाना साधते हुए मोदी ने कहा कि विरोधियों का एजेंडा सिर्फ सत्ता हथियाना है जबकि भाजपा का एजेंडा विकास है। उन्होंने कहा कि, भाजपा और दूसरी पार्टियों में सबसे बड़ा फर्क अप्रोच का है। भाजपा आने वाले 25 वर्षों में विकसित भारत के रोड मैप पर काम कर रहा है। हमारे विरोधियों का एजेंडा है सत्ता हथियाना और हमारा एजेंडा है 25 वर्षों में देश को विकसित बनाना, गरीबी से मुक्त बनाना और युवाओं के सामर्थ्य को सबसे आगे बढ़ाना। आने वाले 25 वर्षों में कर्नाटक की विकास यात्रा को नेतृत्व देने के लिए भाजपा एक युवा टीम का निर्माण कर रही है। प्रधानमंत्री ने विरोधी दलों पर निशाना जारी रखते हुए आगे कहा कि, हमारे देश में कुछ राजनीतिक दलों ने राजनीति को सिर्फसत्ता और भ्रष्टाचार का साधन बना दिया। इसको हासिल करने के लिए वो साम, दाम, दंड, भेद हर तरह का तरीका अपना रहे हैं। इन राजनीतिक दलों को देश के भविष्य की, आने वाले पीढ़ियों की, कनार्टक के भविष्य की कोई चिंता नहीं है। मुफ्त की रेवड़ी की राजनीति की वजह से कई राज्य अपनी दलगत भलाई के लिए बेतहाशा खर्च कर रहे हैं। राज्य डूबते चले जा रहे हैं और आने वाली पीढ़ियों का भी ये खा जा रहे हैं। देश ऐसे नहीं चलता, सरकार ऐसे नहीं चलती। भाजपा कार्यकर्ताओं को वर्चुअली संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि कर्नाटक में लोकतंत्र का उत्सव चल रहा है। भाजपा ने तो हमेशा चुनावों को लोकतंत्र के महोत्सव की तरह सेलिब्रेट किया है। उन्होंने कर्नाटक की जनता को डबल इंजन सरकार के फायदे के बारे में बताते हुए कहा कि बीते 9 वर्षों में देश का अनुभव रहा है कि जहां-जहां भाजपा की डबल इंजन सरकार है वहां-वहां गरीब कल्याण योजनाएं तेजी से जमीन पर उतरी हैं और जिन राज्यों में भाजपा सरकार नहीं है वहां की सरकारें कोशिश करते हैं कि केंद्र सरकार की कोई भी योजना सफल न हो। कुछ लोग तो योजना से जुड़ते ही नहीं है और कुछ राज्य ऐसे हैं जो योजना का नाम बदल देते हैं।

पंचतत्व में विलीन हुए प्रकाश सिंह बादल, लगे अमर रहे के नारे

(एजेंसी) श्री मुक्तसर साहिब शिरोमणि अकाली दल (शिअद) के वयोवृद्ध नेता और पंजाब के 5 बार मुख्यमंत्री रहे प्रकाश सिंह बादल आज पंचत्तव में विलीन हो गए। मुक्तसर जिले में स्थित उनके पैतृक गांव बादल में पूरे सम्मान के साथ उनका अंतिम संस्कार किया गया। उनके पुत्र सुखबीर बादल ने उन्हें मुखाग्नि दी। गांव के शमशानघाट में जगह कम होने के कारण उन्हें खुद के बाग में ही मुखाग्नि दी गई। वहीं इस गमगीन माहौल में मौजूद लोगों ने प्रकाश सिंह बादल अमर रहे के नारे लगाए। पुलिस की स्पेशल टुकडी ने बादल को अंतिम सलामी दी। श्रद्धांजलि देने के लिए भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे. पी. नड्डा, पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान, पंजाब के राज्यपाल बनवारी लाल पुरोहित, जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला, एन. सी.पी प्रमुख शरद पवार, कैबिनेट मंत्री अमन अरोडा, डॉ. बलजीत कौर, श्री दरबार साहिब की प्रमुख ग्रंथी, श्री अकाल तख्त साहिब के जत्थेदार आदि पहुंचे। बता दें कि प्रकाश सिंह बादल का निधन हो गया था। पिछले कई दिनों से वह फेर्टिस अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती थे। उन्हें सांस लेने में काफी दिक्कत हो रही थी, जिसके चलते उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया था। कई दिन पहले उन्हें आई.सी.यू. में शिफ्ट किया गया था, जहां उनकी हालत स्थिर बनी हुई थी। उनके निधन के साथ ही पंजाब की राजनीति का एक बुलंद सितारा अस्त हो गया। स्व. बादल उन बिरले राजनेताओं में हैं, जिन्होंने शासन की कमान 'राज नहीं सेवा' के मंत्र को मुख्य रख कर संभाली। 95 साल की उम्र तक सियासत में सक्रिय रहने के कारण उन्हें राजनीति का बाबा बोहड (दिग्गज) कहा जाता था।

मोदी के मजाक पर भड़कीं प्रियंका गांधी

सुसाइड जैसे गंभीर विषयों का मजाक उड़ाना सही नहीं

(एजेंसी)

बेंगलुरू। कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी आज पीएम मोदी के सुसाइड नोट पर किए मजाक को लेकर नाराजगी जताई है। उन्होंने पीएम का एक वीडियो भी साझा किया है। जहां पीएम एक चुटकुला सुना रहे हैं। उन्होंने वीडियो के साथ लिखा कि युवाओं में अवसाद और जान देने जैसा विषय पर हंसने वाली बात नहीं है। वहीं राहुल ने भी पीएम का घेराव किया है। देश में बढ़ते डिप्रेशन से खुद की जान लेने वाले लोगों की संख्या में इजाफा हुआ है और इस गंभीर मुद्दे पर पीएम का मजाक करना उन पर भारी पड़ गया है। प्रियंका ने पीएम मोदी पर निशाना साधते हुए कहा कि इस तरह के असंवेदनशील लोगों को मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों का मजाक करने के बजाय खुद को बेहतर ढंग से शिक्षित करना चाहिए और दूसरों को भी ऐसे मुद्दों के प्रति जागरूक करना चाहिए। उन्होंने एनसीआरबी के आंकड़ों का हवाला देते हुए बताया कि 2021 में एक लाख 64 हजार 33 भारतीयों ने खुद की जान ली है। इसमें से एक बड़ा हिस्सा 30 साल से कम उम्र के लोगों का था। वहीं, कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने भी पीएम पर वार किया। उन्होंने ट्वीट करके लिखा है। पीएम मोदी ने एक टीवी चौनल के कार्यक्रम में खुद की जान लेने वालों को लेकर ये चुटकुला सुनाया था। पीएम कह रहे थे- हम बचपन से सुनते आए हैं। एक प्रोफेसर थे। उनकी बेटी ने खुद की जान लेने के लिए एक पत्र छोड़ा और लिखा कि मैं जिंदगी से थक गई हूं। मैं जीना नहीं चाहती हूं, मैं कांकरिया में कूदकर जान दे दूंगी। सुबह प्रोफेसर ने देखा कि बेटी घर में नहीं है। ढूंढने पर उसके बिस्तर पर एक चिट्ठी मिली, जिसे पढ़कर प्रोफेसर को गुस्सा आया। वो सोचने लगे कि मैं प्रोफेसर मैंने इतने साल मेहनत की और मेरी लड़की अभी भी कांकरिया की स्पेलिंग गलत लिख रही है। पीएम के इस चुटीले अंदाज पर जहां लोग ठहाके भरते नजर आए तो वहीं प्रियंका गांधी ने पीएम के इस अंदाज पर नाराजगी जाहिर की है।

दंतेवाड़ा में शहीदों को सीएम भूपेश बघेल ने श्रद्धांजलि दी

(एजेंसी) दंतेवाड़ा छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा जिले में माओवादियों के हमले में शहीद हुए 10 जवानों और एक चालक को मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने श्रद्धांजलि दी और कंधा देकर शहीदों के शवों को उनके गांव के लिए रवाना किया। मुख्यमंत्री बघेल व गृहमंत्री ताम्रध्वज साहू गुरुवार को दंतेवाड़ा पहुंचे और वहां उन्होंने शहादत देने वाले डीआरजी जवानों के शवों पर पुष्पांजलि अर्पित करने के बाद शहीद जवानों के परिजनों से भेंटकर शोक संवेदना प्रकट की और ढांढस बंधाया। इसके बाद शहीदों के शवों को कंधा देकर उनके पैतृत गांव की तरफ रवाना किया। दंतेवाड़ा के अरनपुर थाना क्षेत्र में नक्सलियों के हमले में 10 जवान जोगा सोढ़ी पोलमपल्ली, मुन्ना कड़ती, संतोष तामो, जगदीश कुमार कोवासी, राजू राम और वाहन चालक धनीराम यादव शहीद हो गए थे।

कांग्रेस ने भड़काऊ बयान देने के लिए अमित शाह के खिलाफ दर्ज कराई शिकायत

(एजेंसी)

बेंगलुरू। कर्नाटक में कांग्रेस इकाई ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, भाजपा नेताओं और सार्वजनिक रैलियों के आयोजकों को विभिन्न समुदायों के बीच भड़काऊ बयान देने, दुश्मनी, नफरत और दुर्भावना को बढ़ावा देने के संबंध में पुलिस शिकायत दर्ज कराई है। शिकायत बेंगलुरु में हाई ग्राउंड्स पुलिस के पास दर्ज की गई है। कर्नाटक कांग्रेस अध्यक्ष डी.के. शिवकुमार, राज्य प्रभारी रणदीप सिंह सुरजेवाला और एआईसीसी प्रवक्ता गौरव वल्लभ व्यक्तिगत रूप से पुलिस स्टेशन गए और शिकायत दर्ज कराई। उन्होंने मांग की कि कांग्रेस के सत्ता में आने पर हिंसा की घटनाएं होने की बात कहकर राज्य के मतदाताओं को धमकाने के लिए केंद्रीय मंत्री के खिलाफप्राथमिकी दर्ज की जानी चाहिए। शिकायत में उल्लेख किया गया है कि जानबूझकर झूठे बयान दिए गए हैं, मतदाताओं को भाजपा के पक्ष में मतदान करने की धमकी दी गई है और प्रमुख विपक्षी दल कांग्रेस को बदनाम किया गया है। पार्टी ने आईपीसी और जनप्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 के तहत प्राथमिकी दर्ज करने की मांग की है। बयान 25 अप्रैल को विजयपुरा और अन्य स्थानों पर सार्वजनिक रैलियों के दौरान दिए गए थे।

शिकायत में कहा गया है कि शाह ने अपने भाषण में निराधार और झूठा आरोप लगाकर कांग्रेस की छवि को धूमिल करने का प्रयास किया गया। इसका स्पष्ट उद्देश्य एकत्रित व्यक्तियों के बीच सांप्रदायिक वैमनस्य का माहौल बनाने की कोशिश करना था। शिकायत में कहा गया है कि शाह ने जानबूझकर कांग्रेस और उसके वरिष्ठ नेताओं के खिलाफपूरे कर्नाटक राज्य में बनाए गए सांप्रदायिक सद्भाव को बाधित करने के इरादे से कई झूठे और सांप्रदायिक आरोप लगाए। केंद्रीय मंत्री ने कहा था कि यदि कांग्रेस आगामी चुनाव जीतती है, तो पूरा कर्नाटक राज्य सांप्रदायिक दंगों से पीड़ित हो जाएगा।

शिकायत में कहा गया कि अमित शाह का बयान किसी भी वर्ग या समुदाय के लोगों को किसी अन्य वर्ग या समुदाय के खिलाफ अपराध करने के लिए उकसाने के लिए तैयार किए गए हैं, और इस तरह आईपीसी की धारा 505 और आईपीसी के अन्य प्रावधानों के तहत दंडनीय हैं। बयान अप्रत्यक्ष रूप से धमकी देते हैं और किसी विशेष राजनीतिक दल और उम्मीदवार को वोट देने के लिए मतदाताओं को गुमराह करने का प्रयास करते हैं।

संपादकीय

ताकत बने आबादी

संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष के मुताबिक इस साल जून तक भारत की आबादी चीन से 29 लाख अधिक हो जायेगी। यूं तो सिमटते संसाधनों में आबादी का बढ़ना कोई अच्छी बात नहीं है, लेकिन हमारे लिये यह सुखद है कि यहां दुनिया की सबसे अधिक युवा कार्यशील आबादी देश में मौजूद है। रिपोर्ट के अनुसार भारत में कार्यशील माने जाने वाले 15-64 आयुवर्ग की 68 फीसदी आबादी है। जबकि चीन में साठ साल से अधिक आबादी साठ फीसदी है। कुल मिलाकर नब्बे के दशक में जिस युवा आबादी के बूते चीन दुनिया की दूसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बना है, वैसे ही अवसर व हालात अब भारत के पक्ष में हैं। लेकिन हमारी बढ़ी आबादी तभी वरदान बन सकती है जब हम जनसंख्या लाभांश की क्षमता का दोहन करते हुए नये रोजगार के अवसर विकसित करें। जैसी दलील चीन ने अपनी गुणवत्तापूर्ण व प्रशिक्षित आबादी की बढ़त के रूप में दी है, उसका निष्कर्ष भी यही है कि जनसंख्या का लाभ न केवल संख्या पर निर्भर करता है बल्कि इसके लिए गुणवत्ता भी महत्वपूर्ण कारक है। ऐसे में आर्थिक स्थिरता के लिये बड़े पैमाने पर कौशल उन्नयन को बढ़ावा देना होगा। हमारे सामने शिक्षा की गुणवत्ता में गिरावट, बेरोजगारी तथा स्वास्थ्य सुविधाओं में गुणात्मक अभाव की चुनौती है। पर्याप्त नवाचार का अभाव हमारी विकास दर को धीमा कर देता है। व्यावसायिक शिक्षा की गुणवत्ता में कमी रोजगार के विकल्पों को कम करती है। जिसके चलते वैश्विक बाजार में दखल बनाने के मौके को हम गवां देते हैं। यदि नीति नियंता इस दिशा में गंभीर नहीं होते हैं तो बढ़ी आबादी बोझ भी बन सकती है। विकास गाथा को समावेशी बनाने के लिये देश के करीब डेढ़ अरब लोगों को साझेदारी करनी होगी। निस्संदेह, सबसे बड़ी व युवा आबादी वाले देश में दुनिया की सबसे तेज बढ़ती अर्थव्यवस्था को हम सुनहरे अवसर में बदल सकते हैं। वर्ष 2055 तक कामकाजी आबादी की बढ़त जारी रहने से हम इस मौके का लाभ ले सकते हैं। दरअसल, यह वक्त बढ़ी आबादी को अपनी ताकत बनाने का है। हम आबादी नियंत्रण के सख्त उपाय भारत जैसी लोकतांत्रिक व्यवस्था में नहीं अपना सकते। वैसे भी माओ काल तथा उसके उपरांत भी सिंगल चाइल्ड पॉलिसी की सख्त नीति से चीन की आबादी में जो गिरावट शुरू हुई, उससे चीन फिर उबर नहीं पाया है। इस नीति को खत्म करने तथा ज्यादा बच्चों के लिये प्रेरित करने के बावजूद लोगों का इससे मोहभंग हो गया। जिसके दूरगामी परिणाम चीन की अर्थव्यवस्था में नजर आएंगे। मजदूरी बढ़ने से चीन के निर्यात अब महंगे होने लगे हैं। बहरहाल, जिस युवा आबादी के बूते चीन ने आर्थिक तरक्की की इबारत लिखी, वह मौका हमारे पास है। बशर्ते जाति-धर्म की राजनीति करने वाले नेता बाज आएं और डेढ़ अरब की आबादी के जरिये एक राष्ट्र के रूप में विकास की नई इबारत लिखें। हमारी आबादी में 35 साल से कम उम्र की 66 फीसदी आबादी देश की तरक्की की तस्वीर बदल सकती है। देश में बड़ा घरेलू बाजार हमारी ताकत है और हम विदेश निवेश को बढ़ाकर अर्थव्यवस्था की प्राणवायु बना सकते हैं। साथ ही देश में तेजी से उभरता मध्यम वर्ग भी हमारी ताकत है। सस्ती मजदूरी हमारे औद्योगिक विकास की दर को नये आयाम दे सकती है। इसके अलावा देश के व्यापक कृषि क्षेत्र को नये आयाम देकर इससे जुड़ी पचास फीसदी से अधिक आबादी को देश की ताकत बना सकते हैं। जरूरत इस बात की है कि उद्योगों का विकेंद्रीयकरण करके उन्हें ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित किया जाये। इससे जहां कृषि अवयवों के उद्योगों में उपयोग किये जाने से किसानों की आय बढ़ेगी, वहीं गांवों से शहरों की ओर तेजी से बढ़ता पलायन भी रुकेगा। देश की जीडीपी में फिलहाल अट्ठारह फीसदी योगदान देने वाले कृषि क्षेत्र से प्राप्त हिस्से में वृद्धि से देश की आर्थिकी को नई दिशा मिल सकती है। लेकिन यहां उल्लेख करना जरूरी होगा कि जहां चीन की श्रमशक्ति में महिलाओं की भागीदारी 61 फीसदी है, वहीं भारत में यह महज बीस फीसदी है।

आत्मनिर्भर भारत

कुछ दिनों पहले मुझे भारत में कई जगह कार, हवाई जहाज से जाने का अवसर प्राप्त हुआ। कुछ साल पहले जब मैं विदेशों में जाती थी तो एयरपोर्ट, सड़कें, मैट्रो देखकर महसूस होता था कि ऐसा सब कुछ हमारे देश में क्यों नहीं? आज हमारी सड़कें, एयरपोर्ट, मैट्रो, रेल सभी पूरे मुकाबले पर हैं या यूं कह लो बहुत बेहतर हो रही हैं और भारत आत्मनिर्भर भारत बन रहा है। किसी भी व्यक्ति या राष्ट्र का एक सबसे बड़ा गुण और सपना यही होता है कि वो आत्मनिर्भर बने। आत्मनिर्भता का मतलब है आप अपने देश में कोई भी काम खुद कर सकते हैं। हर मुश्किल भरे दौर में आप अपने दम पर आगे बढ़ सकते हैं। इतना ही नहीं अगर आप आत्मनिर्भर हैं तो उन लोगों की भी मदद कर सकते हैं जिन्हें सचमुच मदद की जरूरत है। हमारे भारत के लिए सबसे बड़ी खुशी की बात यह है कि आज की तारीख में भारत दुनिया के नक्शे पर एक आत्मनिर्भर राष्ट्र के रूप में न सिर्फस्थापित है बल्कि तेजी से आगे भी बढ़ रहा है। निश्चित रूप से इसका श्रेय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को दिया जाना चाहिए जिन्होंने एक सुनियोजित तरीके से और सबको साथ लेकर चलने के मंत्र के साथ बड़ी से बड़ी चुनौतियों के दौरान भारत को एक ऐसी पहचान दी है कि हमारा तिरंगा पूरी दुनिया में अपनी आन-बान और शान बिखेर रहा है। डिफेंस, हैल्थ और मेडिकल, कृषि, कंप्यूटर के क्षेत्र में भारत ने पूरी आत्मनिर्भरता प्राप्त कर ली है। आजादी के अमृत काल अर्थात 75 साल में हमने जो कुछ पाया और जिस तरह हम आत्मनिर्भर बनें उसमें सिलसिलेबार पहले नंबर पर डिफेंस क्षेत्र को रखते हैं। कभी हथियार, गोला-बारूद या जहाज, टेंक, युद्धपोत हम सब कुछ दूसरे देशों से मंगवाते थे लेकिन आज की तारिख में हम अपने देश में निर्मित युद्ध का सामान प्रयोग कर रहे हैं और इतना ही नहीं लगभग तीस से ज्यादा देश हमसे युद्ध का सामान मंगवा रहे हैं। विमानों, पंडुब्बियों, टेंकों और नौकाओं में प्रयोग होने वाला सामान कभी भारत मंगवाया करता था परंतु आज हम इसके निर्माता भी हैं और निर्यातक भी हैं। डिफेंस के क्षेत्र में यह हमारी आत्मनिर्भरता के पहले हस्ताक्षर हैं। सब जानते हैं कि रक्षा मंत्रालय श्री राजनाथ के नेतृत्व में शान से केंद्रित है। दूसरा सबसे बड़ा सैक्टर जिसमें आत्मनिर्भरता के नाम पर हमने सबसे बड़ी उपलब्धि हासिल की वह हैल्थ मेडिकल है। औषधीय क्षेत्र में जब दुनिया में कोरोना के दौरान बहुत कुछ तबाह हो रहा था तब भारत ने महामारी से अपने यहां करोड़ों देशवासियों को तो बचाया ही लेकिन 58 से ज्यादा देशों में वैक्सीन भेजकर इंसानियत का रिश्ता निभाया। सही मायनों में यह भारत की आत्मनिर्भरता है। दवाओं के क्षेत्र में जितनी जीवनरक्षक दवाएं आज भारत में निर्मित की जा रही हैं वह दूसरी कंपनियों के लिए एक सबसे बड़ा चौलेंज है। आज यही दवाईयां बड़े-बड़े देश हमसे मंगवा रहे हैं। जब कोरोना के दौरान मानवता कराह रही थी तब भारत ने एक नहीं कई-कई वैक्सीन निर्मित कर सब देशों में निर्यात कर अपना धर्मघ् निभाया। यह भारत ही था जिसने स्मॉलपॉक्स अर्थात चेचक खत्म किया। इसके बाद भारत में टीबी मुक्त की मुहिम चल रही है। एड्स, कैंसर व अन्य घातक बीमारियों की सौ से ज्यादा औषधियां भारत में निर्मित हो रही हैं और विदेश में इनकी सबसे ज्यादा डिमांड है। यह हमारी आत्मनिर्भरता है। प्रधानमंत्री मोदी का लोकल फॉर वोकल का नारा इसी आत्मनिर्भरता की पहचान है। कभी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने जब स्वदेशी की मांग बुलंद करते हुए अंग्रेजों के खिलाफआंदोलन छेड़ा तो बात भारत की आत्मनिर्भरता से ही थी कि हम आजाद होंगे और हर चीज में दूसरों पर आश्रित होने की बजाये खुद आत्मनिर्भर बनेंगे। सबसे बड़ी बात है कि आज मेक इन इंडिया मुहिम के चलते अगर डिजिटल भारत की भी बात करें तो हम आत्मनिर्भर बन चुके हैं। आने वाले दिनों में डिजिटल रुपए हमारी आत्मनिर्भरता की ही पहचान होगी। अगर दुनिया में डॉलर या पौंड की धूम है तो अनेक देशों में अब हमारी करेंसी भी अन्तर्राष्ट्रीय धन के रूप में चल रही है। हमारे इनसेट 1-ए से लेकर जितने भी उपग्रह हैं और इसरो की देखरेख में हमारे मंगल तक कदम पहुंच रहे हैं तो क्या यह हमारी आत्मनिर्भरता नहीं। कंप्यूटर जगत में आज हम पूरी तरह से आत्मनिर्भर हैं।

खतरनाक जनसंख्या विस्फोट, कुछ करिये सरकार

प्रेम शर्मा

पिछले तीस वर्षो में भारत की जनसंख्या में वृद्धि चक्रवर्ती ब्याज की तरह हो रही है। इसके दुष्परिणाम भी सामने आ रहे है। सरकार के लाख प्रयासों के बावजूद जनता के मौलिक अधिकार उसे नही मिल पा रहे है। ऐसे में अब वह वक्त चुका है कि इस वृद्धि को रोकने के लिए जहॉ सरकार को कठोर कानून बनाने की आवश्यकता है वही जनमानस को भी इस पर अपने भविष्य के अनुसार सोचने और कड़े कदम उठाने की जरूरत है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा जारी ताजा आंकड़ों के अनुसार भारत की जनसंख्या 142.86 करोड़ हो गई है। भारत आबादी के मामले में चीन को पीछे छोड़कर दुनिया के शीर्ष पर है। उधर चीन की आबादी निरंतर कम हो रही है जबकि भारत की आबादी बढ़ रही है। बढ़ती आबादी दशकों से चिंता का विषय रही है। वैसे तो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने लाल किले से अपने भाषण में इस मुद् दे को जोर-शोर से उठाया था लेकिन अभी तक जनसंख्या नियंत्रण की कोई ठोस नीति या रणनीति सामने नहीं आ पाई है। देश की कुल आबादी में 25 फीसद लोग 0.14 साल के आयुवर्ग के हैं। यानी देश की आबादी का बहुत बड़ा हिस्सा युवा है जो वस्तुत: भारत की शक्ति है। अन्य किसी भी देश की तुलना में भारत की यह युवा शक्ति वस्तुत: उसकी कार्यशक्ति है और इसमें प्रगति की अपार संभावनाएं मौजूद हैं। अगर भारत की अपनी युवा शक्ति का नियोजन कर लेता है तो इससे उसके लिए अवसरों के द्वार भी खुल सकते हैं। दूसरी ओर वर्तमान भारत की जो जटिल स्थितियां हैं वे दूसरी ओर इशारा करती हैं। इतनी विशाल युवा शक्ति का सही इस्तेमाल केवल तभी हो सकता है जब उसके लिए शिक्षा और स्वास्थ की सुविधाएं उपलब्ध हों लेकिन वर्तमान भारत ऐसा करने में कहीं से भी सक्षम दिखाई नहीं देता। बेरोजगारों की एक विराट फौज यहां खड़ी है जिसकी भूमिका को सामाजिक तौर पर परखा जाए तो यह निराशा ही नहीं चिंता पैदा करने वाली स्थिति है। कुल मिलाकर भारत के पास न तो वह शिक्षा व्यवस्था है जिससे कि वह युवाओं को इतना सक्षम बना सके कि वे इस औद्योगिक युग में अपनी भूमिका तलाश सकें और न ही उसके कृषि और उद्योग क्षेत्र में ऐसे अवसर हैं जिनसे जुड़ष्कर ये युवा देश की अर्थव्यवस्था में अपना योगदान दे सकें। वस्तुत: भारत की विराट आबादी उसकी सबसे विराट समस्या है। अगर अब जनसंख्या नियंत्रण के मजबूत उपाय नहीं किए गए और व्यावहारिक नीतियां नहीं बनाई गईं तो गंभीर समस्याएं खड़ी हो सकती हैं और अराजकता की ऐसी स्थिति पैदा कर सकती है जिस पर नियंत्रण करना किसी भी सरकार के लिए संभव ही न रहे। भारत ना केवल दुनिया की सबसे अधिक आबादी वाला देश बन गया है, बल्कि यूएन के आंकड़ों के अनुसार यहां दुनिया की सबसे युवा आबादी भी रहती है। भारत की आधी आबादी 30 साल से कम लोगों की है जिनकी औसत उम्र 28 वर्ष है। अमेरिका और चीन की बात की जाए तो वहां की औसत उम्र 38 वर्ष है। एशिया के दो दिग्गज देशों की आबादी में ताजा बदलाव इनके आर्थिक और समाजिक तानेबाने के लिए चुनौती जैसा है। भारत में 2022 में दो करोड़ 30 लाख बच्चों का जन्म हुआ। हालांकि भारत में जन्म दर (प्रति एक हजार की आबादी पर पैदा होने वाले बच्चों की संख्या) में 2004 के 24.1 की तुलना में गिरावट आई है और यह 2019 में 19.7 रह गया है। धीमी गति के बावजूद देश में आबादी का बढ़ना जारी है। पिछले साल चीन में 1950 के बाद से सबसे कम केवल 95.6 लाख बच्चों का जन्म हुआ। जन्म से ज्यादा मौतें हुई इस कारण 1960 के बाद से चीन की आबादी में पहली बार गिरावट दर्ज की गई। वहीं दूसरी ओर, भारत की आबादी में वर्ष 2060 के मध्य तक वृद्धि का अनुमान है, जबकि चीन में इस दौरान आबादी घटने का अनुमान है। एक बात गौर करने वाली है कि यह स्थिति तभी संभव है जब भारत अपनी एक बड़ी आबादी को रोजगार उपलब्ध कराने में सफल रहे। देश में औद्योगिकरण के बढ़ने से एक बड़ी आबादी ने परंपरागत कृषि-किसानी के पेशे को छोड़ दिया है। ऐसे में उन्हें पर्याप्त रोजगार मिले इस पर नीति निर्धारकों को ध्यान देने की जरूरत है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जिनके 2024 में एक बार फिर सत्ता में आने के कयास लगाए जा रहे हैं, वे देश की अर्थव्यवस्था में निर्माण क्षेत्र की भागीदारी 14 प्रतिशत से बढ़ाकर 25 करने की कोशिशों में जुटे हैं। लगातार बढ़ती आबादी भारत के लिए संभावनाओं के साथ-साथ चुनौतियों भी बढ़ा रही है। मुख्य आर्थिक सलाहकार (सीईए) वी अनंत नागेश्वरन ने जनवरी महीने में कहा था कि भारत 6.5-7 प्रतिशत की दर से वृद्धि करने की क्षमता रखता है। देश की अर्थव्यवस्था 2025-26 तक 5 ट्रिलियन डॉलर और 2030 तक 7 ट्रिलियन डॉलर की हो सकती है। हालांकि बढ़ती आबादी सरकार के इस लक्ष्य को हासिल करने की राह का रोड़ा भी बन सकता है। देश की आबादी के बढ़ने से अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल असर पड़ सकता है। पहले ही भारत में गरीबी, भूख और कुपोषण जैसी समस्याओं को दूर करने के लिए गंभीर प्रयास किए जाने की जरूरत है। बढ़ती आबादी के साथ लोगों को बेहतर स्वास्थ्य व्यवस्था, बेहतर शिक्षा, बेहतर इन्फ्रास्ट्रक्चर और शहरों व गांवों को अधिक सुविधाजनक बनाना सरकार के लिए और भी बड़ी चुनौती होगी। रोज बढ़ती आबादी के साथ देश के सामने कई समस्याएं मुंह बाए खड़ीं हैं।

बेतहाशा जनसंख्या वृद्धि से देश में हर व्यक्ति को भोजन उपलब्ध करने और निर्बाध बिजली आपूर्ति करने की राह में चुनौती बनता जा रहा है। हाल के वर्षों में असमय बारिश से फसलों के नुकसान और हीट वेव के कारण बिजली आपूर्ति में बाधा आने जैसी समस्याएं लगातार बढ़ रही हैं। येल विश्वविद्यालय की ओर से जारी इनवायरमेंटल परफॉर्मेंस रिपोर्ट 2022 के अनुसार भारत पर्यावरण के मामले में 180 देशों की सूची में आखिरी पायदान पर है। भविष्य में आबादी यूं ही बढ़ती रही तो हालात और भी बुरे हो सकते हैं। देश में जल संकट भी गंभीर स्तर पर पहुंच गया है। प्रदूषण के कारण पेयजल की स्थिति रोज खराब हो रही है। लगभग 40 प्रतिशत ग्रामीण आबादी के घर तक जल आपूर्ति की सुविधा अब भी उपलब्ध नहीं है। जैसे-जैसे आबादी बढ़ेगी यह समस्या और विकराल होती जाएगी। केंद्र और राज्य सरकारें हेल्थकेयर पर अपनी जीडीपी का लगभग दो प्रतिशत ही खर्च कर पा रही हैं जो पूरी दुनिया में सबसे कम है। पांच से कम उम्र के एक तिहाई से अधिक बच्चे कुपोषित हैं जबकि 15-49 वर्ष की आयु की लभगभग आधी महिलाएं अनीमिया की शिकार हैं। ऐसे में लगातार बढ़ रही आबादी देश की स्वास्थ्य व्यवस्था को देखते माथे पर सिकन डालने वाली स्थिति है। बेरोजगारी: भारत में बेरोजगारी आजादी के बाद से हर दौर में बड़ी समस्या रही है। बीते वर्षों में देश में रोजगार जरूर बढ़ा है पर आबादी उस अनुपात में कहीं ज्यादा बढ़ी है। नतीजा यह है कि भारत में लगभग एक तिहाई युवा बेरोजगार हैं। ना उनके पास बेहतर शिक्षा है ना कौशल। देश की कामगारों के महज पांच प्रतिशत ही आधिकारिक तौर पर स्किल्ड हैं। देश के शिक्षण संस्थानों के पास ना तो बेहतर संसाधन हैं ना ही योग्य शिक्षक है। ऐसे में कुल मिलाकर देखा जाए भारत में जनसंख्या वृद्धि एक चुनौतीपूर्ण स्थिति है। बढ़ती संख्या के लिए भोजन, आवास, जल, बिजली की पूर्ति करना किसी के बस में नही होगा। अगर हमने बढ़ती जनसंख्या से जुड़ी चुनौतियों की अनदेखी की तो हालात बुरी तरह बिगड़ भी सकते हैं। अगर सरकारी और सामाजिक स्तर पर हमने बढ़ती आबादी की चुनौतियों से निपटने के लिए ठोस प्रयास नहीं किए तो भविष्य में उसके गंभीर परिणाम हो सकते हैं। किसी अन्य मामले में भले न सही लेकिन जनसंख्या नियत्रंण के मामले में भारत को चीन की रणनीति को अख्तियार करना चाहिए।

स्वरोजगार से राष्ट्र योगदान तक अपार संभावनाएं

संजीव ठाकुर

स्वयं की क्षमता, शक्ति एवं ऊर्जा को पहचानना आज के नव युवकों के लिए अत्यंत आवश्यक है। स्वयं के विकास से तात्पर्य खुद के लिए रोजगार की तलाश और राष्ट्रीय हित में योगदान भी हो सकता है। भारत की विशाल आबादी के हिसाब से भारत नौजवानों का देश है और भारत सरकार के लिए इतने युवा लोगों के लिए नौकरी उपलब्ध कराना संभव भी नहीं है कि सभी युवकों के लिए समुचित नौकरी का प्रबंध या इंतजाम कर सके। ऐसे में पढ़े-लिखे नौजवानों का यह महती दायित्व बन जाता है कि वह स्वयं की क्षमता को पहचान कर मेक इन इंडिया या स्वावलंबी होने का भरसक प्रयास करें। स्वयं की क्षमता को पहचानने वाला व्यक्ति समाज में एक आदर्श बनकर उभरता है और उसकी प प्रसिद्धि समाज में स्वयं हो जाती है। युवक स्वयं का रोजगार बनाकर न सिर्फखुद की बेरोजगारी दूर करता है, बल्कि वह दूसरों के लिए भी रोजगार का साधन बन जाता है। यह राष्ट्रीय हित में अत्यंत आवश्यक समीचीन तथा राष्ट्रीय विकास के लिए एक अच्छे सूचक के रूप में सामने आता है। स्वयं अपनी क्षमताओं को पहचानना एवं अपने अंदर के उद्यमी को रोजगार के लिए उपयोग में लाना मनुष्य का एक तरह का अलंकार या आभूषण ही है जो मनुष्य के लिए सुखी होने का बड़ा स्त्रोत है। वैसे भी नौकरी करके युवा एक तरह से परतंत्र, पराधीन हो जाता है और अपनी क्षमताओं का खुलकर प्रयोग नहीं कर पाता यही कारण है कि राष्ट्र के समग्र विकास में उसकी क्षमताओं का सही उपयोग नहीं हो पाता। राष्ट्रीय योजना मेक इन इंडिया के अंतर्गत आव्हान किया गया है कि नौजवानों को अपनी शिक्षा,तकनीकी शिक्षा एवं स्किल का उपयोग कर भारत देश के लिए हर तरह के आवश्यक वस्तुओं का स्वयं निर्माण करें एवं दूसरे नौजवानों के लिए आदर्श स्थापित करें जिससे संपूर्ण देश स्वावलंबी बने। स्वयं की क्षमताओं को पहचानने वाला व्यक्ति स्वतंत्र ,स्वाभिमानी होकर स्वयं पर पूर्ण विश्वास करने वाला आत्मविश्वासी व्यक्ति होता है। ऐसे में भविष्य में राहों में जितनी भी मुश्किल है या कठिनाई आती है उसका वह अपने ज्ञान और आत्मविश्वास के साथ मुकाबला करने से नहीं चूकता है। अपनी क्षमताओं को पहचानने के कारण व्यक्ति अत्यंत सरल, सहज एवं आत्मविश्वासी होकर दूसरों की मदद करने से भी पीछे नहीं हटता। स्वयं का रोजगार तलाशने या अपने लिए कोई उद्यम बनाने में युवाओं में जो ज्ञान प्राप्त होता है फल स्वरूप वह युवा अत्यंत त्यागी तथा समाज के लिए सेवा भाव भी रखने वाला होता है। स्वावलंबन से दूसरों पर निर्भर होने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती एवं अपने ही ज्ञान तथा क्षमता से वह उन्नति के सोपान चढ़ते जाता है, एवं राष्ट्र के लिए एक धरोहर की तरह होता है। खुद की क्षमता पहचान कर अपना उद्यम डालने से न सिर्फ समाज में विकास होता बल्कि देश में भी विकास के योगदान में एक बड़ा मील का पत्थर साबित होता है। ऐतिहासिक तौर पर भी खुद की क्षमता पहचानने एवं अपनी उर्जा को सही दिशा में लगाने के कारण बड़े-बड़े महापुरुषों का जन्म हुआ है। जितने भी बड़े महापुरुष हुए हैं, वे पैदाइशी महापुरुष नहीं थे उन्होंने अपनी क्षमता, शक्ति एवं ज्ञान को पहचान कर उसमें समुचित एवं निरंतर परिश्रम कर एक नए मुकाम को हासिल किया था और तब ही वे महापुरुषों की श्रेणी में शामिल हुए हैं। पौराणिक तौर पर प्रभु श्री राम ने वन गमन कर रावण का वध किया और एक धार्मिक इतिहास बनाया। अपनी क्षमताओं को पहचान कर उसे सही दिशा देने का सबसे बड़ा उदाहरण एकलव्य है जिसने जंगल में धनुर्विद्या लगातार अभ्यास करके अर्जुन की तरह बहुत बड़े धनुर्विद्या के शूरवीर बने। कोलंबस ने भी अपनी शक्ति क्षमता को पहचानते अमेरिका की खोज की और गरीब मां बाप की संतान अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने अमेरिका का सर्वोच्च पद प्राप्त किया। राइट ब्रदर्स ने अपने ज्ञान का समुचित विकास एवं उपयोग कर हवाई जहाज की खोज की। खुद की शक्ति एवं ऊर्जा के विकास और स्वावलंबन का सबसे बड़े उदाहरण महात्मा गांधी रहे जिन्होंने ना सिर्फ अपनी क्षमता को पहचाना बल्कि पूरे हिंदुस्तानियों को दिशा दिखा कर स्वतंत्रता का आह्वान कर स्वाधीनता प्राप्त की और महात्मा गांधी के रूप में भारत में स्थापित हुए। खुद की क्षमता एवं शक्ति को पहचानने से व्यक्ति भी महानता की श्रेणी में खड़ा होकर देश के विकास में एक बड़ा सोपान अर्जित करता है। इससे सिर्फव्यक्ति ही महान नहीं बनता बल्कि देश को भी महान बनाने में उसका योगदान बहुत ज्यादा तथा महत्वपूर्ण होता है। मनुष्य अपनी क्षमताओं को वैसे तो आसानी से पहचान नहीं पाता है लेकिन यदि वह अपनी अंतर शक्ति, विशेषताओं को किसी भी उम्र में भी पहचान कर उसका देश के लिए समुचित उपयोग कर सकता है इसीलिए मेक इन इंडिया के लिए युवकों को अपनी क्षमताओं शक्ति तथा ऊर्जा को पहचान कर नए नए उद्यम लगाकर देश के विकास में सहयोग करना चाहिए। यह एक सकारात्मक चरित्र विकास की प्रथम पंक्ति होती है। इससे मनुष्य में और खासकर युवा वर्ग में निर्भीकता,कठोर श्रम करने की शक्ति एवं संयम जैसी विशेषताओं का प्रादुर्भाव होता है। व्यक्ति समाज एवं राष्ट्र की उन्नति में चार चांद लग जाते हैं। उन्नत शिक्षित परिश्रमी एवं सदाचारी युवाओं से ही कोई राष्ट्र महानता की श्रेणी में पहुंच जाता है।

मानव जीवन को बचाने के लिये पृथ्वी संरक्षण जरूरी

> जल, जंगल और जमीन इन तीन तत्वों से पृथ्वी और प्रकृति का निर्माण होता है। यदि यह तत्व न हों तो पृथ्वी और प्रकृति इन तीन तत्वों के बिना अधूरी है विश्व में ज्यादातर समृद्ध देश वही माने जाते हैं जहां इन तीनों तत्वों का बाहुल्य है।

जल, जंगल और जमीन इन तीन तत्वों से पृथ्वी और प्रकृति का निर्माण होता है। यदि यह तत्व न हों तो पृथ्वी और प्रकृति इन तीन तत्वों के बिना अधूरी है। विश्व में ज्यादातर समृद्ध देश वही माने जाते हैं जहां इन तीनों तत्वों का बाहुल्य है। पृथ्वी सभी ग्रहों में से अकेला ऐसा ग्रह है जिसपर अभी तक जीवन संभव हैं। मनुष्य होने के नाते, हमें प्रदूषण और ग्लोबल वार्मिंग को कम करने वाली गतिविधियों में सख्ती से शामिल होना चाहिए और पृथ्वी को बचाना चाहिए क्योंकि यदि पृथ्वी रहने के लायक नहीं रही तो मनुष्य का विनाश निश्चित है। प्रदूषण और स्मॉग जैसी समस्याओं से निपटने के लिए पृथ्वी दिवस विश्व भर में मनाया जाता है। वहीं, लोगों को संदेश देने के लिए सरकार द्वारा कुछ बेसिक थीम भी तय किए जाते हैं। हर साल प्रकृति एवं पर्यावरण चुनौतियों को ध्यान में रख कर पृथ्वी दिवस के लिए एक खास थीम रखी जाती है और उस थीम के अनुसार टारगेट अचीव करने का प्रयास किया जाता है। इस बार विश्व पृथ्वी दिवस की थीम 'इन्वेस्ट इन अवर प्लैनेट' है। पृथ्वी दिवस या अर्थ डे जैसे शब्द को दुनिया के सामने लाने वाले सबसे पहले व्यक्ति थे- जूलियन कोनिग। दरअसल, उनका जन्मदिन 22 अप्रैल को होता था। इसी वजह से पर्यावरण संरक्षण से जुड़े आंदोलन की शुरुआत भी उन्होंने इसी दिन की और इसे अर्थ डे का नाम दे दिया। इस वर्ष पृथ्वी दिवस हमें हरित समृद्धि से समृद्ध जीवन बनाने के लिए प्रोत्साहित करती है। यह थीम संदेश देती है कि हमारे स्वास्थ्य, हमारे परिवारों, हमारी आजीविका और हमारी धरती को एक साथ संरक्षित करने का समय आ गया है। पृथ्वी दिवस आधुनिक पर्यावरण आंदोलन की वर्षगांठ का प्रतीक है, जो पहली बार सन् 1970 में मनाया गया था। इसका उद्देश्य लोगों को पर्यावरण के प्रति संवेदनशील एवं पृथ्वी के संरक्षण के लिये जागरूक करना है। दुनिया में पृथ्वी के विनाश, प्रकृति प्रदूषण एवं जैविक संकट को लेकर काफी चर्चा हो रही है। पौधे जीवन की सबसे बुनियादी जरूरत है चाहे इंसान हो, जानवर हो या अन्य जीवित चीजें। वे हमें भोजन, ऑक्सीजन, आश्रय, ईंधन, दवाएं, सुरक्षा और फर्नीचर देते हैं। वे पर्यावरण, जलवायु, मौसम और वातावरण के बीच प्राकृतिक संतुलन बनाए रखने के लिए बहुत आवश्यक हैं। हमें वनों की कटाई को रोककर और वनीकरण को बढ़ावा देकर वन्यजीवों की देखभाल करनी चाहिए। आज विश्व भर में हर जगह प्रकृति का दोहन एवं शोषण जारी है। जिसके कारण पृथ्वी पर अक्सर उत्तरी ध्रूव की ठोस बर्फ का कई किलोमीटर तक पिघलना, सूर्य की पराबैंगनी किरणों को पृथ्वी तक आने से रोकने वाली ओजोन परत में छेद होना, भयंकर तूफान, सुनामी और भी कई प्राकृतिक आपदाओं का होना आदि ज्वलंत समस्याएं विकराल होती जा रही है, जिसके लिए मनुष्य ही जिम्मेदार हैं। ग्लोबल वार्मिग के रूप में जो आज हमारे सामने हैं। ये आपदाएँ पृथ्वी पर ऐसे ही होती रहीं तो वह दिन दूर नहीं जब पृथ्वी से जीव-जन्तु व वनस्पति का अस्तिव ही समाप्त हो जाएगा। जीव-जन्तु अंधे हो जाएंगे। लोगों की त्वचा झुलसने लगेगी और कैंसर रोगियों की संख्या बढ़ जाएगी। समुद्र का जलस्तर बढ़ने से तटवर्ती इलाके चपेट में आ जाएंगे। कोरोना महामारी जैसी व्याधियां रह-रहकर जीवन संकट का कारण बनती रहेगी। जल, जंगल और जमीन इन तीन तत्वों से पृथ्वी और प्रकृति का निर्माण होता है। यदि यह तत्व न हों तो पृथ्वी और प्रकृति इन तीन तत्वों के बिना अधूरी है। विश्व में ज्यादातर समृद्ध देश वही माने जाते हैं जहां इन तीनों तत्वों का बाहुल्य है। बात अगर इन मूलभूत तत्व या संसाधनों की उपलब्धता तक सीमित नहीं है। आधुनिकीकरण के इस दौर में जब इन संसाधनों का अंधाधुन्ध दोहन हो रहा है तो ये तत्व भी खतरे में पड़ गए हैं। अनेक शहर पानी की कमी से परेशान हैं। आप ही बताइये कि कहां खो गया वह आदमी जो स्वयं को कटवाकर भी वृक्षों को कटने से रोकता था? गोचरभूमि का एक टुकड़ा भी किसी को हथियाने नहीं देता था। जिसके लिये जल की एक बूंद भी जीवन जितनी कीमती थी। कत्लखानों में कटती गायों की निरीह आहें जिसे बेचौन कर देती थी। जो वन्य पशु-पक्षियों को खदेड़कर अपनी बस्तियों बनाने का बौना स्वार्थ नहीं पालता था। अब वही मनुष्य अपने स्वार्थ एवं सुविधावाद के लिये सही तरीके से प्रकृति का संरक्षण न कर पा रहा है और उसके कारण बार-बार प्राकृतिक आपदाएं कहर बरपा रही है। रेगिस्तान में बाढ़ की बात अजीब है, लेकिन हमने राजस्थान में अनेक शहरों में बाढ़ की विकराल स्थिति को देखा हैं। जब मनुष्य पृथ्वी का संरक्षण नहीं कर पा रहा तो पृथ्वी भी अपना गुस्सा कई प्राकृतिक आपदाओं के रूप में दिखा रही है। वह दिन दूर नहीं होगा, जब हमें शुद्ध पानी, शुद्ध हवा, उपजाऊ भूमि, शुद्ध वातावरण एवं शुद्ध वनस्पतियाँ नहीं मिल सकेंगी। इन सबके बिना हमारा जीवन जीना मुश्किल हो जायेगा। आज चिन्तन का विषय न तो युद्ध है और न मानव अधिकार, न कोई विश्व की राजनैतिक घटना और न ही किसी देश की रक्षा का मामला है। चिन्तन एवं चिन्ता का एक ही मामला है लगातार विकराल एवं भीषण आकार ले रही गर्मी, सिकुड़ रहे जलस्त्रोत विनाश की ओर धकेली जा रही पृथ्वी एवं प्रकृति के विनाश के प्रयास। बढ़ती जनसंख्या, बढ़ता प्रदूषण, नष्ट होता पर्यावरण, दूषित गैसों से छिद्रित होती ओजोन की ढाल, प्रकृति एवं पर्यावरण का अत्यधिक दोहन- ये सब पृथ्वी एवं पृथ्वीवासियों के लिए सबसे बड़े खतरे हैं और इन खतरों का अहसास करना ही विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस का ध्येय है। प्रतिवर्ष धरती का तापमान बढ़ रहा है। आबादी बढ़ रही है, जमीन छोटी पड़ रही है। हर चीज की उपलब्धता कम हो रही है। आक्सीजन की कमी हो रही है। साथ ही साथ हमारा सुविधावादी नजरिया एवं जीवनशैली पर्यावरण एवं प्रकृति के लिये एक गंभीर खतरा बन कर प्रस्तुत हो रहा हैं। आज जलवायु परिवर्तन पृथ्वी के लिए सबसे बड़ा संकट बन गया है। अगर पृथ्वी के अस्तित्व पर ही प्रश्नचिन्ह लग जाए तो मानव जीवन कैसे सुरक्षित एवं संरक्षित रहेगा? पृथ्वी है तो सारे तत्व हैं, इसलिये पृथ्वी अनमोल तत्व है। इसी पर आकाश है, जल, अग्नि, और हवा है। इन सबके मेल से प्रकृति की संरचना सुन्दर एवं जीवनमय होती है। अपने-अपने स्वार्थ के लिए पृथ्वी पर अत्याचार रोकना होगा और कार्बन उत्सर्जन में कटौती पर ध्यान केंद्रित करना होगा। अतिशयोक्तिपूर्ण ढंग से औद्योगिक क्रांति पर नियंत्रण करना होगा, क्योंकि उन्हीं के कारण कार्बन उत्सर्जन और दूसरी तरह के प्रदूषण में बढ़ोतरी हुई है। यह देखा गया है कि मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रकृति का दोहन करता चला आ रहा है।

CMYK

नगर निकाय चुनाव में बीजेपी का बड़ा दांव

भगवा गढ़ में भी उतारे मुस्लिम उम्मीदवार

संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में इस बार स्थानीय निकाय चुनाव को लेकर बीजेपी अपनी बदली हुई रणनीति के तहत चुनाव मैदान में है। पहली बार बीजेपी ने मुस्लिम समाज को इतनी बड़ी संख्या में टिकट दिया है। पहले चरण के लिए अब तक तकरीबन साढ़े तीन सौ मुस्लिम उम्मीदवार बीजेपी ने चुनाव मैदान में उतारे हैं, इनमें नगर निगम में पार्षद के उम्मीदवार नगर पालिका नगर पंचायत में अध्यक्ष के उम्मीदवार और उसके अलावा वहां के सभासद के उम्मीदवार भी शामिल है। बीजेपी सबका साथ सबका विकास की जो बात करती है इस बार टिकट देने में भी उसने कहीं न कहीं इसे साबित करने की कोशिश की है। बीजेपी बीते कुछ समय से लगातार मुस्लिम समाज को अपने साथ लाने में जुटी

है और हाल ही में जो पसमांदा सम्मेलन हुए उसे भी इसी से जोड़कर देखा जा रहा है। दरअसल, पार्टी का फोकस अब पसमांदा समाज पर है क्योंकि यूपी में 2024 के लिए बीजेपी ने मिशन 80 का लक्ष्य रखा है और उसे पता है कि बिना पसमांदा समाज के साथ आए यह संभव नहीं है। इसीलिए इस बार स्थानीय निकाय के चुनाव में भी बीजेपी ने अल्पसंख्यक समुदाय को दिल खोलकर टिकट दिया है। पहली बार इस नगरीय चुनाव में ऐसा हुआ है जब बीजेपी ने तकरीबन 350 मुस्लिम उम्मीदवार चुनाव मैदान में उतारे हैं। इनमें प्रयागराज, वाराणसी, गोरखपुर, लखनऊ, झांसी, आगरा, फिरोजाबाद और मथुरा नगर निगम शामिल है। जहां प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संसदीय क्षेत्र वाराणसी नगर निगम में भी बीजेपी ने 4 वार्ड में मुस्लिम उम्मीदवारों को पार्षद का टिकट दिया है तो वहीं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के क्षेत्र गोरखपुर में भी पार्षद का टिकट मुस्लिम समाज के लोगों को दिया गया है। लखनऊ में भी अल्पसंख्यक समुदाय के लोगों को पार्षद का उम्मीदवार बीजेपी ने बनाया है। जबकि झांसी में आगरा में फिरोजाबाद में मथुरा नगर निगम में भी बीजेपी ने इस बार पार्षद के पद पर अल्पसंख्यक समुदाय के उम्मीदवारों को चुनाव मैदान में उतारा है। कई बार यह सीटें खाली रह जाती थी।

बीजेपी के अल्पसंख्यक मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष का साफ तौर पर कहना है कि बीजेपी सबका साथ सबका विकास की केवल बात ही नहीं करती बल्कि उसे पूरा भी करती है। दरअसल, इस बार निकाय चुनाव में बसपा ने 10 नगर निगमों में से 6 पर मुस्लिम प्रत्याशी मेयर पद के लिए उतारे हैं। ऐसे में बीजेपी ने भी तकरीबन ढाई सौ मुस्लिम उम्मीदवार इस निकाय चुनाव के पहले चरण में घोषित किए हैं। वहीं समाजवादी पार्टी की भी नजर कहीं न कहीं मुस्लिम वोट बैंक पर है और इसीलिए पार्टी भी लगातार मुस्लिम उम्मीदवार चुनाव मैदान में उतार रही है लेकिन बीजेपी साफतौर पर कह रही है कि दूसरे दल केवल उन्हें डराने का काम करते हैं। जबकि बीजेपी ने अल्पसंख्यक समाज को आगे ले जाने का काम किया है। अगर नगर पालिका और नगर पंचायतों की बात करें तो फिरोजाबाद नगर पंचायत में लखनऊ की नगर पंचायतों में अमेठी नगर पंचायत में रामपुर में मुरादाबाद मंडल में अमरोहा में तमाम जगहों पर बीजेपी ने इस बार नगर पालिका अध्यक्ष और नगर पंचायत अध्यक्ष के साथ साथ वहां के सभासदों के टिकट भी मुस्लिम समाज को दिए हैं। अगर बीते चुनाव की बात करें जो 2017 में हुए थे तब पूरे प्रदेश में तकरीबन सौ के आसपास ही मुस्लिम उम्मीदवार पार्टी ने उतारे थे लेकिन इस बार जिस तरह से बीजेपी पसमांदा समाज पर फोकस कर रही है यह उसी का असर है कि इतनी बड़ी संख्या में बीजेपी ने कहीं ना कहीं मुस्लिम कैंडिडेट के लिए अपने दरवाजे खोलें हैं। बीजेपी जो सबका साथ सबका विकास का नारा देती है इसके जरिये इस बार सपा और बसपा के मुस्लिम वोट बैंक की आस को तोड़ने में भी वो जुटी है। भारतीय जनता पार्टी के मुस्लिम कार्ड को लेकर कांग्रेस ने साफतौर पर कहा कि पार्टी सत्ता के लालच में इस तरह के आंकड़ों को अपनाती है। क्योंकि बीजेपी का कोई अपना विचारधारा नहीं है वह सिर्फ सत्ता के लाभ के लिए किसी को भी पार्टी में टिकट दे देती है और किसी को भी चुनर उड़ आती है तो क्यों बीजेपी सिर्फसत्ता लाभ के लिए इस तरह के काम करती है।

एनसीसी कैडेट्स ने मतदाता जागरूकता अभियान चलाया

संवाददाता

लखनऊ। आगामी नगरीय निकाय सामान्य निर्वाचन 2023 को ध्यान में रखते हुए नवयुग कन्या महाविद्यालय, राजेन्द्र नगर, लखनऊ की 19 उत्तर प्रदेश गर्ल्स बटालियन एनसीसी कैडेट्स द्वारा आज मेजर डॉ मनमीत कौर सोढ़ी के नेतृत्व में मतदाता जागरूकता अभियान का आयोजन किया गया जिसमें पोस्टरए स्लोगन तथा फेस पेंटिंग के द्वारा मतदान के लिए प्रेरित करने का प्रयास किया गया, फेस पेंटिंग में कैडेट सुप्रिया गोपाल, शिवानी चौधरी, ज्योति उपाध्याय, वर्षा यादव ने प्रतिभाग किया, मेजर सोढी ने कैडेट्स को इस बात के लिए भी प्रेरित किया कि प्रत्येक मत की कीमत होती है, इसलिए देश के बेहतर भविष्य के लिए सभी नागरिकों को सभी चुनाव में अपने मताधिकार का प्रयोग अनिवार्य रूप से करना चाहिए, इसके साथ ही कैडेट्स को इस बात के लिए भी प्रेरित किया गया कि जो 18 वर्ष की हो चुके हैं वह स्वयं भी मतदान करें और कम से कम 10 व्यक्तियों को इसके लिए प्रेरित करें, इस प्रकार से सभी के सामूहिक प्रयास से देश सही मायने में विकास की ओर उन्मुख हो सकता है,

सभी को सभी निर्वाचनो में बिना किसी लालच के धर्म,जाति,लिंग से ऊपर उठकर निष्पक्ष रूप से अपने मताधिकार का प्रयोग करने की शपथ भी दिलाई,19 बटालियन के कमांडिग आफिसर कर्नल दीपक कुमार ने कैडेटस के प्रयास की सराहना की। जागरूकता अभियान में सीनियर अंडर ऑफीसर सगलगुण कौर, वसुंधरा गंगवार, ललिता यादव, रितु, जया, नंदिनी, कीर्ति, अंजली, खुशी कत्नौजिया, हरशीन, रोशनी सिंह, शिवानी पाल, युक्ता, श्रेया, रेनू, गौरवी, पूर्णिमा,गीतांजलि, खुशी आदि बड़ी संख्या में कैडेट्स ने प्रतिभाग किया, डॉ सृष्टि श्रीवास्तव ने भी कैडेटस का मनोबल बढ़ाया।

संक्षिप्त समाचार

सीएम आवास के पास युवक ने खुद को आग लगाई

संवाददाता, लखनऊ। लखनऊ में सीएम आवास के पास बुधवार दोपहर एक युवक ने खुद को आग लगाकर आत्मदाह का प्रयास किया। समय रहते पुलिस ने कंबल डालकर आग को बुझा लिया। झुलसे युवक को सिविल अस्पताल में भर्ती कराया है। जहां उसकी हालत खतरे से बाहर बताई जा रही है। पुलिस पीड़ित के बारे में और आत्मदाह के कारणों की जानकारी पता करने में लगी है। गौतमपल्ली थाना पुलिस के मुताबिक, एक युवक सीएम आवास के पास घूमता हुआ आया। माचिस से आग लगा ली। इससे लगता है वह ज्वलनशील पदार्थ साथ लेकर आया था। युवक ने अपना नाम आनंद मिश्रा बताया है। उसका कहना है कि वह सफीपुर उन्नाव में रहता है। क्षेत्र के दबंग विधायक की शह पर उसको प्रताड़ित करते हैं। जिसको लेकर थाना पुलिस से लेकर स्थानीय प्रशासन सुनवाई नहीं कर रहा है। इसके चलते उसने यह कदम उठाया।

विधायक राजेश्वर सिंह ने सपा के वरिष्ठ पदाधिकारी को दिलाई भाजपा की सदस्यता

संवाददाता, लखनऊ। समाजवादी पार्टी के दिन अच्छे नहीं चल रहे है। पुराने से पुराने कार्यकर्ता सपा को छोड़कर भारतीय जनता पार्टी में अपनी आस्था दिखा रहे है और सपा का दामन छोड़कर भाजपा की सदस्यता ग्रहण कर रहे हैं। इसी क्रम में समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ पदाधिकारी संतोष सिंह अपने साथी सुनील कनौजिया के साथ भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो गये। संतोष सिंह ने पिछले बीस वर्षों का पुराना नाता सपा से तोड़ लिया। वही सुनील कनौजिया भी पन्द्रह वर्षों से सपा से सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में जुड़े थे। संतोष सिंह सन् 2006 से समाजवादी युवजन सभा लखनऊ महानगर के नगर उपाध्यक्ष पद पर थे साथ ही 2014 से 2019 तक समाजवादी व्यापार सभा के लखनऊ के जिला उपाध्यक्ष भी रह चुके है। विधायक सरोजनी नगर, राजेश्वर सिंह ने संतोष सिंह व सुनील कनौजिया को भाजपा की सदस्यता दिलाई। इस अवसर पर जोगेंद्र सिंह चंदेल, दवेंद्र सिंह, अंनू सोनकर, विश्वनाथ श्रीवास्तव, अमित द्विवेदी, ऋषभ श्रीवास्तव, अरुण कुमार मुन्ना, अनुभव अस्थाना, डॉक्टर आदित्य प्रताप सिंह, साजन रावत, अवनीश कुमार सिंह, रवि सिंह, रोहित कनौजिया, अमित वर्मा, ज्ञानी, नागेंद्र यादव, संजय शर्मा, सचिन सिंह आदि सहित बहुत बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

उत्तर प्रदेश सरकार ने सूडान में फंसे राज्यवासियों के लिये बनायी हेल्प डेस्क

संवाददाता, लखनऊ। उत्तर प्रदेश सरकार ने युद्धग्रस्त सूडान में फंसे प्रदेश के लोगों के लिये हेल्प डेस्क बनायी है। अपर स्थानिक आयुक्त सौम्य श्रीवास्तव ने बुधवार को बयान जारी कर बताया कि अफ्रीकी देश सूडान में उत्पन्न संकट और हालात के मद्देनजर वहां फंसे उत्तर प्रदेश के निवासियों के लिये नयी दिल्ली स्थित राज्य के स्थानिक आयुक्त कार्यालय में एक हेल्प डेस्क का गठन किया गया है। गौरतलब है कि सूडान में सेना और आरएसएफ के बीच सत्ता को लेकर पिछली 15 अप्रैल से भीषण लड़ाई हो रही है। मंगलवार को नौसैनिक जहाज आईएनएस सुमेधा की मदद से सूडान से 278 भारतीयों के पहले जत्थे को निकाला गया था।

पुस्तक 'क्षितिज के उस पार का विमोचन

संवाददाता, लखनऊ। लखनऊ जू के म्यूजियम स्थित ऑडिटोरियम में बुधवार को काव्य संग्रह 'क्षितिज के उस पार' का विमोचन हुआ। अनिल मिश्रा 'गुरुजी' की इस पुस्तक में करीब 60 कविताएं हैं। कार्यक्रम प्रो शारिब रुदौलवी की अध्यक्षता में हुआ। इस दौरान नरेश सक्सेना, सुशील कुमार सिंह, प्रो नलिन रंजन सिंह, व्यंग्यकार अनुपमणि त्रिपाठी और डॉ आनंद सिंह कुमार सिंह मौजूद रहे। सभी ने अनिल मिश्रा को उनकी पुस्तक विमोचन के लिए बधाई दी। साथ ही चुनिंदा वक्ताओं ने क्षितिज के उस पार के कुछ अंश पढ़कर भी सुनाए। अनिल मिश्रा 'गुरुजी' ने बताया वो नाटककार हैं, लेकिन कविताओं पर भी हाथ आजमाते हैं। पुस्तक के बारे में उन्होंने कहा इस काव्य संग्रह में करीब 60 कविताएं हैं। इसमें मां पर कविताएं हैं। वहीं सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक और मॉब लिंचिंग पर भी कविताएं हैं। समाज का समग्र चिंतन इसमें शामिल किया गया है। नाटक के दौरान मैंने कई कविताएं लिखीं। ये भी उन्हीं दौर से जन्मी हैं। इस दौरान अनुपमणी त्रिपाठी ने अनिल मिश्रा के व्यक्तित्व और पुस्तक पर बात की। उन्होंने कहा कवि दो तरह के होते हैं। एक लिखने वाले और एक कविता को जीने वाले। गुरुजी कविता जीने वाले लेखक हैं। गुरुजी के बारे में बोलना बहुत मुश्किल है। इस पुस्तक में सेकुलरिज्म, मॉब लिंचिंग, चेतना समेत कई मुद्दों पर कविता है। लेकिन इसमें मुझे सबसे ज्यादा पसंद आई मां पर लिखी एक कविता। उसने मेरे दिल को छू लिया।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मादक पदार्थो की तस्करी करने वाला एक गिरफ्तार

संवाददाता, लखनऊ। यूपी एसटीएफ को अवैध मादक पदार्थ चरस की तस्करी करने वाला एक अभियुक्त को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से (9.5) किलोग्राम अवैध मादक पदार्थ चरस अन्तर्राष्ट्रीय मूल्य लगभग 50 लाख रूपये है। जिसकी पहचान कमरेयाज आलम पुत्र अब्दुल सैफ निवासी चम्पारण बिहार के रूप मे हुई है। जिसको प्लेटफार्म नंबर 5 रेलवे स्टेशन चारबाग लखनऊ से गिरफ्तार किया गया है। अवनीश्वर चन्द्र श्रीवास्तव पुलिस उपाधीक्षक एसटीएफ लखनऊ को सूचना प्राप्त हुई,एक व्यक्ति नरकटियागंज बिहार से सड़क मार्ग से गोरखपुर आ रहा है जो गोरखपुर से लोहित एक्सप्रेस से मादक पदार्थ लेकर लुधियाना जाने वाला है। इस सूचना पर निरीक्षक शैलेन्द्र कुमार के नेतृत्व में जीआरपी चारबाग को साथ लेकर प्लेटफार्म नंबर 5 पर ट्रेन आने का इंतजार करने लगे, ट्रेन आने पर आवश्यक घेराबंदी कर उक्त तस्कर को गिरफ्तार कर लिया गया।

पुरानी पेंशन बहाली से केंद्र सरकार को नही होगी आर्थिक क्षति-इप्सेफ

संवाददाता, लखनऊ। इप्सेफ द्वारा प्रधानमंत्री से आन्दोलन के जरिये कई बार ज्ञापन देकर पुरानी पेंशन बहाल करने की मांग की गयी थी, परन्तु भारत सरकार द्वारा बार-बार कहा गया कि आर्थिक दृष्टि से पुरानी पेंशन बहाल करना संभव नहीं है। राष्ट्रीय सचिव अतुल मिश्रा बताते हैं कि कहा गया कि इससे देश के विकास कार्य ठप हो जायेंगे। इप्सेफके राष्ट्रीय अध्यक्ष वीपी मिश्र ने कहा कि अंग्रेजों के समय से पेंशन मिल रही थी। 01 जनवरी 2004 से इसे बन्द कर एनपीएस लागू करके कहा गया था कि इस योजना से कर्मचारियों को ज्यादा पेंशन लाभ होगा। इसमें व्यवस्था की गयी थी कि वेतन

का 14 प्रतिशत प्रति माह की दर से भारत सरकार अंशदान देगी और 10 प्रतिशत कर्मचारी को प्रतिमाह अंशदान देना होगा। सेवानिवृत्ति होने पर टियर-01 में जमा 60 प्रतिशत धनराशि सेवानिवृत्ति के समय भुगतान कर दी जायेगी और 40 प्रतिशत टियर-02 की धनराशि को शेयर में लगाया जायेगा और उसी से पेंशन दी जायेगी। परन्तु यह नहीं बताया गया कि प्रतिमाह सेवानिवृत्त कर्मचारीको कितनी पेंशन मिलेगी। भारत सरकार भी नहीं बता पा रही है। इससे एनपीएस के सेवानिवृत्त कर्मचारी को जीवन-यापन के साधन समादर हो जायेगा। विगत 11 मार्च को इप्सेफ का प्रतिनिधिमण्डल रक्षामंत्री राजनाथ सिंह से उनके आवास पर मिलकर और उन्हें ज्ञापन देकर एनपीएस एवं पुरानी पेंशन के सम्बन्ध में तुलनात्मक स्पष्ट्रीकरण प्रस्तुत करते हुए बताया था कि एनपीएस के मुकाबले पुरानी पेंशन देने में भारत सरकार पर क्या आर्थिक लाभ पडेगा। भारत सरकार के अधिकारी एनपीएस को ज्यादा लाभदायक बता रहे है, इसलिए वे भी अपना तर्क संगत प्रस्ताव प्रस्तुत करे, जिस पर विचार किया जायेगा। वीपी मिश्र ने बताया कि इसी के बाद भारत सरकार द्वारा वित्त सचिव की अध्यक्षता में तीन सदस्य समिति का गठन किया गया जो परीक्षण के उपरान्त अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करेगी। इसके बाद इप्सेफके महामंत्री प्रेमचन्द्र द्वारा 13 अप्रैल को रक्षामंत्री को प्रस्ताव प्रस्तुत कर दियागया था और उनसे आग्रह किया गया था इस बिन्दु पर भी निर्णय कराये।इप्सेफके प्रस्ताव में पुरानी पेंशन, मूल वेतन 18000 प्रतिमाह, महंगाई भत्ता 5 प्रतिशत प्रतिवर्ष 9 प्रतिशत की दर से ब्याज दर कुल मिलाकर 33 वर्ष की सेवा पर 1,49,12,60361,पुरानी पेंशन में मूल पेंशन 23100 प्रतिमाह महंगाई भत्ता 44121कुल पेंशन धनराशि 67 221 प्रतिमाह, वार्षिक पेंशन 806652 रूपये है। केन्द्र सरकार का योगदान 14 प्रतिशत 149,12 603 61, ब्याज दर 9 प्रतिशत प्रतिवर्ष 13,42, 134 रूपये, यदि वार्षिक एनपीएस 8,06,652 घटा दिया जाय तो 535 48 27 रूपये भारत सरकार के पास बचेगा। इस आंकड़े से स्पष्ट हो जाता है कि पुरानी पेंशन बहाली से भारत सरकार को कोई आर्थिक हानि नहीं होगी बल्कि लाभ होगा औरकर्मचारी भी संतुष्ट होगे।

संजय राय को यूपी एसटीएफ ने लखनऊ से गिरफ्तार किया

संवाददाता, लखनऊ। खुद को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से लेकर बड़े नेताओं का करीबी बताने वाले संजय राय को यूपी एसटीएफने लखनऊ से गिरफ्तार कर लिया है। सूत्र बताते हैं कि संजय ने एसबीआई से करोड़ों रुपए का लोन ले रखा है। काम कराने के नाम पर सैकड़ों लोगों से ठगी की है। संजय राय बहुत से भाजपा नेताओं के साथ मंच साझा कर चुका है। बताया जा रहा है कि 2022 में संजय राय गाजीपुर से भाजपा से टिकट मांग रहा था। यूपी एसटीएफने इसकी विस्तृत जानकारी दी है। संघ प्रमुख मोहन भागवत ने संजय राय शेरपुरिया की किताब का विमोचन किया था और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अवार्ड दिया था।

या तो न्याय मिले, या नौकरी से निकाल दें

कोतवाल ने सिपाही को डंडे से पीटा, वीडियो वायरल

संवाददाता

लखनऊ। आगरा में शाहगंज थाने के प्रभारी निरीक्षक द्वारा सिपाही को डंडे से पीटने का मामला सामने आया है। बुधवार की सुबह सिपाही का वीडियो इंटरनेट मीडिया में प्रसारित हो गया, जिसमें सिपाही आनंद कुमार निरीक्षक द्वारा की गई पिटाई से अपने हाथ में आई चोट को दिखा रहा है।प्रभारी निरीक्षक जितेंद्र कुमार ने सिपाही के आरोप को गलत बताया है।मैनपुरी निवासी सिपाही आनंद कुमार 2005 बैच का सिपाही है। आनंद कुमार के मुताबिक वह करीब ढाई वर्ष से शाहगंज थाने में तैनात है। दो दिन पहले खेरिया एयरपोर्ट ड्यूटी किसी और की जगह भेज दिया। दो दिन ड्यूटी करने के बाद मंगलवार की शाम को थाने पहुंचा। मुझसे कहा कि तू क्यों दिख गया। तुझे मैं देखना नहीं चाहता हूं। मेरी बिरादरी के लिए विशेष सूचक शब्द कहे। इसके बाद डंडा लेकर मेरे पीछे पड़ गए।सिपाही का आरोप है कि निरीक्षक ने उसे डंडे से मारा, अभद्रता की। कहा कि तुम कहीं भी जाओ, कौन सुनने वाला है।वह उनसे बचकर किसी तरह थाने से भागा। सिपाही का कहना है कि थाने में तैनाती के दौरान उसके व्यवहार को लेकर भी क्षेत्र के लोगों द्वारा कभी कोई शिकायत नहीं की गई। प्रभारी निरीक्षक शाहगंज जितेंद्र कुमार का कहना है कि सिपाही द्वारा पिटाई करने की बात गलत है। वह नशे में था,जिस समय पिटाई की वह बात कर रहा है, उस समय थाने पर सभी लोग मौजूद थे। उसे अधिकारियों से शिकायत करनी चाहिए थी।इंटरनेट मीडिया में प्रसारित वीडियो में सिपाही आनंद कुमार चोटों के निशान दिखाने के साथ कह रहा है कि या तो उसे न्याय मिल जाए, या फिर उसे नौकरी से निकाल दिया जाए। वह कभी ड्यूटी से गैर हाजिर नहीं रहा है। पुलिस कमिश्नर डा. प्रीतिंदर सिंह का कहना है कि प्रकरण की जांच सहायक पुलिस आयुक्त लोहामंडी सर्किल को दी गई है। जांच आख्या के आधार पर कार्रवाई होगी।

आम जनमानस की समस्याओं को सुनकर उनके हृदय तक पहुंचने की होड़ में लगे पार्षद प्रत्याशी

संवाददाता

लखनऊ। वार्ड संख्या 86 लोहिया नगर से समाजवादी पार्टी से पार्षद उदय प्रताप सिंह बंटी ने आज जन समुदाय के साथ क्षेत्र का दौरा किया और साथ ही मीडिया के सम्मुख अपनी विभिन्न प्राथमिकता को भी उजागर किया उन्होंने वार्ड के विकास में समस्त कार्य पूर्ण निष्ठा से करने का जनता को आश्वासन दिया क्षेत्र में कूड़ा निस्तारण सफाई कर्मी लगवाने,कूड़ा उठाने की व्यवस्था करवाने,गरीब जनता को चिकित्सा हेतु डिस्पेंसरी खुलवाने, प्रकाश की उचित व्यवस्था एवं उत्तम व्यवस्था, वृद्ध लोगों के लिए वाचनालय की व्यवस्था डेंगू मलेरिया आदि बीमारियों की रोकथाम के लिए समय-समय पर नाला नाली की सफाई एवं फागिंग की व्यवस्था पेंशन योजना से समस्त पात्र व्यक्तियों को जोड़ा जाए एवं साथ ही वार्ड के समस्त पार्कों के सौंदर्यीकरण निर्माण मरम्मत और उनकी देखभाल की व्यवस्था के अपने वादे को और वचन को निभाने का प्रण लिया । फैजुल्लागंज द्वितीय वार्ड नंबर 44 समाजवादी पार्टी पार्षद प्रत्याशी शीला यादव के समर्थन मे उतरे उनके पति पूर्व पार्षद जग लाल यादव ने बताया कि पिछले 5 वर्षों से हमारे द्वारा मलिन बस्ती मे बिजली पानी और सफाई की व्यवस्था कराई गई, चांद बिहार, कबीर नगर, जुड़वा मंदिर, नया पुरवा, केशव नगर, प्रीति नगर, हर क्षेत्र में काम किया गया, हमारे द्वारा 10 किलोमीटर के दायरे तक कार्य किया गया, कुछ क्षेत्र जो रह गए हैं उनकी समस्याओं का इस बार मेरे जीतने के उपरांत निस्तारण किया जाएगा । लोहिया नगर वार्ड 86 से बीजेपी प्रत्याशी राकेश कुमार मिश्रा ने अपने चुनाव प्रचार में जनता से क्षेत्र की समस्याओं के साथ-साथ क्षेत्र के चौमुखी विकास के लिए घर घर जाकर वोट मांगा उनके अनुसार हर प्रत्याशी अपने स्तर से चुनाव प्रचार कर रहा है पर उनका निवेदन क्षेत्रवासियों की हर समस्या के लिए उनके द्वारा खड़े रहकर उनका निस्तारण है, चाहे वह बिजली पानी सड़क सीवर पार्क के साथ साथ कोई भी समस्या हो वह पूर्व की भांति अपने हर बहन भाई के सहयोग के लिए दिन-रात लगे रहेंगे । बहुजन समाज पार्टी ऐशबाग वार्ड संख्या 26 से पार्षद प्रत्याशी कमल गौतम ने क्षेत्र की समस्याओं की प्राथमिकता के बारे में बताते हुए कहा कि उनकी प्राथमिकता होगी क्षेत्र की नालियों का निर्माण, रखरखाव, साफ -सफाई, सीवर लाइन की उचित व्यवस्था, संक्रमण की रोकथाम हेतु फॉगिंग का कार्य निस्तारण की समुचित व्यवस्था।

केन्याई स्कूलों में राइटिंग व टेक्स्ट बुक्स की आईएफएल करेगी आपूर्ति

फ्रेरियाना होल्डिंग ने आईएफएल एंटरप्राइजेज को दिया निर्यात आर्डर

संवाददाता, लखनऊ। पेपर और स्टेशनरी वस्तुओं के कारोबार से जुड़ी भारतीय कम्पनी आईएफएल एंटरप्राइजेज लिमिटेड केन्या के स्कूलों में राइटिंग बुक्स, टेक्स्ट बुक्स, बॉन्ड पेपर, कॉपियर पेपर की आपूर्ति करेगी। इसके लिये आईएफएल को केन्याई फ्रेरियाना होल्डिंग लिमिटेड से निर्यात ऑडर मिला है। ऑर्डर का कुल एफओबी मूल्य 8.16 मिलियन अमरीकी डालर (लगभग 67 करोड़ रुपये) अनुमानित है, जिसे 1 वर्ष के भीतर पूरा किया जाना है। कंपनी ने ओवरसीज पार्टनर के साथ जरूरी सभी प्रक्रियाएं पूरी कर ली है। निर्यात शिपमेंट जून 2023 से निर्धारित है और मार्च 2024 तक पूरा होने की उम्मीद है। ऑर्डर अनुबंध की सहमत शर्तों के अनुसार 80 प्रतिशत अग्रिम भुगतान और शेष 20 प्रतिशत ऑर्डर डिलीवरी पर अधीन है। फ्रेरियाना होल्डिंग लिमिटेड ने अपने पत्र में आईएफएल एंटरप्राइजेज लिमिटेड को दिनांक 21 अप्रैल 2023 के आदेश की पुष्टि करते हुए कहा है कि केन्या सरकार ने कंपनी को राइटिंग बुक्स, टेक्स्ट बुक्स, बॉन्ड पेपर, कॉपियर पेपर की आपूर्ति करने के लिए ऑर्डर दिया है जिसे आईएफएल एंटरप्राइजेज लिमिटेड को दिया गया है। इस विषय पर टिप्पणी करते हुए, आईएफएल एंटरप्राइजेज लिमिटेड के प्रबंध निदेशक और सीएफओ, श्री डोलर शाह ने बताया कि, हमें खुशी है कि हमारी कंपनी ने 8.16 मिलियन अमरीकी डालर का एक प्रतिष्ठित ऑर्डर जीता है जिसे वित्त वर्ष 23-24 में निष्पादित किया जाना है। यह ऑर्डर सहमत शर्तों के अनुसार 80 प्रतिशत प्रारंभिक अग्रिम भुगतान के अधीन है। शिपमेंट जून 2023 से शुरू होने की उम्मीद है। कंपनी अपनी विकास रणनीति को इस तरह से क्रियान्वित करने की दिशा में काम कर रही है जो गुणवत्ता सेवाओं को लगातार वितरित करते हुए सभी हितधारकों के लिए घातीय मूल्य बनाती है। उम्मीद है कि कंपनी मजबूती से आगे बढ़ेगी और आने वाले वर्षों में तेजी से विकास के लिए तैयार है। वर्ष 2009 में शुरु हुई आईएफएल एंटरप्राइजेज लिमिटेड एक प्रमुख पेपर ट्रेडिंग कंपनी है।

यूपी में मिले कोरोना के 602 नए केस

रोगियों के स्वस्थ होने की रफ्तार भी तेज...1000 से अधिक मरीज हुए ठीक

संवाददाता, लखनऊ। उत्तर प्रदेश में जहां लगातार कोरोना वायरस के मरीज बढ़ रहे, वहां संक्रमित रोगियों के स्वस्थ होने की रफ्तार और तेज हो गई है। बीते 24 घंटे में जिले में 602 नए मरीज मिले है और 1,030 मरीज ठीक हुए है। वहीं, 2 मरीजों की मौत हुई है और 432 सक्रिय केस घटे है। जिसके बाद अब कोरोना पॉजिटिव मरीजों की संख्या 4,257 रह गई है। बता दें कि, प्रदेश के सभी जिलों में कोरोना वायरस के फैलने से स्वास्थ्य विभाग की चिंता बढ़ गई थी। इसके बाद राज्य में सतर्कता बढ़ाई गई। कोरोना के बढ़ते मामलों को देखते हुए आयुष विभाग ने भी गाइडलाइन जारी की। आयुष मंत्री दयाशंकर मिश्र दयालु ने लोगों को आयुर्वेदिक दवाओं के बारे में जागरूक करने के सभी जिला होम्योपैथिक चिकित्सा अधिकारी और क्षेत्रीय आयुर्वेदिक अधिकारी को दिए निर्देश। आयुष मंत्री ने सभी क्षेत्रीय आयुर्वेदिक अधिकारी से हर दिन उनके जिले का डिटेल भी देने को कहा है। वहीं, उन्होंने यूनानी अधिकारियों को निर्देश दिया है कि, हर दिन कितने लोगों को आयुर्वेदिक किट दी जा रही है, काढ़ा दिया जा रहा है, यह सभी जानकारियां लखनऊ मुख्यालय पर संकलित करके भेजी जाएं। साथ ही लोगों को जागरूक करने और कोविड-19 में आयुर्वेदिक औषधियां कैसे कारगर हो सकती हैं इसकी भी जानकारी देने को कहा गया था।

अब प्रदेश के 17 जिलों में कोरोना का एक भी नया रोगी नहीं मिला है। 9 जिलों में सिर्फ एक-एक नए कोरोना रोगी मिले हैं। वहीं, 11 जिलों में सिर्फ दो-दो नए केस मिले हैं। 24 जिलों में दो से अधिक व नौ से कम नए रोगी मिले हैं। यानी 61 जिलों में कोरोना के 10 से कम ही रोगी मिले हैं। सबसे ज्यादा गौतमबुद्ध नगर में 107, लखनऊ में 104, गाजियाबाद में 64, मेरठ व गोरखपुर में 20-20 नए मरीज मिले हैं। रिकवरी रेट 98.7 प्रतिशत है। अब पाजिटिविटी रेट 1.63 प्रतिशत है। वहीं 48,343 लोगों की कोरोना जांच की गई। उधर, गौतमबुद्ध नगर व शामली में एक-एक रोगी की संक्रमण से मौत हुई है। दरअसल, संख्या बढ़ते ही दवाओं की पर्याप्त व्यवस्था की गई, इंटीग्रेटेड कोविड

कमांड सेंटर को सक्रिय किया गया। मॉक ड्रिल कर तैयारियों को परखा गया। पर्याप्त संख्या में डॉक्टरों व पैरामेडिकल स्टाफ की तैनाती की गई। ऐसे में कोरोना संक्रमण ज्यादा नहीं बढ़ सका।

मेहनत इतनी करो कि सफलता शोर मचा दे : पल्लवी वर्मा

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

सुलतानपुर। योग शिक्षिका एवं विद्यालय की अध्यक्ष पल्लवी वर्मा ने छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि मेहनत इतनी करो कि सफलता शोर मचा दे। हम जिस काम को करना चाहते है, उसमे कभी हार नही हो सकती है। मन से यह निकाल दीजिए कि हम कुछ नहीं कर सकते । हम सब कुछ कर सकते हैं । छोटे बच्चे की तरह हर काम को करने की ललक होनी चाहिए। रामराजी सरस्वती बालिका इंटर कॉलेज में गुरुवार को छात्राओं का उत्साहवर्धन बातें कहींद्य बालिकाएं हर क्षेत्र में आगे जा रही हैं आप लोग भी हिम्मत और लगन से कार्य करें जो भी चाहे वह आप कर सकते हैं। केवल दृढ़ संकल्प की आवश्यकता है । उन्होंने उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद की हाईस्कूल परीक्षा के परिणाम में विद्यालय की छात्रा अंकिता सोनी प्रदेश की मेधावी सूची मे सातवां स्थान प्राप्त करने पर मेधावी छात्राओं के साथ साथ विद्यालय की सभी छात्राओं का मुंह मीठा करा कर हौसला बढ़ा । सर्वाधिक अंक पाने वाली में आस्था बरनवाल,खुशी , दुबे, गरिमा मिश्रा, पूर्वा सिंह को मिष्ठान खिलाकर सम्मान किया। प्रधानाचार्य रेखा सिंह ने विद्यालय अध्यक्षा पल्लवी वर्मा का स्वागत और अभिनंदन किया। उन्होंने छात्राओं को संदेश देते हुए कहा कि त्रुटियों से कुछ सीख मिले तो त्रुटियां हो जाती वरदान मानव सदा पूर्ण रहा है पूर्ण रूप होते भगवान। विद्यालय के समस्त छात्राएं और आचार्य मौजूद रहे।

माध्यमिक शिक्षक संघ के प्रदेश अध्यक्ष का हुआ जोरदार स्वागत

संवाददाता, सुलतानपुर । उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ पाण्डेय गुट के प्रदेश अध्यक्ष अमरनाथ सिंह का मालवीय हाल में स्वागत किया गया। आपको बताते चलें कि उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ के प्रदेश अध्यक्ष के रूप में अमरनाथ सिंह को प्रांतीय सम्मेलन गोरखपुर में नवीं बार पुन: मनोनीत किया गया। अमर नाथ सिंह का प्रदेश अध्यक्ष निर्वाचित होने के बाद आज उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ एवं उत्तर प्रदेश प्रधानाचार्य परिषद के द्वारा महात्मा गांधी स्मारक इंटर कालेज, सुल्तानपुर के मालवीय हाल में स्वागत एवं अभिनंदन हुआ।कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉक्टर ए के सिंह ने किया और मंच का संचालन सर्वेश कांत वर्मा के द्वारा किया गया।

पांच स्वास्थ्य केंद्रों को मिला काय़ाकल्प अवार्ड

बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने पर मिला अवॉर्ड,

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

इटावा। इटावा जनपद में बेहतर स्वास्थ्य सुविधा सफाई समेत सात मानकों पर खरा उतरने पर इटावा के पांच सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र जसवंतनगर, उदी,बसरेहर,महेवा, सरसईनावर को कायाकल्प अवार्ड मिला है। यह जानकारी मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ0गीता राम ने दी है। उन्होंने कहा कि इस उपलब्धि पर सभी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों के चिकित्सा अधीक्षक डॉ0 गौरव, डॉ0सुशील, डॉ0विकास, डॉ0उदय, डॉ0 विनोद को बधाई के पात्र हैं। उनकी मेहनत से ही कायाकल्प अवॉर्ड मिला है। उन्होंने कहा कि जिन सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों को अवार्ड इस बार नहीं मिल पाया है। वह प्रयासरत रहें। अपने स्वास्थ्य सेवाओं और मानकों के आधार पर भविष्य में बेहतर प्रदर्शन करें। इससे अगली बार इस अवार्ड की श्रेणी में उनका नाम भी आए। सीएमओ ने बताया कि स्वास्थ्य इकाइयों पर विशेष रूप से अस्पताल के रख-रखाव, साफ-सफाई,बायो मेडिकल वेस्ट मैनेजमेंट, इन्फेक्शन कंट्रोल प्रैक्टिसेज,हाइजीन प्रमोशन,पेशेंट फीडबैक का मूल्यांकन होता है जिन स्वास्थ्य केंद्रों को 70 फीसद से अधिक अंक मिलते हैं उन्हें कायाकल्प अवार्ड दिया जाता है। अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी नोडल आरसीएच डॉ0बीएल संजय ने कहा कि यह हर्ष की बात है जनपद में पांच सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों को कायाकल्प अवॉर्ड मिला है। उन्होंने आशा व्यक्त की है आने वाले समय में यह सभी समुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करते हुए बेहतर प्रदर्शन कर बेहतर रैंक हासिल करेंगे। जिला परामर्शदाता क्वालिटी इंश्योरेंस डॉ0 रहीसुद्दीन ने बताया कि कायाकल्प अवॉर्ड स्कीम के अंतर्गत पूरे प्रदेश में कुल 327 चिकित्सा इकाइयों का एसेसमेंट किया गया। उन्होंने बताया कि सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों का इंटरनल,पियर एवं एक्सटर्नल एसेसमेंट किया गया जिसमें जसवंतनगर सीएचसी को 76.86, महेवा सीएचसी को 76.14,उदी को 75.43, बस रेहर को 74.29, सरसई नावर को 71.71 अंक प्राप्त हुए।इसी आधार पर सभी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों को कायाकल्प अवार्ड प्राप्त हुआ और सभी समुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों को सरकार की तरफसे इनाम स्वरूप एक लाख की राशि मिलेगी इस राशि में 75 फीसदी अस्पताल के विकास कार्यों पर खर्च किया जाएगा और 25 फीसदी संबंधित अस्पताल के स्टाफ को प्रोत्सहित करने के लिए खर्च होगा।

मुठभेड़ : गोली लगने से बदमाश घायल

ढाई हजार की लूटकर भागा था बदमाश

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

चौबिया, इटावा। इटावा में 20 हजार के इनामी अपराधी को पुलिस ने मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार कर लिया है। थाना चौबिया और बसरेहर पुलिस ने संयुक्त रूप से बदमाश के साथ मुठभेड़ की। गोली लगने से इनामी बदमाश घायल हो गया है। घायल को जिला अस्पताल उपचार के लिए भेजा गया है। पुलिस के मुताबिक, बदमाश एक व्यक्ति से लूट की वारदात को अंजाम देकर भाग रहा था,तभी उसे पुलिस ने धर लिया। बदमाश 3 जिलों से वांछित चल रहा है। इस पर 12 आपराधिक मामले दर्ज हैं। इनमें 7 लूट की वारदातों का अंजाम दिया गया है। बसरेहर और चौबिया थाना क्षेत्र से निकलने वाले बरेली हाईवे मार्ग पर थाने से चंद कदम दूरी पर पुलिस व बदमाशों में जेपी होटल के पास मुठभेड़ हुई।

बदमाश ने भागते हुए की थी फायरिंग

पुलिस के मुताबिक, बुधवार को करीब रात 9 बजे भदमई थाना चौबिया के पास से बदमाश मधुरेश निवासी मैनपुरी,इटावा की तरफ से चौबिया की तरफजा रहा था। तभी उसने बसरेहर क्षेत्र में एक व्यक्ति से ढाई हजार रुपये की लूट की और वह भागने लगा। पुलिस ने पीछा करते हुए चौबिया पुलिस फोर्स बसरेहर पुलिस फोर्स ने बरेली हाईवे मार्ग अहिकारीपुरा पुलिया के पास उसे घेर लिया। तभी लुटेरा फायरिंग करने लगा। जिससे उसके पैर में गोली लगी। पुलिस ने घायल आरोपी को गिरफ्तार कर जिला अस्पताल इलाज के लिए भेज दिया। मौके पर एक तमंचा 315 बोर,तीन कारतूस,लूट का पर्स बरामद हुआ हैं। मौके पर पहुंचे सैफई सीओ अपर पुलिस अधीक्षक,भरथना थाना प्रभारी सैफई थाना प्रभारी,बसरेहर थाना प्रभारी भारी पुलिस फोर्स के साथ घटनास्थल पर पहुंचे।

एसएसपी संजय कुमार ने बताया कि यह लुटेरा मैनपुरी जिले में इनामी है, जिसको आज चौबिया क्षेत्र में पुलिस मुठभेड़ में घायल कर गिरफ्तार कर लिया है। मधुरेश ने चौबिया क्षेत्र में एक राहगीर से ढाई हजार रुपए लूटा और भाग रहा था। तभी बसरेहर पुलिस और चौबिया पुलिस की संयुक्त टीम ने आरोपी की घेराबंदी करके पकड़ लिया।

कोल्ड स्टोरेज से अमोनिया गैस का हुआ रिसाव

सांस लेने में लोगो को हुई दिक्कत, पुलिस-फायर कर्मियों ने पाया काबू,

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

इटावा। इटावा शहर के एक कोल्ड स्टोरेज में अमोनिया गैस की रिसाव से हड़कंप मच गया। अमोनिया गैस के रिसाव की सूचना मिलने के बाद पुलिस और प्रशासनिक अधिकारी,फायर विभाग, स्वास्थ्य विभाग,उद्यान विभाग अधिकारी मौके पर पहुंचे। दमकल वाहन से पूरे कोल्ड स्टोर में पानी का बड़े पैमाने पर छिड़काव करवाया गया। कोल्ड स्टोरेज के आस पास के लोगों को सांस लेने में दिक्कत हो रही थी। मौके पर जमा लोगों ने अधिकारियों से कोल्ड स्टोरेज में होने वाले गैस रिसाव की शिकायत की। यह घटना थाना इकदिल इलाके के पक्के बाग क्षेत्र स्तिथ मारुति एजेंसी के पीछे गुरुनानक कोल्ड स्टोर का है। बताते चलें बीते बुधवार की रात शहर के पक्का बाग क्षेत्र के अंतर्गत गुरु नानक आलू कोल्ड स्टोर से अमोनिया गैस का रिसाव शुरू हुआ। रिसाव इतना बढ़ गया कि आसपास के मोहल्लों में लोगों को सांस लेने की दिक्कत और उल्टियों की शिकायत शुरू हो गई। स्थानीय लोगों के द्वारा तुरंत पुलिस को सूचना दी गई,मौके पर पुलिस और दमकल की गाड़ियां, एंबुलेंस पहुंची और गैस रिसाव पर काबू पाया। वातावरण में गैस पर नियंत्रण के लिए दमकल की गाड़ियों ने हवा में पानी की बौछार शुरू कर दी।

बाल्व ढीला होने से हुआ गैस रिसाव

आस-पास गाड़ियों ने बरसात शुरु करदी,जिससे मोहल्ले वासियों को कुछ राहत महसूस हुई। दमकल के द्वारा लगातार इस प्रक्रिया को करते हुए लगभग चार घंटे का समय लगा। मौके पर पहुंचे वरिष्ठ अधिकारी और एसपी सिटी ने कोल्ड स्टोर के तकनीकी इंजीनियर से बात की तो पता चला कि बाल्व ढीला होने से गैस रिसाव शुरू हो गया था, जिस कारण यह स्थिति बनी थी।

सांस लेने में हुई दिक्कत-उल्टियां हुईं शुरू

स्थानीय निवासी दीपेंद्र दीक्षित ने बताया कि गैस रिसाव से बच्चे बीमार होने लगे सांस लेने में दिक्कत और उल्टियां शुरू हुई थी। गैस रिसाव की शिकायत लगातार इस कोल्ड स्टोर से कभी-कभी आती रहती है। लेकिन आज गैस रिसाव की अधिक समस्या बढ़ गई थी।

फायर विभाग ने किया छिड़काव

मौके पर पहुंचे एसपी सिटी कपिल देव सिंह ने बताया कि गुरुनानक कोल्ड स्टोर से सूचना मिली कि यहां अमोनिया गैस रिसाव हुआ है, पुलिस बल आया है, इससे संबंधित तकनीकी अधिकारी मौजूद है। यहां बाल्व ढीला होने के कारण लीकेज हुआ है। गैस का प्रभाव अधिक है,इसके लिए फायर टेंडर ने छिड़काव कर दिया है। इसकी जांच करने के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी। यहां मोहल्ले वालों ने बताया था सांस लेने की दिक्कत उल्टियां की शिकायत हुई थी, उसकी हम लोग जांच करवा रहे हैं। इसके प्रभाव को कम किया जाए।

कोल्ड ठंडा करने को अमोनिया गैस का होता है प्रयोग

डिस्टिक हॉर्टिकल्चर अधिकारी सुनील कुमार ने बताया कि आलू को ठंडा करने के लिए अमोनिया गैस प्रयोग की जाती है,हो सकता है कि किसी कारणवश रिसाव हुआ हो, यह गैस स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होती है। इसके रिसाव के लिए इंजीनियर को बुलाकर यहां जांच करवाई जाएगी। ऐसा बार बार क्यों हो रहा है। इसको नियंत्रण करने के लिए पानी का छिड़काव किया जाता है।

निर्माणाधीन आदर्श अंबेडकर वाटिका पर रसूखदारों के कब्जा का प्रयास

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

हरदोई। टडियावा ब्लॉक क्षेत्र की ग्राम पंचायत रावल की निर्माणाधीन आदर्श अंबेडकर अपनी वाटिका के निर्माण कार्य में राजनीतिक लोगों द्वारा बाधा उत्पन्न कर उस कब्जा करने का मामला प्रकाश में आया है। बता दें कि ब्लॉक टड़ियावां क्षेत्र की ग्राम पंचायत रावल के मजरा बसखेल में ग्राम प्रधान द्वारा ग्राम सभा की सरकारी जमीन पर आदर्श अंबेडकर अपनी वाटिका का निर्माण कार्य कराया जा रहा है। ग्रामीण राजाराम, श्यामाकुमार, इंद्रपाल, चंद्रभाल, परसराम, सतीश कुमार, बाबूराम, जगदीश, मूलचंद्र, होरीलाल, मिंटर पाल, सूरज, मुन्ना,संजय कुमार, राजिंद्र, मंगरे लाल, आशाराम, रिंकू, छोटे सहित दर्जनों लोगों ने बताया कि उनके गांव में ग्राम प्रधान द्वारा सार्वजनिक आदर्श अंबेडकर अपनी वाटिका का निर्माण कार्य कराया जा रहा है। जो गांव के एक व्यक्ति को छोड़कर सभी लोगों के लिए बेहतर है। वाटिका के निर्माण कार्य में राजनीतिक लोगों में पूर्व प्रधान मुसाहेब अली, पूर्व प्रधान कन्हैया लाल प्रजापति, पूर्व बी डी सी नत्थू लाल की सह पर बेचे लाल भंते अपनी आदर्श अंबेडकर वाटिका के निर्माण कार्य को रोक कर अपना कब्जा जमाने की कोशिश कर रहे हैं। मामले में ग्राम प्रधान सर्वेंद्र कुमार राव का कहना है कि आदर्श अंबेडकर वाटिका स्वीकृत होने के बाद एक दो लोगों को छोड़कर सभी ग्राम वासियों की सहमति से ग्राम समाज की सरकारी जमीन पर वाटिका बन रही है। जिसका निर्माण कार्य चल रहा था, ग्राम पंचायत के ही कुछ राजनीतिक लोगों के कहने पर बेचेलाल द्वारा वाटिका के निर्माण कार्य को रोक कर उस पर कब्जा करने की कोशिश की जा रही है।

उमस भरी गर्मी में हैंडपंप मरज़मत, रिबोर कार्य में हो रही हीलाहवाली

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

हरदोई टडियावां मौसम का मिजाज बदलते ही इन दिनों उमस भरी गर्मी में स्थानीय व राहगीर लोगों सहित बेजुबानों को भी प्यास बुझाने के लिए पानी की बेहद जरूरी आवश्यकता पड़ रही है। हालांकि लोगों की आवश्यकता के मद्देनजर हाल में डी पी आर ओ हरदोई विनय कुमार सिंह ने सभी सचिवों को हैंड पंप व इंडिया मार्का नलों को जल्द दुरुस्त कराने के निर्देश दिए थे। जिम्मेदारों द्वारा उनके फरमान को गंभीरता से न लेकर हीलाहवाली करते दिखाई दे रहे हैं, जिससे साफ तौर पर अंदाजा लगाया जा सकता है कि आमजनमानस की समस्याओं के प्रति जिम्मेदार कितना सचेत है। यहां टड़ियावां ब्लॉक की ग्राम पंचायत टड़ियावां खास सहित, नेवादा, सैंती, खेरवा दलौली, हर्राई, साखिन,कोटरा, पाटकुआं सहित दर्जनों ग्राम सभाओं में हैंड पंप व इंडिया मार्का नल वर्षों से अपनी मरम्मत व रिबोर का इंतजार कर रहे हैं। मामले में एडीओ पंचायत टड़ियावां धर्मेंद्र गुप्ता ने बताया कि सभी को लेटर जारी कर जल्द दुरुस्त कराने को कहा जाएगा।

बहुमत से जीत रहे, खाली कुर्सियां बनी कौतूहल का विषय

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

हरदोई। डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक गृह नगर मल्लावां पहुंचे। जहां उन्होंने भाजपा प्रत्याशी के पक्ष में प्रचार किया। कहा कि सपा पूरी तरह से डिरेल हो चुकी है। प्रदेश में गुंडई और माफियागिरी खत्म हो गई है। माफिया या तो प्रदेश छोड़कर चले गए या सलाखों के पीछे चले गए है। गृह नगर मल्लावां पहुंचे डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक ने विपक्ष पर जमकर निशाना साधा है। उन्होंने जनपदवासियों से भाजपा प्रत्याशियों को प्रचंड बहुमत से जिताने की अपील की है। कहा कि सपा सरकार में प्रदेश गुंडई और माफियागिरी का हब बन चुका था। लेकिन 2017 के बाद या तो माफिया प्रदेश छोड़कर चले गए या सलाखों के पीछे चले गए है। डिप्टी सीएम ने गृह नगर मल्लावां से भाजपा प्रत्याशी सुशीला देवी के पक्ष में माहौल बनाया। कस्बे के जूनियर हाईस्कूल मैदान में हेलीकॉप्टर से उतरने के बाद स्थानीय विधायक समेत भाजपा कार्यकर्ताओं ने उनका स्वागत किया। जिसके बाद कार से उनका काफिला गुजरा तो क्षेत्रीय विधायक के कार्यालय पर जोरदार स्वागत किया गया। फिर कार से काफिला स्टेट बैंक के पास पहुंचा जहां पर डिप्टी सीएम के भतीजे गौरव पाठक ने सैकड़ो कार्यकर्ताओं के साथ स्वागत किया। इस दौरान उन्होंने विपक्ष पर जमकर निशाना साधा है। डिप्टी सीएम के कार्यक्रम में खाली पड़ी कुर्सियां कौतूहल का विषय बनी रही। फिर भी प्रदेश सरकार का गुणगान करते हुए जनता से भाजपा प्रत्याशी को जिताने का आवाहन किया। डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक ने कहा कि प्रदेश की जनता भाजपा के साथ है। गुंडई, अराजकता करने वालों को जनता नकार चुकी है। अखिलेश यादव पूरी तरह से डिरेल हो चुके है। अब वह जनता के बीच नहीं बंद कमरे से राजनीति करते है।

बूथों का मुआयना करने पहुंचे एसपी, दिए निर्देश

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

हरदोई पुलिस अधीक्षक राजेश द्विवेदी ने पैदल गस्त कर कस्बे की चुनावी गतिविधियों की जानकारी की। एसपी ने शहर के कई पोलिंग बूथ पर पहुंचकर वहां की तैयारियों को परखा। इस दौरान उन्होंने सुरक्षा के मद्देनजर हर पहलू से जुड़ी तैयारी को समय रहते दुरुस्त करने को कहा। पुलिस अधीक्षक राजेश द्विवेदी निकाय चुनाव को निष्पक्ष, शांतिपूर्ण व सकुशल संपन्न कराने और आदर्श आचार संहिता का पूर्ण अनुपालन कराने के उद्देश्य से अचानक कस्बे में पहुंच गए। वांछित, गैर जमानती वारंट, जिलाबदर अपराधियों की गिरफ्तारी व निरोधात्मक कार्यवाई और शत-प्रतिशत लाइसेंसी शस्त्र जमा करने के लिए संबधित को निर्देश दिया। साथ ही नगर पालिका क्षेत्र के अति संवेदनशील संवेदनशील बूथों का निरीक्षण कर सुरक्षित व शांतिपूर्ण मतदान के लिए मतदान केंद्रों पर कड़ी सुरक्षा व्यवस्था रखने, मतदान केंद्रों पर सीसीटीवी कैमरों की दशा व दिशा सही करने, चिन्हित स्थानों पर बैरीकेडिंग करने, मतदान केंद्रों और आसपास के क्षेत्रों में ड्रोन कैमरे से निगरानी रखने के लिए संबंधित थाना प्रभारी बेनी माधव त्रिपाठी को निर्देशित किया गया। चुनाव आयोग की ओर से जारी गाईडलाइन का शत-प्रतिशत पालन करने, चुनाव के दौरान पूर्ण मनोयोग व पूरी गंभीरता, निष्पक्षता और तटस्थता से ड्यूटी का निर्वाहन करने के लिए पुलिस बल को भी निर्देशित किया गया । इस मौके पर अतिरिक्त कोतवाल पी पी सिंह ,कस्बा इंचार्ज रजनीश त्रिपाठी ,मोहम्मद अजीम ,अनिल सिंह ,रामलाल ,राजदेव, उप निरीक्षक मनोज कुमार राजेश कुमार, पवन सिंह, संदीप कुमार ,राज कपूर, मोहित कुमार ,सौरभ कुमार, ऐश्वर्या दुबे समेत भारी पुलिस बल मौजूद रहा। निकाय चुनाव में परिंदा भी पर न मार सके, सात सौ खुराफाती पाबंद नगर निकाय चुनाव से पहले कस्बे की पुलिस ने खुराफातियों पर शिकंजा कसना शुरू कर दिया है। शांतिपूर्ण मतदान कराने के लिए पुलिस अब तक सात सौखुराफातियों को पाबंद कर चुकी है। 36 हिस्ट्रीशीटर पर गुंडा एक्ट की कार्रवाई कर चुकी है। शस्त्र शत प्रतिशत जमा हो चुके हैं। लगभग सौ कोतवाली में व अस्सी दुकानों पर जमा किए गए हैं । मतदान में किसी प्रकार की खलल न हो इससे पहले पुलिस प्रशासन पूरी तरह से चौकन्ना है, ताकि चुनाव के परिंदा पर न मार सके। पुलिस की टीम मोहल्ला मे जाकर उपद्रवियों को चुनाव में शांतिपूर्ण तरीके से रहने की चेतावनी दे रही है।

भाजपा की बागी उम्मीदवार माधुरी कौशल ने पर्चा वापस लेकर किया पार्टी प्रत्याशी का समर्थन

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

ऊँचाहार, रायबरेली। नगर पंचायत अध्यक्ष चुनाव में भाजपा से बगावत करके निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में नामांकन पत्र दाखिल करने वाली माधुरी कौशल ने गुरुवार को वापसी कर ली है। भाजपा कार्यालय पहुंचकर उन्होंने पार्टी के अधिकृत उम्मीदवार ममता जायसवाल का समर्थन किया है। ज्ञात हो कि माधुरी कौशल ने भाजपा से टिकट के लिए आवेदन किया था। टिकट न मिलने पर उन्होंने निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में नामांकन कर दिया था। उसके बाद तमाम तरह के कयास लगाए जा रहे थे। कयासों के बीच गुरुवार को वह भाजपा के चुनाव कार्यालय पहुंची और वहां पर पार्टी के नेता विवेक सिंह की मौजूदगी में भाजपा की अधिकृत उम्मीदवार ममता जायसवाल को अपना समर्थन देते हुए भाजपा प्रत्याशी को जिताने की अपील की। इस दौरान जितेंद्र बहादुर सिंह, कृष्ण चंद जायसवाल, बालेंद्र सिंह, पवन सिंह समेत बड़ी संख्या में पार्टी कार्यकर्ता और पदाधिकारी मौजूद रहे।

नगर की सेवा के लिए सदैव तत्पर रहूँगा : शत्रोहन सोनकर

आपका सही वोट आपके द्वार से नगर तक की शोभा वा सुंदरता बढ़ाने में करेगा योगदान

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

रायबरेली। कांग्रेस प्रत्याशी शत्रोहन सोनकर का जनसम्पर्क तेजी से लोगों को जोड़ रहा है। शत्रोहन ने नगर के अमरेशपुरी कॉलोनी, चंदापुर मन्दिर, खोर, जुनारदार, जवाहर विहार कालोनी, देवानंद पुर, प्रगतिपुरम और रामपुर में जनसम्पर्क कर लोगों से वोट माँगा। शत्रोहन सोनकर ने जनता से वोट मांगते हुए जनता से कहा कि आपका सही वोट आपके द्वार से लेकर नगर की शोभा वा सुंदरता बढ़ाने में योगदान करेगा, और जनता से वादा करते हुए कहा कि यदि मुझे नगर पालिका का अध्यक्ष बनाते है तो मैं आपकी सेवा में सदैव तत्पर रहूँगा। जनसंपर्क के दौरान शत्रोहन के साथ जिला पंचायत सदस्य वीरेंद्र यादव,पूर्व चेयरमैन मो0 इलियास, सईदुल हसन, ओम प्रकाश सोनकर, अंशुल यादव, रुपेश यादव, सुरेश विमल, पारुल बाजपेई इत्यादि मौजूद रहे।

CMYK

20 सालों में पहली बार समाजवादी पार्टी के प्रचार से गायब है आर.पी.यादव की फोटो

95000 मत पाने वाले आर0पी0 यादव ने बता दिया था कि सर्व समाज के नेता हैं

रवीन्द्र भारद्वाज रवी संवाददाता

रायबरेली। रायबरेली नगर पालिका परिषद के चुनाव में समाजवादी पार्टी से प्रत्याशिता को लेकर जो विरोध है, वह चुनाव करीब आते-आते और बढ़ता जा रहा है। पहले पार्टी के बड़े नेता मो0 इलियास पार्टी छोड़ कर कांग्रेस में शामिल हो गए उसके बाद कई जमीनी नेताओं ने पार्टी से इस्तीफा दे दिया, लगातार विरोध बढ़ता जा रहा है। लेकिन पूरे चुनाव में अब तक सबसे रोचक बात यह देखने को मिली है कि समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी के चुनावी प्रचार में सदर विधानसभा के प्रत्याशी आर0 पी0 यादव की फोटो किसी बैनर पोस्टर में नहीं दिख रही है जिसको लेकर यादव समाज ही नहीं बल्कि दलित, पिछड़े व अल्पसंख्यक समाज के लोग सोशल मीडिया के माध्यम से अपनी नाराजगी जता रहे हैं। लोग भले ही आर0पी0 यादव को जिले में यादव समाज का सबसे बड़ा नेता बताते हो लेकिन 2022 के चुनाव में आर0पी0 यादव ने 95000 मत पा कर यह सन्देश दे दिया था उनकी लोकप्रियता केवल यादव समाज तक ही सीमित नहीं है बल्कि वो सर्व समाज के बड़े नेता हैं। इतनी लोकप्रियता वाले नेता की फोटो पार्टी प्रत्याशी के प्रचार में ना होना कई तरह के सवाल खड़े करती है। पिछले 20 वर्षो में ऐसा कभी नहीं हुआ है कि रायबरेली नगर पालिका के चुनाव में समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी ने आर0पी0 यादव की फोटो अपने प्रचार में ना लगाई हो। आर0पी0 यादव चुनाव भले ही हार गए हों और वर्तमान में जेल में हों, लेकिन उनका रायबरेली विधानसभा की जनता पर ना केवल बड़ा प्रभाव है बल्कि भावनात्मक लगाव भी है, 2022 के चुनाव में उन्होंने जिन परिस्थितियों में चुनाव लड़ कर पूरे जिले में सबसे अधिक मत प्राप्त किए थे यह एक इतिहास है जो जगजाहिर है कि रायबरेली की आम जनता ने आर0पी0 यादव को चंदा देकर चुनाव लड़वाया था, आर0पी0 यादव रायबरेली में एक विचारधारा हैं इसीलिए राजनैतिक विरोधियों की नजर का काँटा हैं। आर0 पी0 यादव के प्रसंशकों का मानना है कि उन्हें राजनैतिक द्वैष के चलते झूठे मुकदमे में जेल भिजवाया गया है और अब उनके प्रसंशक इस बात को लेकर नाराजगी दिखा रहे हैं कि उनके नेता की फोटो प्रत्याशी के प्रचार में क्यों नहीं दिख रही है? नगर पालिका अध्यक्ष पद की दावेदारी में पार्टी के सबसे वरिष्ठ नेता व निवर्तमान जिला उपाध्यक्ष राम सेवक वर्मा टिकट ना मिलने पर अपना रोष जताते हुए सोशल मीडिया पर पहले ही लिख चुके हैं कि ष्यदि आर0 पी0 यादव जी जेल में ना होते तो जिला संगठन पार्टी नेतृत्व को गुमराह करके गलत आदमी को टिकट ना दिलवा पाता, आर0 पी0 यादव हमेशा कहते थे आरक्षित सीट होने पर आपको चुनाव लड़वाएंगे

आर0 पी0 यादव की फोटो का ना होना उनके समर्थकों को चिढ़ाने जैसा है

वर्तमान प्रत्याशी के प्रचार में आर0 पी0 यादव की फोटो का ना होना और राम सेवक वर्मा की सोशल मीडिया पोस्ट से यह बात स्पष्ट होती है कि इस चुनाव में पार्टी का प्रत्याशी आर0पी0 यादव की पसन्द का नहीं है। आर0पी0 यादव सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के चहेते हैं इसमें कोई शंका नहीं है कि यदि वो जेल में ना होते तो उनकी अपनी विधानसभा में टिकट उनकी पसंद के प्रत्याशी को ही मिलता। ऐसे में प्रत्याशी के प्रचार में आर0 पी0 यादव की फोटो का ना होना उनके समर्थकों को चिढ़ाने जैसा है।

27 में आर0पी0 यादव नहीं होंगे सपा के प्रत्याशी

यहाँ पर एक और स्थिति साफ हो जाती है कि पार्टी नेताओं वा कार्यकर्ताओं के अत्यंत विरोध और प्रचार में आर0पी0 यादव की फोटो ना होने के बावजूद भी यदि समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी की जीत हो जाती है तो 2027 के चुनाव में आर0पी0 यादव सदर विधानसभा से समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी नहीं होंगे, तब शायद सदर से प्रत्याशी नगर पालिका अध्यक्ष बनाने वालों में से कोई होगा, यह चुनाव केवल नगर पालिका अध्यक्ष बनाने तक सीमित नहीं है बल्कि नगर पालिका के बहाने सदर सीट पर दावेदारी करने का है।

समाजवादी पार्टी के प्रचार से गायब हैं पार्टी के नामचीन चेहरे व जमीनी नेता

समाजवादी पार्टी के सभी बड़े नेता अध्यक्ष पद के प्रत्याशी पारसनाथ के प्रचार में नहीं दिख रहे हैं और ना ही सोशल मीडिया पर पार्टी प्रत्याशी के लिए समर्थन जुटा रहे हैं। ऐसे दर्जनों नेता हैं जो लगभग साल भर पहले विधानसभा चुनाव में आर0पी0 यादव के लिए दिन-

रात प्रचार में लगे रहते थे लेकिन अब पालिका अध्यक्ष के चुनाव में घर पर बैठे हैं। चंद्रराज पटेल, सुरेश पटेल, रंजीत पाल, अखिलेश माही, वरिष्ठ नेता राम विलास यादव, राम सिंह यादव, राजेश चन्द्रा, जीतेन्द्र मौर्या, देशराज यादव, रंजीत यादव, राहुल निर्मल, राजेश मौर्या, राजेश चंद्रा, विनय यादव, अमित यादव मटिहा, अमरेंद्र यादव, पवन यादव मुंशीगंज, शिवकुमार नेता, धुन्नी मौर्या, रामे यादव, मो0 साहिल, विनोद यादव, शुभम पाल, के0डी0 जगदीशपुर, राजेंद्र यादव उर्फ राजू और राम सेवक वर्मा जैसे दर्जनों जमीनी नेता ना तो अपने सोशल मीडिया पेज से पार्टी के लिए समर्थन में आवाज उठा रहे है और ना ही प्रचार करते दिख रहे हैं। इनमें से कई नेता पार्टी के जिला संगठन वा प्रान्तीय संगठन के जिम्मेदार पदों के पदाधिकारी भी हैं और रायबरेली के रहने वाले हैं इसलिए विधानसभा चुनाव में पूरे दमखम के साथ पार्टी के लिए प्रचार कर रहे थे, लेकिन अब नगर पालिका के चुनाव में मौन मुद्रा में हैं। इनके अलावा ऐसे कई दर्जनों नेता व सक्रिय कार्यकर्ता हैं जो इस चुनाव में प्रत्याशी के प्रचार में रूचि नहीं ले रहे हैं। एक तरफ प्रत्याशी के चयन पर पार्टी के अन्दर वा बाहर विरोध और उस पर पार्टी के लोगों का प्रचार ना करना चुनाव की तस्वीर को साफ कर रहा है। हो सकता है इस खबर को पढ़ने के बाद चुनाव का संचालन करने वाले लोग इन नेताओं को साधने की कोशिश करें लेकिन शायद तब तक बहुत देर हो चुकी होगी।

शांतिपूर्ण ढंग से चुनाव संपन्न कराने के लिए एसडीम ने प्रत्याशियों के साथ की बैठक

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

महराजगंज, रायबरेली। निकाय चुनाव को शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न कराए जाने के लिए प्रत्याशियों की बैठक कर आदर्श आचार संहिता का पालन करने के निर्देश दिए गए। कोतवाली परिसर में आयोजित बैठक में उपजिलाधिकारी राजेन्द्र कुमार शुक्ला ने कहा कि प्रत्याशी मतदाताओं को मतदान केंद्र तक अपने साथ लेकर नहीं आएगा, न ही मतदाताओं को लाने के लिए कोई प्रत्याशी किसी वाहन का प्रयोग करेगा। बुजुर्ग और विकलांग तथा शारीरिक रूप से अक्षम लोगों को मतदान स्थल से 200 मीटर पहले तक निजी वाहनों से आने की अनुमति होगी। बैठक के दौरान क्षेत्राधिकारी अरुण कुमार नौहवाल ने प्रत्याशियों को हिदायत देते हुए कहा कि मतदान के दिन मतदाताओं को अपने वाहनों से लाने ले जाने की व्यवस्था नहीं करेंगे। मतदाता स्वयं मतदान केंद्र पर पहुंचकर मतदान करेगा। उन्होंने कहा कि, प्रत्याशियों द्वारा किसी भी प्रलोभन या भ्रष्टाचार की शिकायत मिलने पर कड़ी कार्यवाही की जाएगी। इस मौके पर कोतवाल श्याम कुमार पाल, राजस्व निरीक्षक महेश प्रसाद सोनकर, राजाराम लेखपाल, विपिन कुमार मौर्य लेखपाल, एसआई आशीष मलिक, पूर्व जिला पंचायत सदस्य प्रभात साहू, नुरुल हसन, मोहम्मद कौशल, सतीश कुशमेश, विजय धीमान, इरशाद आलम, मोहम्मद ताहिर, समेत अध्यक्ष एवं सदस्य पद के समस्त प्रत्याशी मौजूद रहे।

तहसीलदार ने राजस्व निरीक्षक टीम के साथ ग्रामसभा की भूमि पर बने मकानों की जांच की

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

ऊँचाहार, रायबरेली। तहसील क्षेत्र में तहसीलदार ने राजस्व निरीक्षक टीम के साथ दौलतपुर गांव पहुंचकर ग्राम सभा की भूमि पर बने हुए मकानों की जांच की गई। इस दौरान लोगों को कब्जाई गई भूमि के बदले निजी जमीन देने या फिर उक्त भूमि को खाली करने के निर्देश दिए हैं। गुरुवार को दौलतपुर ग्राम पंचायत का पूरे ब्राह्मण गांव अंग्रेजी हुकूमत के पूर्व से आबाद है। सन 1968 में हुई चकबंदी में भी यह यह गांव यहीं पर स्थित था। वर्ष 2010 में कुछ अराजक तत्वों द्वारा जिलाधिकारी से लेकर मुख्यमंत्री रखे शिकायत की गई। जिसके बाद एसडीएम रहे एसएन पांडेय ने राजस्व टीम के साथ मौके की जांच की। जिनकी रिपोर्ट आख्या में भी यह गांव पुरानी आबादी बताई गई थी। बृहस्पतिवार को तहसीलदार अजय कुमार गुप्ता हल्का लेखपाल प्रमोद गुप्ता के साथ गांव पहुंचकर उक्त भूमियों की नाप जोख करते हुए सभी पर बेदखली की कार्यवाही के निर्देश दिए हैं। गांव के जयप्रकाश, ओम प्रकाश, जगदीश प्रसाद पांडेय, देशराज, राजाराम, अवसान पाल, अमरनाथ त्रिपाठी, अमरेश कुमार, रामखेलावन पाल आदि का कहना है कि हम लोगों के पास थोड़ी बहुत जो भूमि है उससे साल भर परिवार का जीविकोपार्जन चलता है। अगर हम लोग बेदखल हुए तो कहां जाएंगे। तहसीलदार अजय कुमार गुप्ता ने बताया कि गांव के लगभग सभी व्यक्तियों पर बेदखली की कार्यवाही कोर्ट में विचाराधीन है। जिसकी मेरे द्वारा स्थलीय निरीक्षण कर नजरी नक्शा बनाया गया है। सभी को निर्देशित किया गया है कि या तो इस भूमि के बदले दूसरी भूमि दें। या फिर ग्रामसभा की संपत्ति को खाली कर दें।

जिलाधिकारी कार्यालय में जिला खेल विकास एवं प्रोत्साहन समिति की बैठक

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

अंबेडकरनगर। जिला खेल विकास एवं प्रोत्साहन समिति की बैठक जिलाधिकारी अविनाश सिंह की अध्यक्षता में जिलाधिकारी कार्यालय में आयोजित की गई।वर्ष 2023-24 का मुख्य थीम खेलोगे तो खिलोगे है, बैठक के दौरान रखे गए प्रस्ताव पर जिलाधिकारीद्वारा प्रोत्साहन समिति में धनराशि जमा करने पर चर्चा की गई। बैठक के दौरान जिलाधिकारी द्वारा स्टेडियम की साफ-सफाई, बाहर से रंगाई पुताई, स्टेडियम के अंदर बाहर खराब लाइट को सुधारने, तथा अन्य बेसिक सुविधाओं के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया गया।बैठक के दौरान जिलाधिकारी ने कहा कि खेल से शारीरिक विकास के साथ-साथ मानसिक विकास होता है। जिसमें बच्चों का खेल में प्रतिभाग करना अति आवश्यक है, जिससे बच्चों में समाज में एकता,भाई चारे और शारीरिक सुंदरता में वृद्धि भी होती है। जो खिलाड़ी बचपन से खेलते हैं आगे बढ़ते हैं राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं एवं अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग करते हैं तो उनको सरकार नौकरी भी देती है। बैठक के दौरान समिति द्वारा 15 मई से समर कैंप संचालित करने का निर्णय लिया गया हैजिलाधिकारी और मुख्य विकास अधिकारी के पहल पर जनपद के राजकीय एकलव्य स्पोर्ट्स स्टेडियम में कई महत्वपूर्ण खेलों का समर कैंप आयोजित होगा। यह कैंप पहली बार आयोजित होने जा रहा है,15 मई से इसका शुभारंभ होगा।जिला खेल विकास प्रोत्साहन समिति की बैठक के दौरान यह निर्णय लिया गया कि इस बार हैंडबॉल, बास्केट बाल,वालीबाल,हाकी, एथलेटिक्स,क्रिकेट,बैडमिंटन,फुटबाल ,कुस्ती का समर कैंप चलाया जाएगा जिलाधिकारी ने कहा की समर कैंप के लिए यहां के बच्चो को अब बाहर नही जाना पड़ेगा बेहतर संचालन के लिए जिलाधिकारी द्वारा जिला खेल अधिकारी को निर्देशित किया गया कि कोच की व्यवस्था सुनिश्चित किया जाए।इस कैंप हेतु ज्यादा से ज्यादा बच्चो से नामांकन कराने की अपील की गई है।बैठक के दौरान मुख्य विकास अधिकारी अनुराज जैन, अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व डॉ सदानंद गुप्ता, जिला सूचना अधिकारी संतोष कुमार द्विवेदी, जिला क्रीड़ा अधिकारी शीला भट्ट,जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी, डीपीआरओ, जिला विद्यालय निरीक्षक,ओलंपिक जिला सचिव डॉक्टर हनुमान प्रताप सिंह तथा संबंधित विभाग के अधिकारी कर्मचारी मौके पर उपस्थित रहे।

कार्यकर्ताओं के अन्दर जोश भरने हेतु कार्यकर्ता सम्मेलन का आयोजन

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

अंबेडकरनगर। निकाय चुनाव में नगरपालिका अकबरपुर के कार्यकर्ताओं के अन्दर जोश भरने हेतु आज कार्यकर्ता सम्मेलन का आयोजन किया गया । पूर्व जिला अध्यक्ष रमाशंकर सिंह के संयोजन एवं महामंत्री बाबा राम शब्द यादव के संचालन में जिले के यशस्वी जिला अध्यक्ष डॉ मिथिलेश त्रिपाठी की अध्यक्षता और मुख्य अतिथि खेल एवं युवा कल्याण मंत्री व अंबेडकरनगर के प्रभारी मंत्री माननीय गिरीश चंद्र यादव की उपस्थिति में संपन्न हुआ। जिला निकाय चुनाव मीडिया प्रभारी बजरंगी पाठक ने बताया कि माननीय प्रभारी मंत्री ने कार्यकर्ताओं में उत्साह भरते हुए हमारा बूथ सबसे मजबूत पर सबसे अधिक जोर दिया ।उन्होंने बताया कि डबल इंजन की सरकार जब निकाय चुनाव में भी अपने प्रत्याशियों को विजय श्री दिलाएगा तो यही डबल इंजन की सरकार वंदे भारत की स्पीड से विकास की गति को दौड़ेगी। हम सभी माननीय योगी और मोदी जी द्वारा चलाई जा रही जन कल्याण की योजनाओं को जनता तक पहुंचाया है और उसी के बलबूते पर हम एक बार पुन: अकबरपुर में नगर पालिका परिषद के अध्यक्ष पद पर श्रीमती सरिता गुप्ता को जिताएंगे । जिला अध्यक्ष डॉ मिथिलेश त्रिपाठी ने सभी से आवाहन करते हुए कहा कि हमारे मोर्चे के सभी पदाधिकारी अपनी अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन करना प्रारंभ कर दिए हैं महिला मोर्चा, अनुसूचित मोर्चा, पिछड़ा मोर्चा और युवा मोर्चा अपने कार्यक्रमों को धार दे रहे हैं जिसकी बदौलत हम सभी विजय श्री की ओर अग्रसर हो रहे हैं । वादों के अधिक से अधिक सभासद भी भारतीय जनता पार्टी के सिंबल पर जीता हासिल करेंगे।कार्यक्रम में विशेष उपस्थिति अकबरपुर नगर पालिका के संयोजक जिले के मीडिया प्रभारी बाल्मीकि उपाध्याय , जिला पंचायत अध्यक्ष श्याम सुंदर वर्मा, मनोज गुप्ता, दिलीप पटेल देव ,दीपक तिवारी, रजनीश सिंह, रिंकल सिंह ,ज्ञान सागर सिंह ,गौरव श्रीवास्तव, मनीष मिश्र, सुधांशु त्रिपाठी, राजकुमार सेठ ,क्षेत्रीय मंत्री बसंती देवी सहित सैकड़ों की संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

बड़ी से बड़ी सफलता की खुशी अपना गांव अपने लोगों के बगैर अधूरी-प्रदेश अध्यक्ष

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

बसखारी अंबेडकर नगर। व्यक्ति की बड़ी से बड़ी उपलब्धि एवं सफलता पर होने वाली खुशी का हिस्सा चाहे कितने बड़े लोग ही क्यों ना बन जाए लेकिन उसकी सफलता की खुशी अपने गांव अपने लोगों के बगैर अधूरी ही रहती है। अपने गांव और अपने लोग जब हासिल की गई सफलता का हिस्सा बनते हैं।तो वह खुशी शब्दों में व्यक्त नहीं की जा सकती है। उक्त बातें अभी हाल ही में उत्तर प्रदेश सहकारी लेखा परीक्षक संघ के प्रदेश अध्यक्ष के रूप में नवनिर्वाचित अनिरुद्ध कुमार द्विवेदी उर्फ बबलू दुबे ने शुकुल बाजार पहुंचने पर अपने गांव अपने लोगों के द्वारा अल्प सूचना के बावजूद भव्य रूप से किए गए स्वागत कार्यक्रम के दौरान कही। उपज के निवर्तमान जिला अध्यक्ष एवं बचपन के मित्र सुभाष गुप्ता के नेतृत्व में उनके आवास पर आयोजित किए गए स्वागत कार्यक्रम में मौजूद उपज के संरक्षक एवं वरिष्ठ पत्रकार बचुली मिश्र ने क्षेत्र के युवाओं को प्रदेश अध्यक्ष अनिरुद्ध द्विवेदी से प्रेरणा लेने की बात करते हुए कहा कि एक छोटे से गांव में रहकर जीवन के मुल्यो के प्रति संघर्षशील रहे अनुरोध द्विवेदी ने लोक सेवा आयोग की प्रतियोगी परीक्षाओं को उत्तीर्ण कर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाने वाले अधिकारियों की प्रदेश में नेतृत्व कर क्षेत्र के साथ-साथ जनपद का भी नाम रोशन किया है। प्रदेश अध्यक्ष का स्वागत करते हुए सुभाष गुप्ता ने कहा कि आज की संवैधानिक व्यवस्था में अनपढ़ लोगों के बीच में लॉलीपॉप देने वाली बातें कहकर अनपढ़ के द्वारा चुनाव जीत से नियंत्रित किया जा सकता है।लेकिन लोक सेवा आयोग के द्वारा आयोजित प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता स्थापित करने वाले अधिकारियों का प्रदेश में नेतृत्व करना एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। इस बड़ी उपलब्धि को हम लोगों के बीच में बचपन से रहने वाले अनिरूध द्विवेदी ने हासिल कर यह साबित कर दिया है।

प्रदीप गुप्ता के नामांकन मे शामिल हुए मिशन मोदी अल्पसंख्यक मोर्चा के पदाधिकारी

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

अंबेडकरनगर। जिलाध्यक्ष मिशन मोदी अम्बेडकरनगर अल्पसंख्यक मोर्चा के के निर्देशानुसार मिशन मोदी अल्पसंख्यक मोर्चा के सभी पदाधिकारीयो ने नगर पालिका परिषद् टांडा के प्रत्याशी प्रदीप गुप्ता के नामांकन में शामिल हुए जिसमें हीरोज अहमद जिला महामंत्री और जिला मंत्री समीम, जिला मंत्री नफीस और सभी पदाधिकारी शामिल रहे जिलाध्यक्ष ने बताया कि इस बार टांडा नगर पालिका परिषद् में कमल का फूल खिलने जा रहा है प्रदीप गुप्ता ने बताया कि टांडा के लिए विकास के मुद्दे पर चुनाव लड़ रहे है और सभी लोग चाहते है टांडा में विकास हो इसलिए सभी वर्ग की जनता प्रदीप गुप्ता जी को जीताने का काम करेंगे और मुस्लिम समुदाय के लोग भी अबकी भारतीय जनता पार्टी के साथ खड़े है।

समुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों को मिला कायाकल्प आवार्ड

संवाददाता, सुलतानपुर। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ0 डी0के0 त्रिपाठी ने बताया कि भारत सरकार के निर्देशानुसार कायाकल्प आवार्ड हेतु वर्ष 2022-23 में उत्तर प्रदेश के कुल 327 चिकित्सा इकाईयॉध्सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों में जनपद सुलतानपुर के 06 सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों दूबेपुर, कुड़वार, बल्दीराय, भदैयॉ, प्रतापपुर कमैचा, मोतिगरपुर को स्थान मिला है, जो गौरव की बात है। उन्होंने बताया कि कायाकल्प स्कोर के आधार पर चिकित्सा इकाईयों को पुरस्कार राशि प्रदान की गयी है-सीएचसी दूबेपुर का कायाकल्प स्कोर 93.29 है, जिसको पुरस्कार राशि 1.50 लाख रूपये, सीएचसी कुड़वार का कायाकल्प स्कोर 92.14 है, जिसको पुरस्कार राशि-1.25 लाख रूपये, सीएचसी बल्दीराय का कायाकल्प स्कोर 86.14 है, जिसको पुरस्कार राशि-01 लाख रूपये, सीएचसी भदैयॉ का कायाकल्प स्कोर 77.71 है, जिसको पुरस्कार राशि-01 लाख रूपये, सीएचसी पी0पी0 कमैचा का कायाकल्प स्कोर 73.71 है, जिसको पुरस्कार राशि-01 लाख रूपये व सीएचसी मोतिगरपुर का कायाकल्प स्कोर 72.43 है, जिसको पुरस्कार राशि- 01 लाख रूपये की राशि प्रदान की गयी है।उन्होंने बताया कि अर्ह चिकित्सा इकाईयों को नियमानुसार प्रावधानित धनराशि का 75 प्रतिशत इकाई के चिन्हित गैप क्लोजर सुदृढ़ीकरण रख-रखाव व्यवस्था इत्यादि सुनिश्चित किये जाने हेतु उपयोगिता की जाये, जिससे चिकित्सालय के एन0क्यू0ए0एस0ध्कायाकल्प स्कोर में वृद्धि हो सके। कायाकल्प आवार्ड स्कीम के अन्तर्गत आवार्ड धनराशि के 25 प्रतिशत धनराशि जो अधिकारियोंध्कर्मचारियों को इंसेन्टिव धनराशि उत्साहवर्धन हेतु दिये जाने का प्रावधान है।

किसानों से संपर्क कर गेहूं खरीद बढ़ायें

संवाददाता, जौनपुर। जिलाधिकारी अनुज कुमार झा के द्वारा राजकीय गेहूं क्रय केंद्र सिकरारा का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान केंद्र प्रभारी सिकरारा के द्वारा बताया गया कि आज 01 किसान से कुल 35 कुंटल 50 किलो गेहूं की खरीद की गई है जिस पर जिलाधिकारी के द्वारा निर्देशित किया गया कि किसानों से संपर्क कर गेहूं खरीद बढ़ाई जाए और समय से भुगतान हो जाये। मौके पर पर्याप्त संख्या में बोरा उपलब्ध मिला। जिलाधिकारी ने इलेक्ट्रिक कांटे की तौल कराकर जाँच की। उन्होंने केंद्र प्रभारी को निर्देशित किया कि किसानों को बैठने की उचित व्यवस्था रहे और गर्मी के मौसम को देखते हुए पेयजल की समुचित व्यवस्था रहे। जिलाधिकारी ने निर्देशित किया कि क्रय केंद्र पर किसानों को किसी भी प्रकार की समस्या न हो।

छात्र करेगा संसद में विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व

संवाददाता, जौनपुर। वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय के प्रबंध अध्ययन संकाय में गुरुवार को गुरु रविन्द्र नाथ टैगोर के जीवन दर्शन एवं योगदान विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस मौके पर छात्र अधिष्ठाता प्रोफेसर अजय द्विवेदी ने कहा कि विद्यार्थियों के लिए जीतने से अधिक प्रतिभाग करना आवश्यक है। प्रतिभाग करने से वह कुछ ना कुछ जरूर सीखेंगे। डॉ. सुशील सिंह ने कहा कि प्रतियोगिता बड़ी एवं छोटी नही होती। इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर उद्देश्य सिंह, द्वितीय स्थान पर अभिनव कीर्ति पांडेय और तृतीय स्थान पर अमन कुमार रहें। इस प्रतियोगिता में प्रथम आने वाला प्रतिभागी 7 मई को राष्ट्रीय स्तर पर संसद में आयोजित कार्यक्रम में प्रतिभाग करेगा। निर्णायक मंडल में सुशील कुमार, डॉ. आशुतोष एवं डॉ. राजीव रहें। प्रतियोगिता का संचालन डॉ. अबू सलेह ने किया।

बेटे की पिटाई का आरोप

संवाददाता, ऊँचाहार, रायबरेली। कल्यान पुर अड्डा मजरे डेलौली निवासी रोहित लाल का आरोप है कि बृहस्पतिवार को उसका 11 वर्षीय बेटा सुजीत कुमार गांव के पास खेतों में भैंस चराने गया हुआ था। तभी पड़ोसी गांव झालाबाग निवासी एक युवक ने खेत में खड़ी हुई बल्ली चोरी करने का आरोप लगाते हुए उसकी थप्पड़ों से पिटाई कर दी। और फोन कर उसके साथ भी गाली गलौज करते हुए धमकी दी गई है। कोतवाल बालेंदु गौतम ने बताया कि मामला संज्ञान में आया है। जांच करा कर आवश्यक कार्यवाही की जाएगी।

धोखाधड़ी करने का आरोप

संवाददाता, ऊँचाहार, रायबरेली। सवैयाधनी गाँव की रहने वाली युवती ने क्षेत्र के ही युवक पर धोखाधड़ी करने का आरोप लगाते हुए कोतवाली में मामले की तहरीर दी है। गाँव निवासी गीतांजलि का कहना है कि चार वर्ष पूर्व पुरबारा गाँव निवासी युवक ने उससे 7 हजार रुपये लिये कि किसी कम्पनी में पैसे लगाकर तुमको मुनाफा दिलाऊंगा , लेकिन इतना समय बीतने के बाद न ही पैसा मिला और न ही किसी कम्पनी के बारे मे उसे जानकारी हो पाई। गुरुवार को पीड़िता ने कोतवाली में मामले की तहरीर दी है। इस बाबत कोतवाल बालेन्दु गौतम का कहना है कि तहरीर मिली है जांच कराकर आवश्यक कार्यवाही की जायेगी।

नाबालिग को बहला फुसलाकर भगा ले जाने का मामला दर्ज

संवाददाता, ऊँचाहार, रायबरेली। कोतवाली क्षेत्र के एक गांव निवासी व्यक्ति ने अपनी नाबालिग बेटी को भगा ले जाने का मुकदमा एक युवक के विरुद्ध दर्ज कराया है। गाँव निवासी व्यक्ति का कहना है कि एक सप्ताह पूर्व पड़ोसी गाँव का युवक उसकी नाबालिग बेटी को बहला फुसलाकर भगा ले गया है, गुरुवार को पीड़ित ने कोतवाली पहुंचकर आरोपी युवक जय सिंह निवासी सरायं भान के विरुद्ध केस दर्ज कराया है। इस बाबत कोतवाल बालेन्दु गौतम ने बताया कि किशोरी के पिता की तहरीर पर केस दर्ज कर आवश्यक कार्यवाही की जा रही है

मोटर साइकिल सवार दम्पत्ति को ट्रक ने पीछे से मारी टक्कर, गंभीर रूप से घायल

संवाददाता, महराजगंज, रायबरेली। भतीजे के मुंडन संस्कार की खरीददारी करने जा रहे मोटर साइकिल सवार पति पत्नी को ट्रक ने पीछे से टक्कर मार दी जिससे पति पत्नी व पुत्र गंभीर रूप से घायल हो गये। घायलों को सीएचसी लाया गया जहां महिला की हालत गंभीर देखते हुए जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया है, मौके से ट्रक ड्राइवर फरार हो गया । घटना पूरे पंडित मजरे कैर गांव के पास की है। घर में भतीजे के मुंडन संस्कार की तैयारियां कर रहे अशोक कुमार (26)पुत्र ललई पत्नी सावित्री(23) व चार वर्षीय पुत्र अहम को लेकर मोटरसाइकिल से महराजगंज बाजार खरीदारी करने आ रहे था तभी पूरे पंडित मोड़ के पास पीछे से आ रहे ट्रक ने जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर के बाद ट्रक चालक मौके से फरार हो गया । ग्रामीणों की मदद से घायलों को एंबुलेंस द्वारा सीएचसी लाया गया जहां चिकित्सको ने सावित्री की हालत को गंभीर देखते हुए जिला अस्पताल रेफर कर दिया। मौके पर पहुंची पुलिस ने ट्रक को कब्जे में ले लिया है।

विधायक निधि से लगाई गई हाई मास्ट लाइटों के गायब हो जाने के बाद अब क्षेत्र में बढ़ी भैंस चोरी की घटनाएं

संवाददाता, बल्दीराय,सुल्तानपुर। विधायक निधि से लगी हाई मास्ट लाइट गायब होने के बाद बल्दीराय थाना क्षेत्र में भैंस चोरी की घटनाएं भी बढ़ गयी हैं। पीड़ित फरियादी की शिकायत को एसपी ने संज्ञान लिया है। पखवारे भर बाद भी लगभग दो लाख कीमत की विधायक ताहिर खां की निधि से लगी हाई मास्ट लाइट खोजने में पुलिस को अभी तक सफलता नहीं मिली है।एस पी ने बल्दीराय थाना अध्यक्ष को मुकदमा दर्ज कर भैंस खोजने का आदेश दिया है। एसपी सोमेन वर्मा बोले, हाई मास्ट लाइट चोरी में कोई ठोस सुराग अभी नही लगा है,जांच पड़ताल जारी है।

लूट की घटना को अंजाम देने वाले युवक को पुलिस ने किया गिरफ्तार

संवाददाता

कानपुर। श्रीमान् पुलिस पुलिस आयुक्त के दिशा निर्देश अनुसार अपराधियों के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत खाना बाबू पुरवा पुलिस ने लूट में शामिल युवक को किया गिरफ्तार प्रभारी निरीक्षक बाबूपुरवा प्रद्युम्न कुमार सिंह के कुशल नेतृत्व में उ0नि0 दिनेश कुमार पाण्डेय मय हमराह हे0का01324 मनोज कुमार व का) 1881 रणपाल चौकी क्षेत्र में मामूर थे। थाना हाजा पर पंजीकृत मु0अ0सं0 99/2023 धारा 392 भादवि0 में माल मुल्जिमान के सफल अनावरण हेतु बाउम्मीद माल व मुल्जिमान की तलाश बरामदगी हेतु थाना क्षेत्र मामूर होकर शनि देव मंदिर बगाही पर पहुंचा तो जरिये मुखबिर खास सूचना के आधार पर चेतना शर्मा पार्क के पास प्रकाश में मुल्जिम नफीस उर्फ कल्लू पुत्र स्व0 नसीर अहमद नि 130/172 बगाही थाना बाबूपुरवा कानपुर नगर उम्र 33 वर्ष को गिरफ्तार कर नियमानुसार कार्यवाही करते हुए ऽ हिरासत पुलिस में लिया गया। अभियुक्त नफीस उर्फकल्लू को मा0 न्यायालय के समक्ष पेश किया जा रहा है।

पुलिस आयुक्त ने किया नवनिर्मित यातायात टीपी लाइन का उद्घाटन

संवाददाता

कानपुर। पुलिस आयुक्त व संयुक्त पुलिस आयुक्त महोदय द्वारा पुलिस उपायुक्त यातायात कार्यालय निकट टीपी लाइन का उद्घाटन किया गया। डीसीपी यातायात, एडीसीपी यातायात मृगांक शेखर पाठक व एसीपी यातायात शिवा सिंह उपस्थित रहे। इस मौके पर पुलिस आयुक्त महोदय ने यातायात पुलिस टीम द्वारा किये गये उत्कृष्ट कार्य की सराहना करते हुए 21 पुलिस कर्मियों को प्रशस्तिपत्र वितरित किये। कानपुर शहर की यातायात व्यवस्था को और सहज व सरल बनाने के लिए डीसीपी ट्रैफिक श्रीमती रवीना त्यागी के निकट पर्यवेक्षण में किये गये सराहनीय कार्य की पुलिस आयुक्त महोदय द्वारा सभी की प्रशंसा की गयी। पुलिस आयुक्त ने कानपुर वासियों के सहयोग के लिए भी आभार व्यक्त किया।'

अतीक की बहन नूरी व हनीफ मामले की सुनवाई टली

संवाददाता, प्रयागराज। राजूपाल हत्याकाण्ड के गवाह रहे उमेश पाल के हत्यारे गुड्डू मुस्लिम को पनाह देने के मामले में माफिया अतीक अहमद की बहन आयशा नूरी की सरेंडर याचिका पर होने वाली सुनवाई बुधवार को टल गयी। अब अगली सुनवाई 30 तारीख तय की गयी है। बताया जा रहा है कि पुलिस ने रिपोर्ट नहीं पेश किया। जिसके चलते सुनवाई टल गई। इसी प्रकार से अतीक अहमद के वकील खान शौकत हनीफकी रिमांड मामले में भी सुनवाई टल गई। पुलिस द्वारा रिमांड नोटिस पेश किया गया था। इस मामले की अगली सुनवाई 27 अप्रैल तय की गयी है। अतीक के अधिवक्ता को पुलिस अपने रिमांड में लेकर हत्याकाण्ड से सम्बन्धित मामलों की पूछतांछ करना चाहती है। ज्ञात हो कि उमेश पाल हत्याकांड एवं अपहरण कांड में खान शौकत हनीफको आजीवन कारावास की सजा मिली है।

उड़ाका दलों ने पांच नकलची पकड़े

संवाददाता, प्रयागराज। प्रो.राजेंद्र सिंह (रज्जू भय्या) विश्वविद्यालय की वार्षिक परीक्षा सत्र 2022-23 की परीक्षा प्रयागराज, कौशाम्बी, फ्तेहपुर, प्रतापगढ़ जिले के 178 परीक्षा केन्द्रों दो पालियों में नकलवीहिन एवं शुचितापूर्ण सम्पन्न करायी गयी।कुलपति द्वारा महाविद्यालयों को परीक्षा के दौरान नकलविहीन परीक्षा कराने हेतु आदेशित किया। उडाका दलों ने परीक्षा केन्द्रों का औचक निरीक्षण के साथ साथ विश्वविद्यालय के परिसर में स्थापित हाईटेक नियंत्रण कक्ष से भी चारों जनपदों के परीक्षा केन्द्रों पर निरन्तर नजर रखी जा रही है। इस दौरान कुलपति द्वारा निरीक्षण एवं मार्गदर्शन किया जा रहा है। प्रयागराज, कौशाम्बी, फ्तेहपुर, प्रतापगढ़ में कुल 30076 (प्रथम पाली छात्र-6398/छात्राए-9474 एवं द्वितीय पाली छात्र-9245/छात्राए-4959) परीक्षार्थी परीक्षा में सम्मलित हुये। जिसमें 211 परीक्षार्थीयों अनुपस्थित रहें एवं 05 छात्रों को उडाका दलों द्वारा अनुचित साधन प्रयोग करते हुए पकड़ा गया।

असोडा के ग्राम सचिव ने पंचायत सदस्य के साथ की अभद्रता

संवाददाता, जनपद हापुड़ देहात थाना क्षेत्र के ग्राम असोडा में ग्राम सचिव के द्वारा ग्राम पंचायत सदस्य देवेंद्र के साथ अभद्रता करने को लेकर ग्राम असोडा के ग्रामीणों ने डीएम कार्यालय पहुंचे ग्रामीणों ने ग्राम सचिव के खिलाफजिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक को ज्ञापन सौंपा कर ग्राम सचिव पर सख्त से सख्त कार्यवाही करने की गुहार लगाई वही ग्राम पंचायत सदस्य देवेंद्र ने जानकारी देते हुए बताया कि मैंने ग्राम सचिव को गांव में सफाई ना होने की वजह से फोन किया था मैंने उनको फोन पर अवगत कराना चाहा कि गांव में सफाई ना होने की वजह से बहुत ज्यादा गंदगी फैली पड़ी है जिस कारण ग्राम में बीमारियां फैलने का खतरा बढ़ रहा है इतना कहने पर ग्राम सचिव आग बबूला हो गए और कहने लगे क्या तूने पूरे गांव का ठेका ले रखा है और अभद्र भाषा का प्रयोग किया जिससे ग्रामीणों में आक्रोश है ।

बसपा प्रत्याशी ने क्षेत्र की तस्वीर बदलने के लिए जनता से मांगे 5 वर्ष

संवाददाता

उन्नाव। बसपा से नगरपालिका परिषद उन्नाव की प्रत्याशी अनीता विमल द्विवेदी अपने सैकड़ो समर्थकों के साथ लगातार अलग-2 वार्डो में लोगों से घर-2 जाकर मिलकर आशीर्वाद मांग रही हैं।साथ ही उन्होंने कहा पालिका में व्याप्त भ्रष्टाचार के कारण आमजन जलभराव ,गंदगी,गड्ढा युक्त सड़के,जलापूर्ति न हो पाना जैसी मूलभूत समस्याओं से वंचित है।उन्होंने कहा उन्नाव की तस्वीर निश्चित तौर पर बदलेगी अगर हमें जनता अपना आशीर्वाद प्रदान करती है। तो उन्नाव की तस्वीर हम 5 साल में बदलकर दिखा देंगे और हम लगातार जनता के बीच रहकर काम करने वाले लोग है।इस पर जनता उन्हें हाथों हाथ ले रही है व उनके पति वरिष्ठ समाजसेवी विमल द्विवेदी की साफ सुथरी लोकप्रिय छवि व उनके द्वारा किये गए विभिन्न वार्डो में जलभराव जैसी समस्याओं के समय अपने निजी संसाधनों से पानी निकलवाना,कोरोना काल मे नर सेवा नारायण सेवा के माध्यम से हजारों गरीबो वंचितों को भोजन,राशन आदि उपलब्ध करवाना समाज हित के कार्यों में शामिल रहने की खूब तारीफ कर रही हैं। प्रत्याशी अनीता विमल द्विवेदी ने बताया जुराखन खेड़ा ,लोक नगर, हनुमान नगर, दरियाई खेड़ा आदि मोहल्लों में जनसंपर्क के दौरान लोगों ने काफी उत्साह दिखाया व भारी संख्या में उनके पक्ष में मतदान करने की बात कही है।

मजदूर की बेटी ने हाईस्कूल में 81 प्रतिशत से प्रथम स्थान प्राप्त कर किया विद्यालय,गाँव व अपने परिवार का नाम रोशन

संवाददाता, हापुड़। हापुड़ के बुलंदशहर रोड पर स्थित गांव अमरपुरा निवासी मुकेश कुमार की पुत्री ने हाईस्कूल में 81 से प्रथम स्थान कर अपने गांव में परिवार का नाम कर स्कूल का नाम भी रोशन किया है आपको बता दें कि कम उम्र में पिता का साया उठने के बाद मुकेश कुमार ने 15 साल की उम्र हाईस्कूल की कक्षा छोड़ मेहनत मजदूरी कर अपनी माताजी,एक बड़ी बहन व छोटे भाई का पालन पोषण करते आ रहे थे पिछले 15 सालों में बहन व भाई का विवाह होने के बाद और अपनी शादी करने के बाद अपनी माता जी के साथ-साथ अपने परिवार का पालन पोषण करते हैं और उनकी सबसे बड़ी पुत्री प्राची रामस्वरूप जूनियर हाई स्कूल कोठी गेट मे पड़ती है जहां प्राची ने प्रथम प्रयास में ही हाईस्कूल यूपी बोर्ड में 81 से प्रथम स्थान प्राप्त कर अपने स्कूल के साथ-साथ गांव अमरपुरा व परिवार का नाम रोशन किया है जो गांव में चर्चा का विषय बना हुआ है ।

नगर निकाय चुनाव को लेकर कांग्रेस पार्टी की बैठक आयोजित

संवाददाता, हापुड़। हापुड नगर पालिका परिषद कांग्रेस से चेयरमैन पद की प्रत्याशी को लेकर कांग्रेस पार्टी शहर अध्यक्ष अभिषेक गोयल ने नगर निकाय चुनाव को लेकर दिल्ली रोड पर स्थित अग्रसेन भवन में बुधवार को बैठक आयोजित की जिसमें पूर्व मंत्री रहे स्वर्गीय धर्मपाल सिंह की पुत्री कांग्रेस प्रत्याशी मानवी सिंह वर्मा उपस्थित हुई सभी कांग्रेश पार्टी के कार्यकर्ताओं के पदाधिकारियों ने फूल ममाला व कांग्रेस का पटका पहना कर मानवी सिंह वर्मा का स्वागत किया और कांग्रेस पार्टी के सिंबल पर चुनाव लड़ रहे सभासद पद के प्रत्याशियों को भी पार्टी का फटका पहना कर सम्मानित किया गया वही पार्टी के पदाधिकारी व कार्यकर्ता, सभासद गण व प्रत्याशीयों ने अपनी जीत का दावा किया और चेयरमैन पद की प्रत्याशी मानवी सिंह ने मीडिया से बात करते हुए बताया कि मैं स्वर्गीय धर्मपाल सिंह की पुत्री हूं मेरे पिताजी ने जो नगर पालिका चेयरमैन बनकर अपने क्षेत्र में कार्यकाल के दौरान विकास कार्य कर चौमुखी तक पहुंचाया था और अब बीजेपी कार्यकाल में जो उनके अधूरे कार्य रह गए हैं उनको मैं चेयरमैन बनने के बाद पूरा करने का प्रयास करूंगी और अपने पिता के सपनों को साकार कर खरी उतरूंगी वहीं दूसरी ओर बैठक के दौरान मुख्य मंच पर बैठे विराजमान पदाधिकारियों के पैरों तले कांग्रेस पार्टी के झंडे और पार्टी के पटके कूड़ेदान में देखने को मिले।

सदर विधायक ने वार्ड 6 प्रत्याशी के कार्यालय का किया उद्घाटन

प्रत्याशी रोहित को भारी मतों से जिताने की अपील

संवाददाता

शुक्लागंज, उन्नाव। सदर विधायक पंकज गुप्ता व गोल्डी गुप्ता ने मोहल्ला गांधीनगर वार्ड नंबर (6) प्रत्यासी रोहित कटारिया के चुनाव कार्यालय का फीता काट कर उद्घाटन किया। कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के कर्मठ व ईमानदार कार्यकर्त्ताओं की मेहनत से भाजपा पुन: नगर पालिका अध्यक्ष व नगर के 28 वार्डो के प्रत्यासियों को जानता अपना वोट देकर विजयी बनाएगी। इसके बाद वार्ड 6 में मतदाताओं से प्रत्याशी रोहित कटारिया के समर्थन में मतदान करने की अपील करी। जिसके बाद वह अपने गंतव्य को रवाना हुए। इस दौरान पार्टी कार्यालय में प्रत्याशी रोहित ने कार्यकर्ताओं व समर्थकों को भगवा गमछा डाल कर सम्मान कर उनका आशीर्वाद लिया और क्षेत्रवासियों से अपील की ज्यादा मतदान करके विजई बनाएं। इस अवसर पर सभी कार्यकर्ताओं ने पार्टी प्रत्याशी के पक्ष में घर-घर जाकर जनसंपर्क किया। इस मौके पर सोनू गुप्ता, धर्मेंद्र, अशोक निषाद, गुड्डू बाजपेई, बऊन, सुरेश गौतम, पप्पू तिवारी, सनी गुप्ता, आजाद गुप्ता, राजकुमार कुरील, हरिओम सैनी, सौरभ कटारिया, टिंकू, सुशील, सुशील तिवारी, पुनीत वर्मा, करन, दुर्गेश गुप्ता, अतुल पाण्डेय, शशांक, नीलू बाबा, रवि गुप्ता, विजय राज सिंह, गगन वर्मा, आजाद गुप्ता (नेता) अभिजित निषाद समेत अधिक संख्या में कार्यकर्ता व समर्थक मौजूद रहे।

फसल उत्पादन और किसानों की उत्पादकता बढ़ाने पर जोर,शुआट्स में सात दिवसीय प्लांट टिशू कल्चर पर कार्यशाला का उद्घाटन

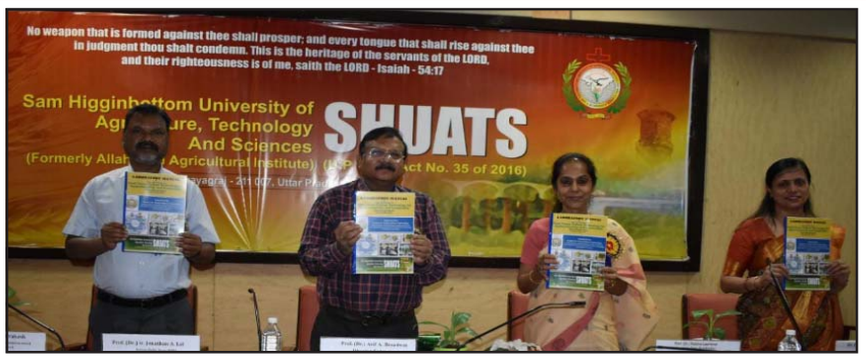

संवाददाता, प्रयागराज। शुआट्स में प्लांट टिश्यू कल्चर पर सात दिवसीय कार्यशाला का उद्घाटन बुधवार को हुआ। यह कार्यशाला सेन्टर आफटिश्यू कल्चर टेक्नोलॉजी द्वारा आयोजित की जा रही है। कार्यक्रम की शुरुआत डॉ. ईपेन पी. कोशी (कार्यशाला के सह-आयोजक सचिव) द्वारा प्रार्थना के साथ की गई।तत्पश्चात अतिथियों का स्वागत किया गया। डॉ. प्रगति शुक्ला (प्रमुख, सेंटर फॉर टिश्यू कल्चर टेक्नोलॉजी और कार्यशाला संयोजक) द्वारा कार्यशाला और सेंटर का संक्षिप्त विवरण दिया गया। प्रोफेसर (डॉ.) आरिफ ए. ब्रॉडवे, निदेशक विस्तार निदेशालय शुआट्स ने इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। उद्घाटन भाषण में उन्होंने प्रतिभागियों के करियर विकास में इस कार्यशाला के महत्व पर प्रकाश डाला और उन्हें फसल उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने में किसानों की मदद करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कार्यशाला की स्मारिका का विमोचन भी किया। कार्यशाला के आयोजन सचिव डॉ. गुरुदयाल राम गुरु ने धन्यवाद ज्ञापित किया। विशेषज्ञों द्वारा टिशू कल्चर की विभिन्न तकनीकों पर प्रशिक्षण की सुविधा के लिए कार्यशाला के लिए सीमित संख्या में प्रतिभागियों को पंजीकृत किया गया। प्रो. डॉ.रुबीना लॉरेंस (एसोसिएट डीन- अकादमिक और प्रमुख, आणविक और सेलुलर इंजीनियरिंग विभाग और औद्योगिक सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग), प्रो. डॉ. वीरू प्रकाश, (एसोसिएट डीन- प्रशासन और प्रमुख, जैव रसायन विभाग और बायोकेमिकल इंजीनियरिंग), प्रो. डॉ. जॉर्ज थॉमस, डॉ. राजीव कांत (हेड, कम्प्यूटेशनल बायोलॉजी एंड बायोइनफॉरमैटिक्स) और अन्य स्टाफ उपस्थित रहे।

सरल विधा में लिखी जाए स्व अध्ययन सामग्री : प्रोफेसर आशुतोष

मुविवि में दूरस्थ शिक्षा एवं स्व-अध्ययन सामग्री विकास पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

संवाददाता

प्रयागराज। स्व अध्ययन सामग्री दूरस्थ शिक्षा का अभिन्न अंग है। दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में छात्रों के सामने शिक्षक नहीं होते। पाठ्य सामग्री ही छात्रों के सामने शिक्षक के रूप में होती है। ऐसी स्थिति में स्व अध्ययन सामग्री को सरल विधा में लिखा जाना चाहिए जिससे वह शिक्षार्थियों के समझ में आ सके और उनका ज्ञानार्जन कर सके। उक्त उद्गार प्रोफेसर आशुतोष गुप्ता निदेशक विज्ञान विद्या शाखा एवं निदेशक आंतरिक गुणवत्ता सुनिश्चियन केंद्र सीका ने मुक्त विश्वविद्यालय के विभिन्न विद्याशाखाओं में नवनियुक्त सहायक आचार्यों (संविदा) को स्व-अध्ययन सामग्री के लेखन कार्य के सम्बन्ध में बुधवार को दूरस्थ शिक्षा एवं स्व-अध्ययन सामग्री विकास विषय पर आयोजित एकदिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में व्यक्त किए। प्रोफेसर गुप्ता ने कहा कि पाठ्य सामग्री लेखन का कार्य अपने विषय में दक्ष शिक्षक ही कर सकते हैं। उन्होंने कुलपति प्रोफेसर सीमा सिंह के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उनके निर्देशन में सभी नवनियुक्त शिक्षकों को लेखन सामग्री निर्माण में अपनी प्रतिभा एवं क्षमता विकसित करने का सुअवसर प्राप्त हो रहा है। इस अवसर पर प्रोफेसर गुप्ता ने दूरस्थ शिक्षा पद्धति में अध्ययनरत छात्रों को प्रदान की जाने वाली अध्ययन सामग्री की अवधारणा, उपभोग तथा महत्व को विस्तार से रेखांकित किया। आन्तरिक गुणवत्ता सुनिश्चियन केन्द्र के तत्वावधान में लोकमान्य तिलक शास्त्रार्थ सभागार में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में विचार व्यक्त करते हुए प्रोफेसर एस कुमार निदेशक समाज विज्ञान विद्या शाखा एवं उप निदेशक आंतरिक गुणवत्ता सुनिश्चियन केंद्र ने कहा कि पाठ्य सामग्री ही एक ऐसा माध्यम है जिसमें छात्र दूर होते हुए भी हमारे पास रहता है। प्रशिक्षण के द्वितीय सत्र में डॉ. देवेश रंजन त्रिपाठी, सह आचार्य, व्यवसाय प्रबंधन ने स्व-अध्ययन सामग्री विकास के विभिन्न चरणों को क्रमश: पीपीटी के माध्यम से प्रदर्शित कर नव नियुक्त सहायक आचार्यों की जिज्ञासाओं का समाधान किया तथा उपस्थित सहायक आचार्यों को क्रमश: 8 समूह में रखकर इकाई विकसित करने का अभ्यास कराया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन डॉ. गौरव संकल्प ने किया।

कायस्थ समाज सदैव राष्ट्रवाद के साथ खड़ा है : सिद्धार्थ नाथ

कायस्थ समाज ने सदैव राष्ट्रवाद और भारतीय संस्कृति के लिए जीता रहा है : गणेश केसरवानी

संवाददाता

प्रयागराज। कांग्रेस द्वारा वामपंथियों के हाथ में इतिहास गिरवी रख देने के चलते हमें भारतीय होने पर कभी गर्व करना नहीं सिखाया बल्कि बताया की हम हमेशा विदेशी ताकतों से परास्त होते रहे हैं। आज मोदी जी देश को सच्चा इतिहास बताने के साथ हमारी धरोहरों को पुनर्स्थापित भी कर रहे हैं यह बातें उत्तर प्रदेश सरकार के पूर्व कैबिनेट मंत्री और शहर पश्चिमी विधायक सिद्धार्थ नाथ सिंह ने शिव वाटिका में प्रबुद्ध जन सम्मेलन में महापौर प्रत्याशी गणेश केसरवानी के समर्थन में जनसभा को संबोधित करते हुए कही। सिंह ने कहा कायस्थ समाज में हमेशा चेतना रही है कायस्थ राष्ट्रवाद के साथ सदैव खड़ा रहा है कभी भी किसी को गलतफहमी नहीं रहा है।कायस्थ समाज भारतीय जनता पार्टी को बहुत प्यार करते हैं और हमेशा कमल के फूल के साथ खड़े रहे हैं।आगे कहा कि 2025 का महाकुंभ मेला 2019 कुंभ मेला से बहुत बेहतर होगा।

यह तभी संभव हो रहा है जब मोदी और योगी के हाथों में कमान है प्रयागराज में अपना महापौर होगा तो 2025 का महाकुंभ दिव्यता और भव्यता बढ़ जाएगी। कांग्रेस द्वारा वामपंथियों के हाथ में इतिहास गिरवी रख देने के चलते हमें भारतीय होने पर कभी गर्व करना नहीं सिखाया बल्कि बताया की हम हमेशा विदेशी ताकतों से परास्त होते रहे हैं।महमूद गजनबी को राजा सुहेलदेव पासी ने पराजित किया था।जो इतिहास के पन्ने में नहीं दर्ज हुआ। आज मोदी जी देश को सच्चा इतिहास बताने के साथ हमारी धरोहरों को पुनर्स्थापित भी कर रहे हैं। महानगर अध्यक्ष व महापौर प्रत्याशी गणेश केसरवानी ने कहा प्रयागराज की अस्मिता और पहचान को सदैव आगे बढ़ाने में अपना योगदान देता रहूंगा।कायस्थ समाज ने सदैव राष्ट्रवाद और भारतीय संस्कृति के लिए जीता रहा है।इस मौके पर एमएलसी डॉ.के पी श्रीवास्तव, चौधरी राधवेंद्र नाथ सिंह, डॉ. सुशील सिन्हा, श्रीकुमार नारायण आदि ने भी संबोधित किया तथा रजनीकांत श्रीवास्तव,पवन श्रीवास्तव, अनिल श्रीवास्तव, अखिलेश श्रीवास्तव, अरुण श्रीवास्तव चकिया,संजय श्रीवास्तव आदि उपस्थित रहे।

सऊदी अरब ने सूडान में फंसे भारतीयों सहित 150 से ज्यादा लोगों को सुरक्षित निकाला

एजेंसी, खार्तूम । अफ्रीकी देश में सुडान में खूनी संघर्ष दूसरे हफ्ते भी जारी है। देश के ज्यादातर हवाई हड्डे रणक्षेत्र में तब्दील हो गए हैं और राजधानी खार्तूम के बाहर गतिविधियां खतरनाक साबित हुई हैं। इस बीच सऊदी अरब ने सुडान में फंसे अपने नागरिकों और राजनयिकों के साथ भारत समेत अन्य देशों के फंसे 150 से ज्यादा लोगों निकाला है। सूडानी सेना ने शनिवार को कहा कि देश के मुख्य हवाई अड्डे सहित राजधानी खार्तूम में संघर्ष जारी रहने के बीच वह अमेरिका, ब्रिटेन, चीन और फ्रांस के राजनयिकों को सैन्य विमानों के जरिये सूडान से बाहर निकालने के प्रयास कर रहा है। सूडानी थलसेना ने कहा कि उसके प्रमुख जनरल अब्दुल फत्ताह बुरहान ने विभिन्न देशों के नेताओं से बात की, जिन्होंने अपने नागरिकों एवं राजनयिकों की सुरक्षित निकासी का अनुरोध किया। सेना ने कहा, 'बुरहान विभिन्न देशों के लिए इस तरह की सुरक्षित निकासी में आवश्यक मदद करने को सहमत हुए हैं।' सूडान का मुख्य अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा बंद हो जाने और लाखों लोगों के घरों के अंदर ही रहने के बीच ये सवाल उठ रहे हैं कि विदेशी नागरिकों की बड़े पैमाने पर निकासी कैसे की जाएगी। खार्तूम और इसके आसपास के इलाकों में सूडानी सेना और एक शक्तिशाली अर्द्धसैनिक समूह के बीच झड़पें होने के कारण विभिन्न देशों को अपने नागरिकों को स्वदेश ले जाने के लिए मशक्कत करनी पड़ रही है, क्योंकि निकासी का काम बहुत जोखिम भरा हो गया है। राजधानी खार्तूम के बीचोंबीच स्थित मुख्य हवाई अड्डा बंद है, ऐसे में विभिन्न देशों ने अपने-अपने नागरिकों को तब तक सुरक्षित स्थानों पर शरण लेने को कहा है, जब तक कि वे उनकी निकासी की योजनाएं तैयार नहीं कर लेते हैं। रैपिड सपोर्ट फोर्सेज नाम के अर्द्धसैनिक समूह ने हवाई अड्डा पर कब्जा करने की कोशिश के तहत भारी गोलाबारी की। बुरहान ने कहा कि सऊदी अरब के राजनयिकों को लाल सागर में स्थित सूडान के मुख्य बंदरगाह पोर्ट सूडान से निकाला जा चुका है और उन्हें स्वदेश भेज दिया गया है।

ब्रिटेन के स्कूलों में हिंदू छात्रों का उडाया जाता मजाक

धर्म परिवर्तन का डाला जा रहा दबाव

एजेंसी, लंदन। ब्रिटेन के स्कूलों में हिंदू छात्र गंभीर नस्लवाद का सामना कर रहे हैं। ये चौंकाने वाला खुलासा लंदन के थिंक टैंक की रिपोर्ट में हुआ है। इस रिपोर्ट में ब्रिटेन के कुछ स्कूलों में हिंदू छात्रों पर जुल्म की दास्तां बयां की गई है। रिपोर्ट ने खुलासा किया कि ब्रिटिश स्कूलों में हिंदू विरोधी गालियां आम हैं। इन स्कूलों में देवताओं की पूजा करने वाले हिंदू बच्चों का मजाक बनाया जाता है और जाकिर नाइक के वीडियो को सुनने का दबाव बनाया जाता है। ब्रिटिश बच्चों द्वारा हिंदू छात्रों को 'पाकी' कहा जाता है और । भारत में जाति व्यवस्था और सामाजिक बुराइयों के लिए हिन्दुओं को दोषी ठहराया जाता है टाइम्स ऑफ इंडिया की रिपोर्ट के मुताबिक,लंदन स्थित हेनरी जैक्सन सोसाइटी की रिपोर्ट, जिसका शीर्षक

'एंटी-हिंदू हेट इन स्कूल्स' है, में बताया गया कि ब्रिटिश स्कूलों में हिंदू बच्चों को भारत में होने वाली घटनाओं या भारतीय राज्य के कार्यों के लिए उसी तरह जिम्मेदार ठहराया जा रहा है । शार्लोट लिटिलवुड द्वारा लिखी गई इस रिपोर्ट में 998 हिंदू माता-पिता का इंटरव्यू है। रिपोर्ट में कहा गया कि बच्चों के माता-पिता ने ब्रिटिश स्कूलों की काफी आलोचना की है। उनका कहना है कि ब्रिटिश स्कूलों में हिन्दू धर्म पर बहुत घटिया ज्ञान दिया गया है। रिपोर्ट में परिवार ने बताया था कि यहां पढ़ाई जाने वाली धार्मिक शिक्षा में हिन्दू धर्म का उपहास उडाया जाता है। परिवारों का कहना है कि 'भारत में 400 वर्षों से अधिक ब्रिटिश शासन के बावजूद, ब्रिटिश लोगों में हिंदू धर्म के ज्ञान की भारी कमी है। वे हमारे देवताओं को नहीं समझते हैं और इससे हमारे बच्चों को स्कूल में परेशानी होती है। एक अन्य परिवार ने कहा 'हिंदू बच्चों को शाकाहारी होने और उनकी धार्मिक प्रथाओं का भी मजाक उडाया जाता है।' रिपोर्ट में कहा गया है कि एक लडकी के हिंदू होने के कारण उस पर गोमांस फेंक दिया गया। एक अन्य परिवार ने बताया कि कुछ बच्चों ने मेरे बच्चों से कहा है कि वे जाकिर नाइक की वीडियो देखें और धर्मांतरण करें क्योंकि हिंदू धर्म का कोई मतलब नहीं है। दूसरे में एक ईसाई बच्चे ने एक हिंदू बच्चे से कहा 'यीशु तुम्हारे देवताओं को नरक में भेज देंगे।' कुछ हिंदू बच्चों ने बदमाशी के कारण स्कूल जाने से इनकार कर दिया। सर्वेक्षण किए गए हिंदू माता-पिता में से 51: ने बताया कि उनके बच्चे ने स्कूलों में हिंदू-विरोधी नफरत का अनुभव किया है। एक मुस्लिम ने एक हिंदू बच्चे से कहा कि अगर वे इस्लाम में परिवर्तित हो जाते हैं तो 'बदमाशी बंद हो जाएगी'। एक परिवार ने कहा 'मेरे बच्चे को कई मौकों पर विशेष रूप से भारत में पीएम मोदी के उदय के बाद और अनुच्छेद 370 को रद्द करने के बाद बदमाशी का सामना करना पडघ है।' वहां मुस्लिम बच्चे हिन्दू बच्चों से पूछते हैं कि 'आप लोग हमारी मस्जिद क्यों तोडते हैं, क्यों तुम लोग हम पर आक्रमण करते हो?'

देश के 121 हवाई अड्डों को 2025 तक कार्बन मुक्त करने का लक्ष्य : सिंधिया

एजेंसी, नयी दिल्ली । भारत के 25 हवाईअड्डे 100 प्रतिशत हरित ऊर्जा का उपयोग कर रहे, वहीं अन्य 121 हवाईअड्डे शून्य कार्बन उत्सर्जन के लक्ष्य को 2025 तक प्राप्त कर लेंगे। केंद्रीय नागर विमानन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने बृहस्पतिवार को यह कहा। सिंधिया ने दो दिवसीय 'यूरोपीय संघ-भारत विमानन शिखर सम्मेलन' को वर्चुअल माध्यम से संबोधित किया। कोरोना वायरस से संक्रमित होने की वजह से वह इस सम्मेलन में प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित नहीं हो सके। जलवायु परिवर्तन से निपटना भारत और यूरोपीय संघ (ईयू) के लिए एक साझा लक्ष्य है, इस पर जोर देते हुए सिंधिया ने कहा, ''उत्सर्जन में विमानन उद्योग की हिस्सेदारी पर कड़ी नजर है। विमानन उद्योग से कार्बन उत्सर्जन को कम करने और इसके असर को दूर करने के लिए हमने कई कदम उठाए हैं।''नागर विमानन मंत्री ने कहा, ''हम अपने हवाई अड्डों को 2024 तक हरित ऊर्जा का इस्तेमाल करने

और 2030 तक शून्य कार्बन उत्सर्जन के लक्ष्य को पाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। भारत के 25 हवाईअड्डे 100 प्रतिशत हरित ऊर्जा का उपयोग कर रहे, वहीं हमारा लक्ष्य है कि अन्य 121 हवाईअड्डे 2025 तक शून्य कार्बन उत्सर्जन के लक्ष्य को प्राप्त कर लें। यह शिखर सम्मेलन बृहस्पतिवार से शुरू हुआ है। इसमें यूरोपीय संघ और भारत के बीच हवाई परिवहन संबंध, दोनों क्षेत्रों में परस्पर साझा चुनौतियों और अवसरों पर बात होगी। इस सम्मेलन में ईयू और भारत के शीर्ष स्तर के नीति निर्माता, उद्योग के अधिकारी और हितधारक शामिल होंगे। सिंधिया ने कहा कि भारत ने देश में विमान विनिर्माण को बढ़ावा देने की खातिर नियामक माहौल को बेहतर किया है। उन्होंने यूरोपीय संघ के उद्योग जगत से अवसरों का लाभ उठाने और दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ते विमानन उद्योग का हिस्सा बनने का आह्वान किया।

चीन के लोगों को कोविड प्रतिबंधों से मुक्ति दिलवाने वालीं 2 महिलाएं 4 माह बाद जेल से रिहा

एजेंसी, बीजिंग। चीन में कोरोना प्रतिबंधों के खिलाफ प्रदर्शनों में शामिल होने वाली व लोगों को कोविड प्रतिबंधों से मुक्ति दिलवाने वालीं 2 चीनी महिलाओं को आज प्रशासन ने जेल से रिहा कर दिया। कोविड प्रतिबंधों को समाप्त करने का आह्वान करने के लगभग चार महीने की हिरासत के बाद दोनों को रिहा किया गया। दोनों ने राष्ट्रपति शी जिनपिंग के सत्ता में आने के एक दशक के सबसे बडे विरोध प्रदर्शन में अहम भूमिका निभाई थी, जिससे कोविड प्रतिबंधों को समाप्त करने में मदद मिली। दोनों महिलाओं के करीबी दोस्तों ने रायटर को बताया कि चीन के कई शहरों में नवंबर के अंत में यह प्रदर्शन शुरू हुआ था। सूत्रों ने रायटर को बताया कि उन्हें पुलिस द्वारा प्रदर्शन के कुछ दिनों के भीतर ही हिरासत में ले लिया गया था। ह्यूमन राइट्स वॉच ने बताया कि दोनों महिलाएं दिसंबर में हिरासत में लिए गए चार प्रदर्शनकारियों में शामिल थी और उन पर झगडा करने और हिंसा भडकाने का आरोप

लगाया गया था, जिसमें पांच साल तक की सजा हो सकती है। चीन के सुरक्षा मंत्रालय और बीजिंग सार्वजनिक सुरक्षा ब्यूरो ने मामले में अभी कई टिप्पणी या जवाब नहीं दिया। उन्होंने पहले हिरासत पर भी कोई टिप्पणी नहीं की थी। हिरासत में लिए जाने से कुछ समय पहले उनमें से एक महिला काओ ने मदद के लिए अपना एक वीडियो बनाया था। क्लिप को बाद में दोस्तों द्वारा जारी किया गया और व्यापक रूप से ऑनलाइन प्रसारित किया गया। जिसमें पुलिस द्वारा जबरन पकडने की बात कही गई थी। चीन में कोरोना पर सरकार की जीरो कोविड पॉलिसी समेत कई प्रतिबंधों के खिलाफ बडे स्तर पर विरोध प्रदर्शन किया गया था। देश भर में सैकडों लोग सडकों पर उतर आए थे और कई लोगों ने अपने असंतोष के प्रतीक के रूप में पोस्टर्स जलाए। इसके बाद पुलिस ने पूछताछ की और दर्जनों लोगों को हिरासत में लिया।

रिलायंस चालू तिमाही में एमजे क्षेत्र से प्राकृतिक गैस का उत्पादन शुरू करेगी

एजेंसी, नयी दिल्ली । रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड चालू तिमाही में केजी-डी6 ब्लॉक में अपनी सबसे गहरे पानी की खोज एमजे फील्ड से प्राकृतिक गैस का उत्पादन शुरू करेगी। कंपनी ने मार्च तिमाही के वित्तीय परिणाम के संबंध में एक निवेशक प्रस्तुती में यह जानकारी दी। आंध्र तट के करीब स्थित केजी-डी6 भारत का एकमात्र गहरे पानी का ब्लॉक है, जिसमें उत्पादन हो रहा है। इस ब्लॉक से जनवरी-मार्च तिमाही में औसतन दो करोड मानक घनमीटर प्रतिदिन का उत्पादन हुआ है। रिलायंस और उसकी सहयोगी बीपी अब एमजे गहरे पानी वाली परियोजनाओं से उत्पादन शुरू करने को तैयार हैं। इसके बाद देश के पूर्वी तट से गैस उत्पादन में उल्लेखीय बढोतरी होगी। कंपनी ने कहा, ''एमजे फील्ड से वित्त वर्ष 2023-24 की पहली तिमाही में उत्पादन शुरू होने की उम्मीद है।श्श् इस ब्लॉक से पहले दिसंबर तिमाही में उत्पादन शुरू करने की योजना थी, हालांकि इसमें देरी हुई। रिलायंस और बीपी तीन अलग-अलग परियोजनाओं के जरिए केजी-डी6 को विकसित करने के लिए लगभग पांच अरब डॉलर निवेश कर रही हैं।

अमेरिका में इंडियाना की झील में मिले दो लापता भारतीय छात्रों के शव

एजेंसी, न्यूयॉर्क । अमेरिका के इंडियाना की एक झील में तैरने के दौरान लापता हुए दो भारतीय छात्रों के शव बरामद कर लिए गए हैं। समाचार पत्र 'यूएसए टुडेश् ने बताया कि सिद्धांत शाह (19) और आर्यन वैद्य (20) गत 15 अप्रैल को अपने मित्रों के एक समूह के साथ इंडियानापोलिस शहर से लगभग 64 मील दक्षिण-पश्चिम में स्थित मोनरो झील में तैरने गए थे, लेकिन वे बाहर नहीं आए। दोनों इंडियाना विश्वविद्यालय के 'केली स्कूल ऑफ बिजनेसश् के छात्र थे। वे 15 अप्रैल से लापता थे। अधिकारियों ने बताया कि तलाश अभियान मौसम संबंधी खराब परिस्थितियोंके कारण बाधित हुआ, लेकिन दोनों के शव इस व्यापक अभियान के बाद 18 अप्रैल को बरामद कर लिए गए।

बीते वित्त वर्ष में देश का कच्चे इस्पात का उत्पादन 4 प्रतिशत बढकर 12.5 करोड टन पर

एजेंसी, नयी दिल्ली । देश का कच्चे इस्पात का उत्पादन बीते वित्त वर्ष (2022-23) में 4.18 प्रतिशत बढकर 12.53 करोड टन पर पहुंच गया। अनुसंधान कंपनी स्टीलमिंट ने यह जानकारी दी है। इससे पिछले वित्त वर्ष 2021-22 में देश में 12.02 करोड टन से अधिक कच्चे इस्पात का उत्पादन हुआ था। इस दौरान तैयार इस्पात का उत्पादन बढकर 12.12 करोड टन पर पहुंच गया। यह इससे पिछले वित्त वर्ष के उत्पादन 11.36 करोड टन से 6.77 प्रतिशत अधिक है। बीते वित्त वर्ष में घरेलू स्तर पर इस्पात की खपत 12.69 प्रतिशत बढकर 11.91 करोड टन पर पहुंच गई। 2021-22 में इस्पात की खपत 10.57 करोड टन रही थी। स्टीलमिंट के विश्लेषण में कहा गया है कि बुनियादी ढांचा गतिविधियां बढने की वजह से देश में इस्पात का उत्पादन और उपभोग बढा है। बीते वित्त वर्ष में इस्पात का निर्यात 50 प्रतिशत घटकर 67.2 लाख टन रह गया। एक साल पहले यह 1.34 करोड टन से अधिक रहा था। इस दौरान इस्पात का आयात 29 प्रतिशत बढकर 46.7 लाख टन से 60.2 लाख टन हो गया।

ईस्टर पर धमाकों से दहला श्रीलंका

11 भारतीयों समेत 270 लोगों की मौत...बरसी पर इकट्ठे हुए हजारों लोग

एजेंसी, कोलंबो। श्रीलंका में 2019 में ईस्टर के अवसर पर हुए बम धमाकों के पीड़ितों के लिए इंसाफ की मांग को लेकर यहां काले व सफेद कपड़े पहनकर हजारों लोगों ने प्रदर्शन किया। इस बम धमाके में 11 भारतीयों समेत करीब 270 लोगों की मौत हो गई थी। आईएसआईएस से जुड़े स्थानीय इस्लामी चरमपंथी समूह नेशनल तौहीद जमात से जुड़े नौ आत्मघाती हमलावरों ने 21 अप्रैल, 2019 को तीन कैथोलिक चर्चों और कई लग्जरी होटलों में सिलसिलेवार धमाकों को अंजाम दिया, जिसमें 270 से अधिक लोग मारे गए और 500 से अधिक घायल हुए थे। बम विस्फोटों से देश में एक राजनीतिक तूफान खड़ा हो गया था। तत्कालीन राष्ट्रपति मैत्रीपाला सिरिसेना और प्रधानमंत्री रानिल विक्रमसिंघे को पूर्व

खुफिया जानकारी उपलब्ध होने के बावजूद हमलों को रोकने में असमर्थता के लिए दोषी ठहराया गया था। बम हमलों की चौथी बरसी पर कैथोलिक पादरियों सहित हजारों लोग मौन विरोध के लिए कतार में खड़े थे। उन्होंने सरकार पर पीड़ितों को न्याय दिलाने के लिए पर्याप्त कदम नहीं उठाने का आरोप लगाया। काले और सफेद कपड़े पहने प्रदर्शनकारियों ने एक दूसरे का हाथ पकड़ मानव श्रृंखला बना रखी थी। स्थानीय समयानुसार सुबह पौने नौ बजे पीड़ितों के लिए दो मिनट का मौन रखा गया। विरोध प्रदर्शन में सबसे आगे रहे कार्डिनल मैलकम रंजीत के नेतृत्व में चर्च ने जांच एजेंसियों पर लीपा-पोती का आरोप लगाया। कार्डिनल ने कहा, राष्ट्रपति सिरिसेना और उनके प्रतिष्ठान की पूरी तरह जांच होनी चाहिए। उन्होंने सिरिसेना द्वारा जांच के लिए नियुक्त राष्ट्रपति समिति की सिफारिशों के पूर्ण कार्यान्वयन का आह्वान किया।

यस बैंक का शुद्ध मुनाफा चौथी तिमाही में 45 प्रतिशत घटकर 202 करोड रुपये पर

मुंबई। निजी क्षेत्र के यस बैंक ने शनिवार को बताया कि बीते वित्त वर्ष की मार्च तिमाही में उसका शुद्ध मुनाफा 45 प्रतिशत घटकर 202 करोड रुपये रह गया। बैंक ने शेयर बाजार को बताया कि वित्त वर्ष 2022-23 के दौरान उसका शुद्ध लाभ 32.7 प्रतिशत घटकर 717 करोड रुपये रहा। बैंक की मार्च तिमाही में शुद्ध ब्याज आय 15.4 प्रतिशत बढकर 2,105 करोड रुपये हो गई। शुद्ध ब्याज मार्जिन 0.30 प्रतिशत बढकर 2.8 प्रतिशत रहा। ऋण वृद्धि 12 प्रतिशत से अधिक रही। बैंक की कुल जमाओं में 10 प्रतिशत वृद्धि हुई। यस बैंक ने कहा कि कर्ज के लिए प्रावधान बढाने के चलते मार्च तिमाही और पूरे वित्त वर्ष के दौरान उसके मुनाफे पर असर पडा। बैंक के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) प्रशांत कुमार ने संवाददाताओं को बताया कि प्रावधानों के चलते नतीजे प्रभावित हुए हैं, लेकिन आने वाले वक्त में फंसे हुए कर्ज से बेहतर वसूली की उम्मीद है। समीक्षाधीन तिमाही में यस बैंक की शुद्ध ब्याज आय 15.4 प्रतिशत बढकर 2,105 करोड रुपये हो गई। गैर-ब्याज आय 22.8 प्रतिशत बढघ्कर 1,082 करोड रुपये रही। बैंक ने कहा कि यह लगातार दूसरा साल है, जब वह मुनाफा दर्ज करने में सफल रहा है।

शीर्ष छह शहरों में खाली कार्यालय स्थल का आंकडा 16.4 प्रतिशत पर स्थिर

एजेंसी, नयी दिल्ली । देश के छह प्रमुख शहरों में जनवरी-मार्च, 2023 तिमाही में खाली पडे कार्यालय स्थल का आंकडा 16.4 प्रतिशत पर स्थिर बना हुआ है। रियल एस्टेट परामर्श फर्म कॉलियर्स इंडिया ने यह जानकारी दी। फर्म ने बताया कि जहां दिल्ली-एनसीआर, पुणे और हैदराबाद में खाली कार्यालय स्थल में बढोतरी हुई, वहीं चेन्नई में इसमें तेज गिरावट देखी गई। आंकडों के अनुसार, मुंबई और बेंगलुरु में खाली पडे कार्यालय स्थलों का आंकडा स्थिर बना हुआ है। कॉलियर्स ने बताया कि अधिकांश बाजारों में नई आपूर्ति बडे पैमाने पर मांग के साथ चलती है, जिससे खाली स्थल स्थिर रहता है। कॉलियर्स इंडिया के कार्यालय सेवा के प्रबंध निदेशक पीयूष जैन ने कहा, ऐसे समय में जब कारोबारी आर्थिक अनिश्चितताओं के बीच पट्टे पर कार्यालय स्थल लेने के निर्णय में देरी कर रहे हैं, कार्यालय बाजार में 2023 की पहली तिमाही में स्थिरता के संकेत देखे गए और पिछली तिमाही की तुलना में यह 16.4 प्रतिशत पर बरकरार रहा। जैन ने खाली स्थल और किराये के स्तर को एक दायरे में रखकर मांग और आपूर्ति के एकसमान रूप से बढने की उम्मीद जताई।

एफपीआई ने अप्रैल में अबतक भारतीय शेयर बाजार में 8,643 करोड रुपए डाले

एजेंसी, नयी दिल्ली । विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) ने इस महीने अबतक भारतीय शेयर बाजारों में 8,643 करोड रुपए का निवेश किया है। विश्लेषकों ने कहा है कि मूल्यांकन उचित स्तर पर होने की वजह से एफ्पीआई भारतीय बाजार में पैसा लगा रहे हैं। इससे पहले मार्च में एफपीआई ने शेयरों में शुद्ध रूप से 7,936 करोड रुपए का निवेश किया था। इसमें से ज्यादातर निवेश अमेरिका की जीक्यूजी पार्टनर्स ने अडानी समूह की कंपनियों में किया था। एफ्पीआई ने चालू वित्त वर्ष की शुरुआत सकारात्मक रुख के साथ की है। डिपॉजिटरी के आंकडों के अनुसार, तीन अप्रैल से अबतक एफ्पीआई ने शेयरों में शुद्ध रूप से 8,643 करोड रुपए डाले हैं। मॉर्निंगस्टार इंडिया के एसोसिएट निदेशक-प्रबंधक शोध हिमांशु श्रीवास्तव ने कहा, ''एफ्पीआई प्रवाह की दृष्टि से भारत जैसी अर्थव्यवस्थाओं में स्थिति अनुकूल है। उन्होंने कहा कि इसके अलावा भारतीय शेयरों का मूल्यांकन अब उचित स्तर पर आ गया है, जिसकी वजह से एफ्पीआई लिवाली कर रहे हैं। समीक्षाधीन अवधि में एफपीआई ने शेयरों के अलावा ऋण या बॉन्ड बाजार में 778 करोड रुपए डाले हैं।

अमेरिकी अदालत ने तहव्वुर राणा की याचिका खारिज की

प्रत्यर्पण पर 30 दिन में फैसला होने की संभावना

वाशिंगटन। अमेरिका की एक अदालत ने 2008 के मुंबई आतंकवादी हमला मामले में वांछित पाकिस्तानी मूल के कनाडाई व्यापारी तहव्वुर राणा की अभियोजन पक्ष के साथ बैठक संबंधी एक याचिका (स्टेटस कॉन्फ्रेंस) यह कहते हुए खारिज कर दी कि अगले 30 दिन में उसे भारत को प्रत्यर्पित किये जाने पर फैसला आ जाने की उम्मीद है। लॉस एंजिलिस, कैलिफोर्निया के जिला न्यायालय की न्यायाधीश जैकलीन चूलजियान ने जून, 2021 में इस मुद्दे पर पिछली सुनवाई की थी और जुलाई 2021 में कागजातों का आखिरी सेट अदालत में सौंपा गया था। इस अदालत ने राणा को भारत को प्रत्यर्पित किये जाने के अमेरिकी सरकार के अनुरोध पर फैसला अभी सुनाया नहीं है। पिछले महीने अपने वकील के माध्यम से दायर याचिका में राणा (62) ने अनुरोध किया कि अदालत अभियोजन पक्ष और बचाव पक्ष को इस मामले पर तथा अपराध कबूल करने पर सजा कम करने संबंधी प्रावधान पर चर्चा करने की अनुमति दे।

उसके वकील ने कहा, ''इस मामले में पिछली अदालती बहस 21 जुलाई, 2021 को हुई थी। इतना समय बीत जाने और राणा के लगातार सलाखों के पीछे रहने के मद्देनजर इस अदालत और वकीलों के लिए इस मामले की वर्तमान स्थिति पर चर्चा करना उपयुक्त जान पडता है।'' उसके वकील ने सुझाव दिया कि 'स्टेटस कॉन्फ्रेंस' अदालत ने 17 अप्रैल को अपने एक आदेश में इस आवेदन को खारिज कर दिया। अदालत के आदेश में कहा गया है, '' याचिका में जो यह अनुरोध किया गया है कि अदालत संबंधित पक्षों को इस मामले की नवीनतम स्थिति से अवगत कराता रहे, वह मंजूर किया जाता है। संबंधित पक्षों को सलाह दी जाती है कि अदालत को 30 दिन में इस मामले पर फैसला जारी हो जाने का अनुमान है।'' इसी आदेश में कहा गया है, ''अदालत स्टेटस कॉन्फ्रेंस के अनुरोध को खारिज करती है क्योंकि अदालत की राय है कि यह कार्यवाही अनावश्यक है और इससे इस मामले के निस्तारण में अदालत को कोई मदद नहीं मिलेगी।'' आदेश में कहा गया, ''हालांकि नए घटनाक्रम की स्थिति में संबंधित पक्ष अदालत के संज्ञान में इसे लाएंगे। वकीलों को इस संबंध में सात दिन के भीतर संयुक्त स्थिति रिपोर्ट दाखिल करने का निर्देश दिया जाता है।'' अदालती सुनवाई के दौरान संघीय अभियोजकों ने दलील दी थी कि राणा को पता था कि बचपन का उसका दोस्त डेविड कोलमैन हेडली लश्कर-ए-तैयबा से जुडा था और हेडली की सहायता कर तथा उसकी गतिविधियों पर पर्दा डालकर वह आतंकवादी संगठन और उसके सहयोगियों की मदद कर रहा था।

अभियोजकों ने कहा था कि राणा हेडली की बैठकों से अवगत था कि किस तरह की चर्चा हुई और हमलों की साजिश रची जा रही थी। अमेरिकी सरकार ने कहा कि राणा साजिश का हिस्सा था। हालांकि राणा के वकील ने उसके प्रत्यर्पण का विरोध किया है। संघीय अभियोजकों

ने कहा है कि साजिश में शामिल सदस्य हत्या या गंभीर नुकसान से वाकिफ थे। उन्होंने कहा, ''भारतीय कानून के तहत, साजिश में शामिल अन्य सदस्य भी हत्या के लिए जवाबदेह होंगे, भले ही वे घटनास्थल पर शारीरिक रूप से उपस्थित न हों।'' अभियोजकों ने कहा कि राणा जानता था कि हेडली आतंकवादियों के साथ काम कर रहा था और लश्कर एवं अन्य सह साजिशकर्ता मुंबई में हमले की साजिश रच रहे थे। अभियोजकों ने कहा कि राणा ताजमहल पैलेस होटल और उसकी दूसरी मंजिल जैसे कुछ संभावित ठिकानों की स्थिति से भी वाकिफ था, क्योंकि उसने और हेडली ने उन जगहों के बारे में चर्चा की थी। अभियोजकों ने कहा, ''इस प्रकार, राणा जानता था कि हेडली की मदद करने और उसे मुंबई में अपने आव्रजन कार्यालय का इस्तेमाल करने की अनुमति देकर, लश्कर और अन्य आतंकवादी हमलों को अंजाम देने में सक्षम होंगे।''

CMYK

पत्नी के बेबी बंप पर प्यार लुटाते नजर आए वत्सल सेठ, तो लोगों ने दी ये सलाह

दृश्यम 2 में अजय देवगन की बेटी के रोल में नजर आने वाली बॉलीवुड की ये क्यूट एक्ट्रेस के घर में जल्द ही खुशियां आने वाली है और ये बात हम नही खुद एक्ट्रेस कह रही है। दरअसल दृश्यम 2 में इशिता दत्ता को अजय देवगन की बेटी के रोल में देखा गया था जिनके हाथों तब्बू के बेटे का मर्डर हो जाता है। वही सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव रहने वाली इशिता की खुशियां आज कल सातवे आसमान पर है दरअसल फैंस की चहेती इशिता बहुत जल्द मां बनने वाली है और ये खबर तब सामने आई जब हाल ही में एक्ट्रेस पैपराजी के सामने अपना बेबी बंप फ्लॉन्ट करती दिखाई दी थी बताते चले इशिता की लाइफ में ये पल 6 साल बाद आया है। जी हां सोशल मीडिया पर खाफी एक्टिव रहने वाली एक्ट्रेस इशिता ने बॉलीवुड और टीवी एक्टर वत्सल सेठ से साल 2017 में बेहद शानदार तरीके से लव मैरिज की थी और अब ये कपल अपनी शादी के पूरे 6 साला पूरे कर चुका है, ऐसे में 6 सालो के लंबे इंतजार के बाद अब ये कपल पैरेंट्स टू बी का टैग ले चुका है। बता दे, बीते दिन पहले इशिता ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक वीडियो शेयर की है जिसमे उनके पति उनका बेबी बुम्प फ्लॉन्ट करते दिखाई दे रहे है। वही एक्ट्रेस ने इस वीडियो को क्यूट से कैप्शन के साथ शेयर कर लिखा–ये लड़का कितना क्यूट है। वही वत्सल अपनी पत्नी इशिता पर प्यार लुटाते और आने वाले बच्चे को पम्पेर करते दिखाई दे रहे है।बता दे, सामने आई इस वीडियो को इशिता के फैंस द्वारा काफी प्यार मिलता नजर आ रहा है। वही सामने आई इस वीडियो पर लोग जमकर कमेंट करते दिखाई दे रहे है। एक यूजर ने कमेंट कर लिखा–आप दोनों बहुत क्यूट हैं। तो कोई बोला–जितने आप दोनों क्यूट हैं उतने ही क्यूट आपका बेबी भी होगा। एक यूजर ने लिखा– हम आपके लिए बेहद खुश हैं, ऐसे ही हंसते रहो। वही इस वीडियो को देखकर एक यूजर ने उनको सलाह दे डाली कि वो इशिता के पेट पर ज्यादा भार न दे। वही एक यूजर ने कहा– अपना वेट उसपर मत डालो सर, जस्ट मुझे लगा तो मैंने बोल दिया।

>>> बॉलीवुड <<<

100 देशों में 1200 स्क्रीन्स पर रिलीज हुई सलमान खान की फिल्म किसी का भाई किसी की जान, हर दिन चलेंगे करीब 1600 शोज

बॉलीवुड के भाईजान सलमान खान की मोस्ट अवेटेड फिल्म किसी का भाई किसी की जान आखिरकार अब दर्शकों के सामने आ गया हैं। बता दे की 4 साल के बाद सलमान अपने फैंस को देने आए हैं। ऐसे में फिल्म की शुरूआती रुझान की बात करे तो फिल्म को अभी दर्शकों का मिला–जुला रिस्पांस देखने को मिल रह हैं। वही फिल्म रिलीज से पहले यह खबर सामने आई थी की फिल्म की एडवांस बुकिंग कुछ खास अच्छी नहीं हो पाई थी। ऐसे में अब फिल्म को कितने स्क्रीन्स मिले है और क्या कुछ शो की टाइमिंग इन सब चीजों की जानकरी हम आज आपको इस रिपोर्ट में देने जा रहे हैं। दरअसल किसी का भाई किसी की जान फिल्म का केवल देश में ही नहीं बल्कि दुनिया में भी जलवा देखने को मिलेगा। ट्रेड एनालिस्ट तरण आदर्श के मुताबिक इस फिल्म को 100 अलग–अलग देशों में 1200 स्क्रीन्स पर रिलीज किया गया है। वहीं इस फिल्म को वर्ल्डवाइड स्तर पर 5700 से अधिक स्क्रीन्स मिली है। रिपोर्ट्स की मानें तो सलमान खान और पूजा हेगड़े स्टारर फिल्म किसी का भाई किसी की जान भारत में 4500 स्क्रीन्स पर रिलीज हुई है, जिनमें हर दिन करीब 1600 शोज दिखाए जाएंगे। इस हिसाब से देखा जाए तो यह फिल्म ईद के मौके पर रिलीज होने वाली सलमान की सबसे बड़ी फिल्म बन गई है। हालांकि फिल्म के रिलीज के बाद से मेकर्स को एक बड़ा झटका भी लगते हुए देखा गया था। जहां फिल्म रिलीज के बाद से यह खबर सामने आई थी की फिल्म ऑनलाइन लीक हो चुकी है। साथ ही कई पायरेटेड एप्स पर लोग अब इसे एचडी क्वालिटी में देख सकते हैं। हालांकि बावजूद इसके सलमान खान के फैंस भाईजान के इस फिल्म को थिएटर में देखने के लिए भारी तादाद में पहुंच रहे हैं।बता दे की इस फिल्म के सलमान खान के साथ–साथ लीड एक्ट्रेस के तौर पर पूजा हेगड़े साथ ही जस्सी गिल, शहनाज गिल, पलक तिवारी, राघव जुयाल और सिद्धार्थ निगम भी मुख्य भूमिका निभाते नजर आ रहे हैं।बता दे की इस फिल्म को अब तक दर्शकों की जबरदस्त प्रतिक्रिया मिल रही है। फिल्म में सलमान खान और पूजा हेगड़े की जोड़ी लोगों को बहुत पसंद आ रही है।

ट्रेड एनालिस्ट तरण आदर्श के मुताबिक इस फिल्म को 100 अलग–अलग देशों में 1200 स्क्रीन्स पर रिलीज किया गया है। वहीं इस फिल्म को वर्ल्डवाइड स्तर पर 5700 से अधिक स्क्रीन्स मिली है। रिपोर्ट्स की मानें तो सलमान खान और पूजा हेगड़े स्टारर फिल्म किसी का भाई किसी की जान भारत में 4500 स्क्रीन्स पर रिलीज हुई है.....

परिणीति चोपड़ा और राघव चड्ढा का हो गया रोका

इस महीने में हो सकती है कपल की शादी

बॉलीवुड एक्ट्रेस परिणीति चोपड़ा और आम आदमी पार्टी के नेता राघव चड्ढा का नाम इन दिनों मीडिया की सुर्खियों में बना हुआ है। इनकी लवलाइफ के चर्चे अब हर जगह सुनाई दे रहे हैं। अक्सर मीडिया इस कपल को एक–साथ अपने कैमरा में कैद कर लेता है। वहीं, हाल ही में इनकी सगाई को लेकर कुछ कयास लगाए जा रहे थे। मगर अब परिणीति और राघव की शादी को लेकर कुछ रिपोर्ट्स सामने आई हैं। खबरें तो ऐसी आ रही हैं कि बॉलीवुड एक्ट्रेस परिणीति चोपड़ा जल्द ही शादी करने वाली हैं। इतना ही नहीं ये भी दावा किया जा रहा है कि राघव और परिणीति का रोका भी हो चुका है। इन दोनों के परिवारों ने मिलकर इस फंक्शन को ऑर्गेनाइज किया था। इन दोनों की सगाई की खबर सुनकर फैंस हैरान हो सकते हैं लेकिन मीडिया रिपोर्ट्स तो फिलहाल यही दावा कर रही हैं। इसके अलावा कपल की शादी को लेकर क्या अपडेट्स है ये भी जान लेते हैं। सोर्सेज की मानें तो, इस साल अक्टूबर में परिणीति चोपड़ा और राघव चड्ढा शादी के बंधन में बंधेंगे। इस वक्त तो कपल अपने–अपने काम में काफी बिजी चल रहे हैं। लेकिन अपनी वर्क कमिटमेंट्स से फ्री होकर इस साल के अंत तक ये दोनों शादी कर सकते हैं। हालांकि, शादी की खबरों पर अभी तक कोई ऑफिशियल जानकारी सामने नहीं आई है। न तो कपल ने और न ही उनके परिवार वालों ने इस खबर को अभी तक कन्फर्म किया है। दोनों ने अभी तक शादी और अफेयर की खबरों पर चुप्पी बनाई हुई है। वहीं, परिणीति की शादी में उनकी कजिन प्रियंका चोपड़ा शामिल होगी या नहीं, इसपर भी कयास लगाए जा रहे हैं। दावा किया गया है कि परिणीति की शादी में प्रियंका चोपड़ा भी शामिल होंगी। दरअसल 27 अक्टूबर 2023 से 5 नवंबर तक जीयो एमएएमआई फिल्म फेस्टिवल होने वाला है। इसके लिए प्रियंका चोपड़ा इंडिया आएंगी क्योंकि वो इस फिल्म फेस्टिवल की चेयरपर्सन हैं। ऐसे में एक्ट्रेस परिणीति चोपड़ा की शादी भी करीब उसी समय पर हो सकती है।

>>> बॉलीवुड <<<

निहारिका चौकसे की बर्थडे पार्टी में पहुंची ये रिश्ता की पूरी स्टार कास्ट

लेकिन हर्षद चोपड़ा ने दिखाया कुछ अलग ही अंदाज

ये रिश्ता क्या कहलाता है में पहले अभिमन्यु की बहन का रोल प्ले करने वाली निहारिका चौकसे ने बीते दिन देर रात तक अपनी बर्थडे पार्टी सेलिब्रेट की जहा टीवी इंडस्ट्री के कई सेलेब्स को स्पॉट किया गया। लेकिन फिलहाल निहारिका स्टार प्लस के शो फालतू में एक मैन लीड एक्ट्रेस का रोल प्ले कर रही हैं। इस शो में वो लीड रोल में हैं जिसे दर्शको का काफी प्यार मिल रहा हैं। बता दे कि निहारिका 18 साल की हो गई हैं। उनके इस बेहद ही खास मौके को और खास बनाने के लिए उन्होंने अपने दोस्तों के लिए एक पार्टी होस्ट की। जिसमें ये रिश्ता क्या कहलाता है की पूरी स्टार कास्ट भी पहुंची थी। निहारिका के इस खास मौके को और भी ज्यादा खास बनाने के लिए ये रिश्ता क्या कहलाता है के स्टार्स भी पार्टी में शामिल हुए। जिसमें हर्षद चोपड़ा, प्रणाली राठौड़, करिश्मा सावंत, अमि त्रिवेदी जैसे कई स्टार्स मौजूद थे। उन्होंने पार्टी में मिलकर खूब रंग जमाया जिसकी कई तस्वीरें भी अब सोशल मीडिया पर खूब वायरल हो रही हैं। निहारिका ने अपने बर्थडे पार्टी की कई पिक्चर्स अपने इंस्टाग्राम हैंडल पर शेयर की है। जिसमें उनकी पार्टी में हुई तमाम मस्तीभरा माहौल नजर आ रहा है। इन पिक्चर्स को शेयर करते हुए निहारिका ने कैप्शन दिया, पुराने दोस्त, नई यादें. जिससे पता चलता हैं कि रहे बेशक अलग हो जाये लेकिन कुछ साथ कभी नहीं छूटा करते। इस पार्टी की कुछ पिक्चर्स सामने आई हैं। जिसमें निहारिका के ऑफ स्क्रीन भाई बन चुके हर्षद चोपड़ा काफी क्यूट लुक में नजर आ रहे थे। साथ ही सभी सेलेब्स पार्टी एंजॉय करते दिखाई दे रहे थे। सेलेब्स ने पार्टी के दौरान साथ में कई पिक्चर्स भी क्लिक कराई। लेकिन पार्टी में सभी सेलेब्स ने जमकर एंजॉय करते हुए इंस्टाग्राम पर पोस्ट भी शेयर भी की। जिन्हें इंटरनेट के गलियारों पर काफी पसंद किया जा रहा है। फैंस उनके चहीते सेलेब्स को इस तरह एंजॉय करता देख काफी खुश हैं और तरह–तरह के कमेंट्स की बौछार कर रहे हैं।

स्टार एक्सप्रेस
स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक नरेन्द्र कुमार द्वारा सांई ऑफसेट प्रिन्टर्स, 40 वासुदेव भवन, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं एमजी–18, सेक्टर–सी, अलीगंज, लखनऊ (उ.प्र.) से प्रकाशित।
सम्पादकः नरेन्द्र कुमार। (पीआरबी एक्ट के अन्तर्गत सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा) R.N.I. No.- UPHIN/2008/24076 Email Id : starexpressnews@gmail.com